

BHAGAVATĪCŪRṆĪ

भगवतीचूर्णः

L. D. Series : 130

General Editor
Jitendra B. Shah

Edited By :
Rupendra Kumar Pagariya



L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY
AHMEDABAD - 380 009

BHAGAVATĪCŪRNI

L. D. Series : 130

General Editor
Jitendra B. Shah

Edited by :
Rupendrakumar Pagariya



L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY
AHMEDABAD - 380 009

L. D. Series : 130

•
Bhagvatīcūrṇi

•
Editor

Rupendrakumar Pagariya

•
Published by

Dr. Jitendra B. Shah

Director

L. D. Institute of Indology

Ahmedabad

•
First Edition : January, 2002

•
ISBN 81-85857-12-1

•
Price : Rs. 150

•
Typesetting

Swaminarayan Mudrana Mandir

3, Vijay House, Nava Vadaj, Ahmedabad-13.

Tel. 7432464, 7415750

•
Printer

Navprabhat Printing Press,

Gheekanta Road, Ahmedabad

Tel. 5508631, 5509083

भगवतीचूर्णिः

• सम्पादक •
रूपेन्द्रकुमार पगारिया



लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर
अहमदाबाद (गुजरात राज्य)-३८०००९.

ला. द. ग्रंथश्रेणी : १३०

•
भगवतीचूर्णिः

•
संपादक

रूपेन्द्रकुमार पगारिया

•
प्रकाशक

डॉ. जितेन्द्र बी. शाह

नियामक

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर

अहमदाबाद

•
प्रथम आवृत्ति : जनवरी २००२

•
ISBN 81-85857-12-1

•
मूल्य : रु. १५०

•
: टाइप सेटिंग :

श्री स्वामिनारायण मुद्रण मंदिर

३, विजय हाउस, नवावाडज, अहमदाबाद-१३.

फोन : ७४३२४६४, ७४१५७५०

•
: मुद्रक :

नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस

घीकांटा रोड, अहमदाबाद-१.

फोन : ५५०८६३१. ५५०९०८३

प्रकाशकीय

भगवतीचूर्ण का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हो रही है। व्याख्याप्रज्ञप्ति अपरनाम भगवतीचूर्ण जैन आगम ग्रंथों में एक महत्त्वपूर्ण आगम ग्रंथ है। प्रस्तुत आगम ग्रंथ पर रची गई चूर्ण अद्यावधि अप्रगट थी। मूल ग्रंथ की जटिलता और चूर्ण ग्रंथ की विशिष्ट शैली के कारण भी प्रस्तुत ग्रंथ अप्रगट रहा था। सांप्रत ग्रंथ के संपादन करने का प्रयास भी हुआ किन्तु ग्रंथ की दुरुहता के कारण संपादन कार्य रुका ही रहा। बहुत बड़ी इस चुनौती की बात हमने पं. श्री रूपेन्द्रकुमार पगारियाजी को कही। उन्होंने ने चुनौति का स्वीकार किया और संपादन कार्य प्रारंभ किया। उपलब्ध हस्तप्रतों के आधार पर कठिन कार्य का आरंभ तो हुआ किन्तु आपके सामने भी बहुत कठिनाईयाँ आई किन्तु आपने संपादन कार्य चालु ही रखा और धीरे धीरे गति, प्रगति होती रही। हमें इस बात का आनन्द है कि आज प्रस्तुत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। पं. रूपेन्द्रकुमारजी पगारियाजी प्राकृत भाषा एवं जैन धर्म शास्त्र के विद्वान है। आपने कई अप्रकाशित प्राकृत ग्रंथों का संपादन किया उसी शृंखला में आज एक नई कड़ी जुड़ रही है। आपने अपार परिश्रम करके प्रस्तुत ग्रंथ प्रकाशित किया है जिसके लिए हम आपके आभारी हैं। हमें आशा है कि प्रस्तुत ग्रंथ जैन आगम शास्त्र के अध्येताओं को, जिज्ञासुओं को और धर्म-दर्शन के संशोधको को उपयोगी सिद्ध होगा। प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन कार्य में सहयोग देने वाले सभी को हम आभार व्यक्त करते हैं।

फरवरी, २००२
अहमदाबाद

— जितेन्द्र बी. शाह

सम्पादकीय

प्रतिपरिचय

प्रस्तुत भगवतीसूत्र चूर्णि के संशोधनकार्य में मैंने कुल पांच प्रतियों का उपयोग किया है। ये पांचों प्रतियाँ कागज पर लिखी हुई हैं। भगवतीसूत्र चूर्णि की ताड़पत्रीय प्रति कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। इन पांच प्रतियों में कुल चार प्रतियाँ श्री हेमचन्द्राचार्यज्ञानभण्डार (पाटण) की हैं। एक प्रति लालभाई दलपतभाई भारतीयसंस्कृतिविद्यामंदिर अमदाबाद के ज्ञानभण्डार की है। इन पांचों प्रतियों में केवल एक ही प्रति प्राचीन है। जिसके कुल पन्ने ५८ हैं। साइज १२” - ६” है। यह श्री हेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानभण्डार पाटण वाडी-पार्श्वनाथ की है। पत्र ५ से १०६) डाभडा नं. ६५३९ है। इसका लेखन सं. १४९५ है। खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनभद्रसूरि के सदुपदेश से भाण्डियागोत्रीय श्रीमालवंशज छाडा और उनके परिवार ने इसे लिखवाया, जिसकी प्रशस्ति इस प्रकार है।

“इति श्री भगवतीचूर्णि परिसमाप्तेति । छ । छ । इति भद्रम् ।

सुअदेवयं तु वंदे, जीइ पसाएण सिक्खियं नाणं ।

बिइयं वि बतवदेविं, पसन्नवाणिं पणिवयामि ॥ छ॥ ग्रन्थाग्रन्थ ७००७ ॥ छ । श्री । छ ॥ छ ॥

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया ।

यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ छ । छ ।

अक्षर-मात्रपदस्वरहीनं, व्यंजनसंधिविवर्जितरेफं । साधुभिरेव मम क्षमितव्यं कोऽत्र न मुह्यति शास्त्र-समुद्रे । छ । छ । छ । शुभं भवतु । छ । छ । छ ।

शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषा प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः ॥

“संवत् १४९५ वर्षे श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरिगुरुणां सदुपदेशेन श्रीमालवंशे भाण्डियागोत्रे श्री सा. छाडा भार्या सच्चानी मेघू तत् पुत्र श्री सा. समदा श्री सा. काला सुश्रावकाभ्यां श्री सूदा श्री हेमराज प्रमुख पुत्रपौत्रादिपरिवारकलिताभ्याम् ।”

मैंने इसी प्रति के आधार से ही प्रस्तुत भगवतीचूर्णि का लेखन सम्पादन किया है। शेष चार प्रतियों का लेखन भी इसी प्रति से हुआ हो ऐसा प्रतियों के वाचन से लगता है। क्योंकि इस प्रति के प्रतिलिपिक ने जो लेखन में भूले की है अन्य प्रतिकारों ने भी वही भूले की हैं। साथ ही प्रतियों में सर्वत्र प के स्थान में ए य व, ए के स्थान में प, च के स्थान में व और व के स्थान च / स के स्थान में म और म के स्थान में स इस प्रकार च व ज्ञ भ प उ ओ आदि अक्षरों का व्यत्यय सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। संख्या के विषय में तथा भंग के कोष्टक में भी एक रूपता दृष्टिगोचर नहीं होती। ग्रन्थाग्र के विषय में भी ऐसा ही हुआ। कहीं पाठों को आगे पीछे भी लिख दिया गया है। हस्तलिखित प्रतियों में सर्वत्र ऐसा ही पाया जाता है। लेखन

शैली से इन प्रतियों का लेखन समय १६-१७ वीं सदी का माना जा सकता है। इन सभी प्रतियों की झरोक्ष कोपी ही मिलती। ये सभी अस्पष्ट काले धब्बे वाली हैं और कहीं कहीं तो अवाच्य पत्र भी है। इन झरोक्ष प्रति से सम्पादन करना बड़ा ही कष्ट साध्य रहा। अतः भूलों का रहना भी स्वाभाविक ही है।

अबतक के अप्रकाशित चूर्णियों में भगवतीचूर्ण भी एक है। प्रस्तुत भगवतीचूर्ण अपूर्ण है। इसका वर्तमान स्वरूप पांचवें शतक से प्रारंभ होता है। पूर्व के चार शतक काल दोष से नष्ट हो गये हैं। बीच बीच में भी लिपिक ने कोरे पृष्ठ छोड़ दिये हैं। जो पंक्तियाँ कोरी थी उन्हें मैंने और लिपिकार ने (...) कोष्टक देकर स्पष्ट किया है। यह चूर्ण ७००० श्लोक प्रमाण थी किन्तु वर्तमान में केवल ३५०० श्लोक प्रमाण ही प्राप्त होती हैं। प्रत्येक प्रति में ग्रन्थाग्र अलग अलग मिलते हैं। एक प्रति में ३५९०, दूसरी में ६७०४, तीसरी में ७००९ ग्रन्थाग्र मिलता है। परवर्ती किसी अज्ञात आचार्य ने भगवतीचूर्ण को पूर्ण करने की दृष्टि से प्रथम के चार शतक पर संस्कृत में अवचूरि की रचना की है। यह अवचूरि पाटण ज्ञान भण्डार डा. नं. १६६ प्रति नं. ६५४२, में है। तथा महावीर आराधना भवन कोबा के ज्ञान भण्डार में भी है। इस प्रति में प्रथम पृष्ठ से १-३६ पृष्ठ तक अवचूरि है और शेष पृष्ठ ३७ से चूर्ण का आरंभ होता है यह अवचूरि अप्रकाशित है।

भगवतीचूर्णः

जैन आगमों में बृहद्काय आगम अगर कोई है तो वह भगवतीसूत्र है। जैन तत्त्वज्ञान का सागर जैसे भगवतीसूत्र पर आचार्य श्री अभयदेवसूरि ने अपने पूर्ववर्ती टीका भाष्य चूर्ण का आधार लेकर विशालकाय वृत्ति की रचना की थी। आचार्यप्रवर ने अपनी वृत्ति में आगम के गूढ़ रहस्य को प्रकट करने के लिए अनेक स्थानों में चूर्ण का उल्लेख किया है और चूर्ण के पाठों को भी उद्धृत किया है। प्रस्तुत भगवती चूर्ण जो पाठकों के हाथ में है, यह वही है। बृहद्कायआगम की चूर्ण भी बृहद्काय ही होनी चाहिए किन्तु चूर्णिकार ने अपनी चूर्ण को सागर को गागर में भर दिया है। अर्थात् भगवतीसूत्र जैसे विशालकाय ग्रन्थ को चूर्ण के रूप में अत्यन्त संक्षिप्त सार रूप में प्रस्तुत किया है।

भगवतीसूत्र जिसका दूसरा नाम व्याख्याप्रज्ञप्ति - विआहपण्णत्ती है। यह पांचवां अंगसूत्र है। प्रश्नोत्तर के रूप लिखा जानावाला यह व्याख्या ग्रंथ व्याख्याप्रज्ञप्ति है। इसमें भगवान महावीर एवं गौतम गणधर के बीच जो प्रश्नोत्तर के रूप में वार्तालाप हुआ उनका संकलन है। समवाय और नन्दीसूत्र के अनुसार इसमें छत्तीस हजार प्रश्नों का भ. महावीर के द्वारा समाधान का उल्लेख है। इसमें स्वसमय, परसमय जीव, अजीव, लोक, अलोक आदि अनेक विषय वर्णित है। देवों, राजाओं, राजर्षियों, परिव्राजकों पार्श्वानुयायी श्रावक, श्राविकाओं के प्रश्नोत्तर के साथ नगर, नगरी, राजा, राणी, वन, उपवन, उद्यान एवं विविध पात्रों के चरित्र वर्णन विस्तृत रूप में वर्णित है। प्रस्तुत चूर्णिकार ने वर्णनात्मक घटनाओं को छोड़ दिये हैं। चरित्र वर्णन में केवल गोशालक का ही चरित्र अत्यन्त संक्षिप्तरूप में दिया है। जयन्ती श्राविका, सोमिल, कार्तिकसेठ, जमालि के केवल नामोल्लेख कर उनके प्रश्नों का संक्षिप्तरूप में ही उत्तर दिया है। भगवतीसूत्र के सभी उद्देशक के प्रश्नों का उत्तर भी उन्होंने अत्यन्त संक्षिप्त रूप में ही दिये हैं। उनकी दृष्टि में जो प्रश्न परिचित थे प्रसिद्ध थे उनको उन्होंने छोड़ दिये हैं। जीव आदि के भेद प्रभेद का उल्लेख मात्र कर उनका संक्षिप्त में ही उत्तर दिया है। अपने समस्त चूर्ण

ग्रन्थ में एक प्रज्ञापणा सूत्र के सिवा अन्य किसी भी ग्रंथ का उल्लेख उन्होंने नहीं किया। समस्त ग्रन्थ में केवल १०-१२ ही प्राचीन गाथाएँ आती हैं। चरित्रवर्णन प्राचीन ग्रंथ के उद्धरण आदि से रहित यह चूर्णिग्रन्थ भगवतीसूत्र पर एक संक्षिप्त टिप्पण के रूप में प्रस्तुत है।

चूर्णिकार

भगवतीचूर्णि के कर्ता कौन थे यह तो निश्चय करना कठिन है, क्योंकि समस्त चूर्णि ग्रंथ में कर्ता का कोई भी उल्लेख नहीं मिलता क्योंकि अबतक की उपलब्ध आगमचूर्णियाँ विशाल हैं। उनमें जो विषयवस्तु का सूक्ष्म विवेचन हुआ है वह अपने आप में अपूर्व एवं विवेचनात्मक दृष्टि से परिपूर्ण है। चूर्णि इस शब्द के शब्दार्थ को सार्थक करता है। इस भगवती चूर्णिकार की जो विशिष्ट धारणाएँ थीं उन्हें वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि ने अपनी वृत्ति में आदर के साथ स्थान दिया है। श्री जिनदासगणि तो विशेष रूप से आगम ग्रन्थ के विवेचक थे। उन्होंने निशीथ, बृहद्कल्प, आवश्यक, दशवैकालिक, दशाश्रुतस्कन्ध आदि अल्पकाय आगम पर बृहद्काय चूर्णियों की रचना की है तो बृहद्काय भगवती सूत्र पर अल्पकाय एवं अत्यन्त संक्षिप्त टिप्पणात्मक चूर्णि की रचना क्यों की यह एक विचारणीय है। अतः इस चूर्णि के कर्ता जिनदासगणिमहत्तर नहीं किन्तु कोई पूर्ववर्ती आचार्य थे ऐसा मेरा अनुमान है। सर्वविश्रुत एक परम्परा रही है कि प्रायः चूर्णि के कर्ता श्री जिनदासगणिमहत्तर थे तो इस चूर्णि के कर्ता भी श्री जिनदासगणिमहत्तर होने चाहिए, लेकिन इसकी पुष्टि करना कठिन है। इनका समय सातवीं सदी का माना जाता है। भगवतीसूत्र पर आचार्य अभयदेवसूरि ने सं. १०२८ में वृत्ति की रचना की थी। इन्होंने अपनी वृत्ति में अनेक स्थानों में चूर्णि का उल्लेख किया है। अतः यह चूर्णि ग्यारहवीं सदी से भी पूर्व की रचना है यह सिद्ध होता है।

भाषा की दृष्टि से चूर्णिकार की भाषा का जो रूप वर्तमान में उपलब्ध है वह समय के अनुसार परिवर्तित है। वर्तमान में भगवतीचूर्णि की प्रतियों में कुछ ही स्थानों में शब्द के प्राचीन रूप मिलते हैं जैसे समय के स्थान में समत, निगोद के स्थान में नितोत, रागके स्थान में राणो इत्यादि। अधिकतर शब्दों का प्राकृतिकरण ही मिलता है। साथ ही चूर्णिकार समय समय पर सैद्धांतिक बातों को सप्रमाण सिद्ध करने के लिए संस्कृत भाषा में दार्शनिक शैली से चर्चा करते हैं और प्राकृत मिश्रित संस्कृत का भी प्रयोग करते रहे हैं। यह उनकी अपनी शैली है।

इस संक्षिप्तचूर्णिको भगवतीसूत्र और उसकी टीका तथा प्रज्ञापणासूत्र के अध्ययन के बिना समझना कठिन है।

भगवतीचूर्णि के सम्पादन में प्रति सम्बन्धी अनेक कठिनाईयाँ होने से यह कार्य कष्ट साध्य सा रहा अतः भूलों का रहना भी स्वाभाविक ही है। पाठक अगर भूलों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित करेंगे तो मैं उनका अनुग्रहीत रहूँगा।

श्री हेमचन्द्राचार्यज्ञानभंडार पाटण एवं लालभाई दलपतभाई भारतीयसंस्कृतिविद्यामंदिर के व्यवस्थापकों का भी आभारी हूँ जिन्होंने सम्पादन के लिए 'भगवतीसूत्र चूर्णि की प्रतियों की उपलब्धि में तथा प्रकाशन में सहायता की।

— रूपेन्द्रकुमार पगारिया

स्थविराचार्यकृता
भगवतीचूर्णिः

॥ नमो जिनाय ॥

स्थविराचार्यकृता

भगवतीचूर्णिः

पुढवी ठिति योगाहण सरीर संघयणमेव संठाणे ।

लेस्सा दिट्टि(णा)णे जोग उवयोगे ॥१॥

विरहिज्जति जं ठाणं, असीति भंगा तहिं करेज्जासि ।

जत्थ उ गेहो ति विरहो अभंगं सत्तावीसा वा ॥२॥

चउहिं कोधादीहिं लोभादीहिं वा ठितिसुत्तादिविसेसितेहिं समण्ण भंगलक्खणं । ‘पुढवीसुत्तं’ सत्तक ण्णाओ, पत्तेय चउवीसा दंडएणं आवास णेयव्वा । ‘ठितिसुत्तं’ जहण्णा मज्झा उक्कोसा । जहण्णियातो समय-दुसमय-संखेज्जाऽसंखेज्जा जाव तस्सावासस्सुक्कोसिया ण पावत्ती ताव आदि-अंतसमयविरहितासंखेज्जा ठितिठाणो भवंति । जहण्णठिती अविरहिता नारगेहिं कट्टु तत्थसत्तावीस भंगा । कोहोवयुत्तेहिं य अविरहिता तहिं णिच्चं बहुवयणं । समाहियाए जहण्णियाए असीति । तत्थ य तेहिं विरहो होति । अहवा एक्को वा दो वा तिण्णि वा संखेज्जाते कोवे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा उवउत्ता तत्थ भंगा असीति वत्तव्वा । एवं जाव संखेज्जपदेसाधिया समाहियाए वा ततो असंखेज्जा तप्पाउग्गुक्कोसियासु अविरहियत्तणातो सतणातो सत्तावीसं । ‘ओगाहणसुत्तं’ सरीरप्पमाणं तहेव जहण्णादियं उववज्जमाणणं ते जहण्णट्टितीए विरहिज्जंति, तत्थासीति जाव संखेज्जपदेसाधिया, असंखेज्जं तप्पायुग्गुक्कोसियासु सत्तावीसं अविरहित्तणातो । संघयण-संठाण-काउलेस्सासु सत्तावीसं । दिट्टीसम्मामिच्छत्तेण विरहिज्जति तत्थासीति । सेस दंसणे रतणपढमं पुढविसुत्ताणि समन्नाणि ताव सत्तावीसं । एवं सत्तसु वि लेस्सासु विसेसो । एवं भवणवासीणं लोभादिया, देवाणं लोभपरिणाम बहुत्ताओ सत्तावीसमसीतिं वट्टति । आदिविसेसितेसु कोधादिसु चारेज्जा । नारगाणं जहा असंखेज्जेसु णं पुढविक्काते सव्वठाणेसु बहुया कारुण सुण्णभंगो । णवरं तेउलेस्साए विरहिज्जंति त्ति । देवोवत्तीए तत्थासीति । एवं आउ-वणप्फत्तीणं पुढविकायतुल्लं । तेऊ-वाऊण सव्वत्थ अभंगं । बि-ति चउरिंदियाणं सत्तावीसट्टाणे अभंगं । बहुत्ताओ असीतिट्टाणे असीति चेव । सासातण-सम्मदिट्टि-

विरहं संभवोपपातं पडुच्च आभिणिबोहित-सुतणाणसमत्तेसु असीति । पंचिंदिय-तिरियाणं जहण्णट्टिती-ओगाहणासु विरहिओ जेसु असीति तेसु सव्वेव सत्तावीसाए बहुत्तातो अभंगं । सम्मामिच्छते विरहाओ चेवासीतिं । मणुयाणं जहण्णियाए ट्टितीए आहारकसरीरं पडुच्च विरहातो असीतिं । सेसियाओ सट्टाणेसु असीतितो भाणियव्वातो । सत्तावीसट्टाणे अभंगं णेरतियाणं जहा, केवलणाणे मोहणिज्जक्खयाओ असंभवो । वेमाणिय-वाणमंत-जोतिसिया जहा लोलादिया असुरा णेरइया देवेसु सत्तावीसा असीतिभंगा । सेसेसु पुढविकाइयादिसु मणुयपज्जंतेसु दससु सत्तावीसमसीते अभंगं संखेवतो जाणे । सेवं भगवं । छ ॥

(षष्ठः उद्देशकः)

सर्वदिक्-सर्वदिक्षु वा सर्वाणि यावन्ति 'नो वी सव्वं ति' सामान्य-विशेषनयाभ्यां प्रसिद्धितः पदानि व्याख्यातव्यानि । नियमाच्छदिसिं भवनमध्यावलंबिताप्रतिहतोद्योतप्रदीपवत् । लोकोऽलोकमध्ये कर्म कर्मे वत्ततामात्मनि समवायन्तः कर्मलक्षणपदार्थमभिनिवर्तयन्ति । एकेन्द्रियान् प्राप्योपरितलस्थितासीदिति कृत्त्यागमनप्रतिघातिनो भवन्ति । तत् प्रदेशाच्युतादिदिग्धये अन्ये एकस्य बहुमध्ये प्रतिघातिनः गेहानागरप्रस्नाःपयोरनाद्यपर्यवसानतया पूर्वमिदं परमिदमिति न शक्यते वक्तुम् रात्रिंदिनस्येव सप्रतिपक्षप्रति-सिद्धमुपात्तोदाहरणवद् भाव्यम् ।

लोक्यंतं सत्तमेणोवासंतरेण चारेतूण सत्तमं सेसेसु एगतो अणंतरं सेसाणंतरेहिं जाव सव्वंतो लोयट्टिति । सभाव वा तेण सुत्तमतिसंधाय समितीत्याद्युदाहरणं चानुमानं । सदास्थमात्रया इदं समितं एकी भावं न वा इतं ।] फु [६] ॥छ॥

कारणावयवेन कार्यावयवी न निर्वृत्यते । तन्तुना पटानवबद्धप्रदेशवता न च देशेन सर्वः असकलकारणत्वात् । तन्तुना पट इव न च सर्वावयवैर्देशकार्याभिनिवृत्तिः । सम्पूर्णसमवाय्य समवायि-कारणत्वात् घटैकदेशदेशवत् । सर्वावयवैः सर्वः पूर्णकारणसमयात् घटवत् ।

उववज्जमाणे आहार, उववण्णे आहार, उव्वट्टमाणे आहार, उववट्टे आहार । पढम समए सव्वमाहारमुववज्जमाणे सेसेसु देस वा सव्वं आहार । द्रो । [८]

अद्धेण विद्धा णिवत्ती ण सिया उवगरणं णासियारंभया पोग्गला भावो । तन्निवत्तिसामत्था तेण जोगा सव्विंदिएसु ७॥

कायिके सरीरस्पन्दमानसो मनोव्यापारप्रणिधिः ।

इषुसंयोगोऽधिकरणं । खेवगस्सेव प्रणयते न मृगवधो नेतरेषाम् । किं कारणं ? कज्जमाणं कृतमेव, हन्यमानो हत एव । छम्मासाणुबंधी करणविधेः परतो अण्णं परिणामान्तरं पोगलादिसंघातो जाति द्रा [८] ॥८॥

गरुयदव्वे णत्थि अच्चंतं हेड्डाअवड्डाणभावं अलहुयदव्वे वि णत्थि उड्डागमणतो, निच्छयणयस्स ववहारस्स बातर-दव्व-खंधेसु वज्जादि(ग)रुतादियगुरुलहुं णिच्छयणयस्स । गुरुलघु अड्ड फासा खंधा । अगुरुलघुअमुत्तदव्वाणि तप्पदेसपज्जयाकालो सुहुमपरिणया चतुप्फासा य । खंधा एगे जीवे त्ति दव्वड्डयाए । एकम्मि जीवे सव्वपज्जयसंगहातो । जहा जीवे भवपज्जया तहा भवे वीतरपज्जय त्ति कट्टु एक भवयकरणे दुभवयकरणं जालगंठिकावत् ? उत्तरं-निच्छयणयेन एगे जता एगं गेण्हति ण तदा बितियस्स गहणं । घडविण्णाणकाले घडएगड्डण विण्णाण इव, थिरसुत्ते थिरो जीवो दव्वड्डताए, कम्माइं अत्थिराइं, संजोग-विभाग-संबंधतो जीवो ण विद्धंसति, कम्मपोगला विद्धंसति । सव्वगमेसु एवेव ।९।

चलमाणे नो चलिते दव्वड्डियस्स सव्वमणुप्पणमविणड्डमिति कट्टु, अहवा ववहारस्स इच्छितकज्जाकरणातो णो चलितं । णिच्छयस्स जइ एगसमयचलितमचलितं तेण निड्डा कालाभावो वीतिविरुद्धं अतो चलितं । दो परमाणुपोगला सण्हत्तणातो ण संहणंति तिप्पभित्ती समुदातो सो च्चेव परमत्थतो पुट्टिभेएण केवलं भिज्जंति । तिण्हं च मज्झत्तणातो छेदो भवति ततो दिवड्डता ? उत्तरं-समुदाएण अवयवपुव्वएण होयव्वं, पिंडवत् । जे य अंता अवयवा ते परमाणू । तेसिं च समुदायो वि होति कारणत्तातो तंतुपट इव । ण य तिण्ह मज्झभेदो अवयवत्वात् परमाणुवत्, भेदेण तिप्पदेसो तिण्णि वा दो वा भवंति ।

तहा भासादव्वाइं कारणत्तेण पढमपच्छिमकाले भासाए निद्विस्संति । वड्डमाणसमयपरमणिरोहे ववहारा-भावातो ? उत्तरं-भासा वड्डमाणकालय तेण दवतीति कट्टु, तप्पज्जायपरिणामातो हवति, घटवत् । अण्णहा भासाभावो सव्वभासा पसंगो वा । एवं किरियादिपदेसु योज्यम् । परिहारो य दुभवयकरणे न किरियातो भणियातो । पढमसतं सम्मत्तं ॥छा॥

ण जीवा एगिंदिया णिप्फंदाणुस्सासादित्तातो भासरासी इव होहिंति, तिसिं फंदादिणो धम्मा । आहारादिपुव्वसरीरचयणातो पुरिस इव उस्सासादियवड्डमाणो वाउपाणो सो सव्वेसिं वाउकाइयाण वाउक्कातो च्चेव ऊसासो ।

मृतायाजी (आदी) मडाई मृतासी वा साधुस्स पुनरपि संसारमत्येष्यति ? तहाविहकारण चित्तत्तणातो अनिरुद्धभवत्तणादिणो हेतवो इत्येतदस्मादर्थात् इच्चत्थं अंकुरवत् बीजवद्वा । विपरीतं एते चेव हेतू विपरीता छिन्नसंसारस्स दग्धकारणत्वात् बीजवदेवाकारणवत्वाद् वा ।

‘वेउट्टाभोई’ति । दिनकरे व्यावृत्ते अहोरात्रे इति भोजी वा यावत् ।

सांते लोए सपडिपक्खा दसपहो चउव्विहेणत्थे चत्तारि भणिता ।

पंचत्थिकाया लोगो एणं दव्वं समुदायसदत्तणातो व णस्संति तोणावत् ॥४॥

संजमातो कर्मणा म्रवन्ति । तवेण विदारणं करेति । जति एतेसिं एयं कज्जं, ततो किं प्रत्ययं देवार्थं कार्यम् ? णत्थि त्ति तस्स कारणमिति अभावो पावति । ‘चउहिं’ चत्तारि कारणाणि देवलोगस्स साहणाणि भणिताणि । पुव्वतव, पुव्वसंजम-कम्मय-संगियंताइं पंचणहं संजमाणं अहक्खातहेट्टा पुव्वाणि तेण तवेण तेण संयमेण अहक्खायचारित्तेण बंधति सुभासुभं, पुव्वतव-संजमे सुभकम्मियाए संगिया वि पुव्वसंजम-सुह-देवलोगसंगातो रानो दोसो य । आयुत्तेहिं परियापुन्नेहिं समुत्थेहिं समएहिं उ उवम्मत्थिकायादिसु पर्युदासो दट्टव्वो ।

अरूवि पंचविधो समासतो, लोगागासयमाणो खेत्तपरिच्छिन्नो त्ति । खेत्तप्पमाणोवण्णो वण्णो, सो एतस्स भावो अमुत्तो अवण्णा जाव फासे भावो तस्स दव्वपज्जातो गुणो दव्वट्टवीरियं तस्स तस्स य । जहा पोगलत्थिकायस्स भावा रूवादयो अणंता, तहा अमुत्तदव्वाणं अगरु-लघुभावा अणंता दट्टव्वा ।

“एणे भंते” ! धम्मत्थिसमुदाए वट्टमाणो सदो णोऽवयवे वट्टति असगलत्तणातो, जो य उवयारो सो सव्वो अतत्त्वं मृग्यते । वक्तादीणि उदाहरणाणि । लोगागासे णं सत्तमी लोगागासे किमस्ति ? जीवादय इत्यादेयादेव कुलसाधुवत् ।

अज्जीवा दुविहा-रूवी अरूवी । रूवी खंधादिद्विप्रदेशिकाद्या, देशा द्विधाराच्छेदेण एगतो द्वयं द्वयं पदेसा बंधत्थासु, परमाणवो सुद्धा अगतखंधभावा अरूविणो दव्वा, समुदायसद्देण भण्णंति णीसेसा, तत्थ पदेसेहिं वा णिस्सेसं भणेज्ज णो देसेण । तस्स अणवट्टियप्पमाणत्तणातो तेण ण देसेण णिद्देसो, तहा पोगलत्थिकायो वि । जो पुण देससद्दो एतेसु कतो, सो सविसयगतं ववहारत्थं, परदव्वफुसणादिगतववहारत्थं, ठाणेसु पुण अप्पा-बहुयमसणादिसु देसमसणाण संभवति । अणवट्टियतातो णिस्सेसदव्वग्गहणं । दव्वट्टता एव पदेसट्टता एव भवति । अद्धासमया वट्टमाणे एगसमयो णव सयाणि

भगवतीचूर्णिः

अहो उवरियतिरियलोगो ततो अवो लोगो । लोगमज्झा पुण रयणप्पभपुढवि ओगासंतरज्जुप्पमाणो असंखेज्जति भागमोगाहिता भवति । अहोलोगो सत्तरज्जुतो साधियातो । हेट्टा सत्तवित्थारो देसूणातो, उड्ढलोगो देसूणा सत्तरज्जुतो, बंभलोते वित्थारो पंचरज्जुतो । एतेण अप्प-बहुत्तं णेज्जा । लोगो अणंततिभागो । लोगागासस्स अलोगागासमणंतविभागीणं, लोगागाससमुद्धितं । **बितीय शतं ॥छ॥**

उवरिगतिं पथा-एणेण समएण सक्को, दोहिं वज्जं, तिहिं चमरो, तुल्लं खेत्तं कमंति सिग्घ-मंद-मंदतरजोयणगमणं दिवसपुरिस इव । अहे एणेण समएण चमरो, दोहिं सक्को, तिहिं वज्जं तहेव मंदगत-मनवत् । सट्टाण-परट्टाणे अप्प-बहुं भाणियव्वं । कंडगं कालो, खेत्तपट्टामट्टाणे अप्प-बहुं मगणा भिन्नकालो उड्ढं, अवे, तिरियं । एणेण समएण उववत्ति अवे जोयणं तेणेव समएण तिरिया दिवड्ढं गच्छति । उड्ढं दो जोयणाणि सक्को, चमरो उड्ढं जोयणं, तिरितं दिवड्ढं अवे दो जोयणाणि वज्जमवि अवे जोयणं, तिरियं देवड्ढं विसेसो य, उड्ढं दो जोयणाणि विसेसो य । अप्प-बहुं एत्थ पाडेज्जा, जहा वा समया सक्कादीणं तहा वा वड्ढीहाणीहि । तहेव खेत्तं पि । **॥ततिए बितितो उद्देसो॥ ॥छ॥**

किरियातो कम्मं भवतीति कारणं, ततो कज्जं ण मोक्खो फंदादिजुत्तस्स असुभ-कम्मायरणातो चोरवत् । णिच्चं पि वुच्चति विरुद्धकारणाणुट्टाणातो मज्झत्थमणुयवत् । सव्वत्थ कारणकार्यभावोगत तार(त)म्मेण जोएज्जो ।

पमत्तस्स जहण्णो कालो समओ । एसो य अप्पमत्तट्टाणातो चवमाणो पमत्तसंजतो कालं करेज्जा, तत्थ लब्भति । देसूणं पुव्वकोडिमितरो अप्पमत्तो जहण्णकालो । उवसामगसेढी पडिवज्जमाणो मुहुत्तेऽब्भंतरतो कालं करेमाणो होति, केवली देसूणं ।

वाणारसिं विउव्वित्ठुणं रायगिहे उवउत्तो रूवातिं जाणति पासति । ताइं पुण वाणारसी मण्णमाणा मणो वाणारसिं च रायगिहंतेणं णगरविवच्चासो, एत्थं ण भवविवच्चासो । जहा पुव्वाए दिसाए रूवाइया सविमूढदिसि पुरिसवत् ।

जल्लेसेसु उववज्जति तल्लेसाइं अब्भंतरमुहुत्तं लेस्सा दव्वगहणं करेति । तं ता परिणामेति सुद्धं, ततो मुहुत्तब्भंतरतो कालं करेति, तेल्लेसपरिणतो चेव । **॥ ततियं शतं ॥छ॥**

पंचमे-ततितो लिहिज्जति-

‘अण्णउत्थिया एवमादिकखंति । जालगंठिया’ सामान्यसंग्रहनयवादिण सर्वं सर्वात्मकं एको भावः सर्वभावः स्वभाव इति । ततो भवा सर्वभवा सर्वस्वात्मीयपरकीयभवस्वभावा द्रव्यार्थिकनया

जालग्रन्थिसमुदायवत् । द्रव्ये पर्याया पर्यायेषु द्रव्यं द्रष्टव्यम्, परियाए परियाया ततः सर्वात्मकं, अमोक्षवादिना वा द्रव्यार्थिकभेदावनं विना वा । एकायुष्कापि प्रकरणे सर्वायुः प्रकरणं वेदनं वा 'परवाद निर्देशः' ? ॥छा॥

उत्तरं- संगह-ववहारनिच्छएहिं एगम्मि जीवे आउसेसं आउसेसपगरणे जालगंठिया घडए । एकसमयो य कालपज्जायवाइ, इहभवियाउं जम्मि समयम्मि ण तम्मि परभवियाउं; परभवियाउयं जम्मि ण तम्मि परभवियाउयं परसमयभवियाउयं वेदेति । णो एयम्मि णिरुद्धे सममेव दो आउयाइं विभवप्रसंगात्, युगपद्वा सर्वसंसारिगायुष्कप्रसंगात् ।

जे भविए निरएसु उववज्जित्तए सोऽऽयुष्को, सो जेण सेसाउयो जाति तं आउयं कहिं कडं ? पुरिमे भवे जातो भवातो अभिणिससरति तत्थत्थेण कयं तं पुण भेदेहिं णेज्जा । अहवा जं तं णिव्वत्तित्तिं तं कहिं कडंतं पुरंता सिग्घहोयणातो पुरिमसदृत्थणिण्णतो आदाणाणिइंदियातिं ण तेसिं सत्तिउवघातो ।

सगतं पुण केवलेण ववहरति । वीरियं जीव-पुगलांगांगी भावना शक्तिः । जोगा मणादयो तदेव सदर्थद्रव्यं तद्भा(व)वीर्यं सयोगिसद्रव्यता उपचयापचयत्वात् । तन्मात्रप्रदेशावस्थितिः ।

पण्डं गवेसमाणस्स अतणुयाओ । जस्स जस्स भंडं मूलिधनं वा तस्स अणुयातो; इतरत्थ पतणुयातो दिट्ठदोसए तत्थ विसेसातो ॥छा॥

'पुरिसे णं भंते !' धणुगहणे समासादितं ततो देसमग्गणा । तदा उसुम्मि जाव कंडं पुरिसपयत्त-संबंधि ताव सव्वो समुदायो पंचकिरितो पुरिसस्स अविरतिपरिणामातो, इतरेसिं अविरतितो चेव । अह पडंतं सगोरवेण उसुं पडति पुरिसपयत्तरहितं । तत्थ पुरिसं संबंधी एगो चतुकिरितो, इतरो कंडसंबंधी उवग्गहकरो य पंचकिरितो । तत्थ तस्स संखसंबंधितातो । पंचमे छट्ठो ॥छा॥

कोती परमाणुगणे एयति ? कोती दुप्पदेसे । जो एयति सो समुदाएण वा, एगदेसेण वा, तिय देसे, सव्वो पदेसेण जो य देसो सेसा तत्थ णो एयंति । पदेसेण वा दो पदेसा असंघातत्थातो णो एयंति । दो पदेसा संघातत्था एयंति, एगो णो पुण चतुप्पदेसे सव्वो वा अद्धं एयति, अद्धं णो; दो वा संघातत्था एयंति, इतरे वि संवित्थाणे दो वा वि संवित्था एयंति । इतरो संघातत्थो ण, दो वा वि संघातत्था एयंति । इतरे वि संघातत्था ण ॥ह्वा४॥ एवं जाव अणंतपदेसिता ॥छा॥

अद्धं विसमभागता । अर्धमाद्यन्तयोः समभागता । मध्येव रूपं प्रदेशावयवस्थानं । एतेषां प्रतिषेधो विवक्षःपरमाणवो वा ण संभवन्ति । जो समो तत्थ तत्थ वच्छि, हिंगुल, वचदेशिकत्वं । जो विसमो तत्थ

मज्झमंगुलित्रयस्येव प्रदेशाश्च त्रयभंगसंखेज्जादिणो सव्वे सम-विसमता भंगा चारेज्जा । देशोदेसा य सव्वं, एक्केकं तिविहं ठवेऊण देसो अवयवो देसा अवयवा, सव्वो समुदायो अवयवो वा भण्णति । परमणिपरमाणुणा सव्वो सव्वेण जो य फरिसेण उ जो य फरिसिज्जमाणो देसिं देसो देसा वा ण संति । सव्वो सव्वेण सो च्चेव पदेसिएण सव्वो देसेण वा णो य दुपदेसियस्स देसा संति तेतिया अवयवकज्जा भावातो । देसो सव्वो वा एति, एते पदेसिएणं देसो देसा सव्वो त्ति । चतुसंखेज्जाणं तेहिं बि-ति- पदेसे, जहा एवं दुपदेसितो परमाणू दुपदेसिय तिपदेसियादियं तिपदेसितो परमाणू दुपदेस तिपदेसादीहिं नवसु ठाणेसु स्पृश्यमानकस्पर्शकयोर्देश-सर्वादिरूपमवलोक्य भङ्गादियोजना कार्या ॥७॥ परमाणू सुत्तं ॥७॥-सुद्धो अबद्धखंधो एगमसंखं मज्झमं सेसं । एगपदेसे गाढे सकस्य एगागासप्रदेशे प्रदेशान्तरे वा ववमाणा जहण्णेणं समयो उक्कोसेणं आवलिया असंखेज्जतिभागो तेयासंखेज्जसमयानिरेगो निष्क्रियः गुणदुगुणादिसु । वण्ण-गंध-रस-फास-सुहुम-बायरसंखेज्जाऽसंखेज्जाणंतेसु जहण्णुक्कोसिया कंठा । सदे य परमाणू होत्तूणं पुणो परमाणो केच्चिरेण होति ? जहा-घरवती घरे ठातूणं पविसितो रुच्चिरकालंतरियो पडिसमागच्छति । परमाणुस्स खंधे संबंधकालो य वासो दुपदेसियस्स । सेस पोग्गलसंबंधकालो । एवं तिपदेसिया-दीणं अणंताणंताणं सेस संबंधकालो सेगस्स निरेगाणिरेगस्ससेगो एगगुणकालगस्स दुगुणादि, सेस वण्णकालो । एवं वण्ण-गंध-रस-फासाणं बादर-सुहुमसद्दणं सत्थाणे मग्गिज्जमाणे सव्वत्थ विवक्खो अंतरं होति ॥७॥

दव्व-परमाणू दुपदेसियादिपोग्गला सामण्णं खेतं आगासपदेसा ओगाहणा जस्स जम्मि ठाणे पदेसमेत्तक्कमंतरसपरिणामो । एतेसिं कालेणं अप्प-बहुं मग्गिज्जति । आउयमिव आउयं पुरिसादिसु, जहा द्रव्यस्थानस्य आयुष्कं दव्वट्टाणाउयं । एवं सेसाणं थोवं खेत्तठाणाउयं जहण्णेणं पोग्गलावत्थाणं एणं समयं, उक्कोसमसंखेज्जकालं तत्तो खेत्तसंकमणं णियमा करेति । असंखेज्जादिपदेसितो खंधो । असंखेज्जकालं खेतं च संभमंति । अभिदंतो असंखेज्जपदेसोगाहंतेण तं थोवं ओगाहो तओ असंखेज्जगुणो लब्भति । जया तं सव्वं संघात-वित्थरेण जुज्जति तहा ओगाहो विभज्जति । असंखेज्जकालाबन्धी अविणट्टेसु दव्वपदेसेसु ततो दव्वाउयं संखेज्जगुणओगाहणट्टाणाउयातो । गंधादयो भावा विणट्टम्मि वि दव्वम्मि संघातभेदेण असंखेज्जं कालं चिड्ढंति । ततो दव्वट्टाणाउयातो भावट्टाणाउयं असंखेज्जगुणं । एयं उक्कस्सं गहितं । अणंतयं च सव्वत्थ णत्थि, तव्विध कालासंभवातो पुव्वम्मि उत्तरं नत्थि उत्तरे णत्थि । पुव्वमणंतविरहितं सव्वत्थ ॥७॥

पञ्च हेत्वयं हीयते गम्यते ज्ञायते अवबुध्यते अनेनेति हेतुः । स च समासः ज्ञापकः कारकश्च । सवितृप्रदीपमण्युल्क-शब्द-धूमादिज्ञापकः कारको बीजपिण्डादि, स एवाधुना परिच्छिद्यमानः कर्म भवति । सम्यग् दृष्टिणा द्विविधोऽपि जिनवचनपुरस्कृत्य हेत्वर्थानुसारिणा द्रव्य-पर्यायतद्विकल्पप्रपञ्चितः सामान्यपुरुषोः भाषामात्रज्ञानातीतो ज्ञायते हेतुं जाणति तमेव पश्यति तमेवावबुध्यते । यथावस्थितमाभिमुखीभावेन प्राप्नोति गच्छति । तद्धेतुमान् हेतुः । छद्मन् कर्म तत्रस्थितः छद्मस्थः। मर्त्यस्य मरणं छद्मस्थमरणं तद्धितं म्रियते । छद्मस्थः मरणं म्रियते । मतिज्ञानादिचतुष्टयहेतुस्थितं छद्मस्थ इति यावत् । तेन वा हेतुना धूम-पीडादिलक्षणेन अग्निघटादिमवबुद्धयते । करणभूतेन पञ्चापि । स एवं पञ्चहेत्वयं मिथ्यादृष्टिहेतुं द्विविधमपि न जानाति । मत्यज्ञानं श्रुताज्ञान-विभंगं । यथाऽयथार्थाऽगमकत्वात् । उन्मत्तमनुजवत् । सोह्यहेतु अज्ञानमरणं म्रियते । तथा तेनैव हेयार्थाप्रतिपत्तेः सदसदुन्मत्तनगवत् । एवंविधोऽज्ञानमरणं म्रियते । भिद्यज्ञानावरणीयं केवलेनाधिकृत्य ज्ञानविभूतिरुच्यते । पञ्च हेत्वयं सो हि धूमादिकमर्थसम्बन्धकालप्रापणत्वाद्यवशेषिकं साक्षाद्वर्तमानविधि-नियमोभयात्मकं पश्यति । तथा हेयमत्यर्थमग्न्यादिकं साक्षात् । तथा परिणतद्रव्य-पर्यायात्मकम् । धूमादिलिङ्गादिक्रमेण गृण्हात्यहेतुकं । य एवंविधः स केवलिमरणं म्रियते । एष एव कैवल्यं हेत्वर्थसम्यग्मिथ्यादृष्टिसामान्यछद्मस्थतामधिकृत्य निषिध्यमानो ज्ञानभागमयति । यथा केवलिना हेतुनिमित्तो हेतुरप्यवबुद्धयते न तथा तस्यामहेतुहेतुं जानीते पाटुत्वादि विशेषितमवबुध्यत इति यावत्, तेऽग्न्यादिकं मणिनैव अहेतुकं जानीते, सहेतुकमेवेति यावत् । स चैवंविधो ज्ञानमरणं म्रियते । सर्वज्ञवादादयस्याकेवलज्ञानमिथ्यादृष्टिज्ञानादयोज्ञेन प्रसाधिता द्रष्टव्या । पञ्चमे सप्तमो ॥७॥

भिद्यमानय द्वेधा समभागतां यान्ति तं सार्द्धं द्वेधा भिद्यमानस्य यत्र मध्येऽभिभिदं दृश्यते न तत् समध्यं नृप्रदेशिकवत् । प्रदेशावयवा ते यस्य सन्ति तत् सप्रदेशं । यथा द्वि प्रदेशाद्या एव, ते एते पोगला दब्बादेसेणं सपदेशा अपदेशा य, तहा खेत्तादेसेणं तच्चेव पोगला सपदेशा अपदेशा य, कालादेसेण विमे पोगला सपदेशा अपदेशा य, भावादेसेण विमे पोगला सपदेशा अपदेशा य । सद्दादयो पडुत्तर मज्जे चैव दड्ढ्वा । प्रश्नानुगतमेवोत्तरं, जे दब्बा दो अपदेशा ते परमाणू ते णियमा खेत्ते अवगाहमाणा अपदेशे एव ओगाहंति । कालतो कदायि समड्ढितीया कदायि दु समयाइ ठितीया । भावतो एकगुणकालगा वा दुगुणकालगा वा जावाणंतंको । एवं दव्व-खेत्त-काल-भावं पडेक्कं अपदेश-सपदेश भेदेणं तत्तेन चारेज्जा । भावादेसेण थोवा वण्ण-गंध-रस-फासेहिं वीसहिं गुणेहिं हीणा लभियव्व त्ति कड्डु गुणबहुपरिणामिणो य पोगला तेण ते

सपदेसाणं असंखेज्जतिभागो । चोयगाह - अणंता गुणट्टाणा कम्हा अणंता न भवंति ? भण्णति । ण सव्वेसु दुपदेसियादिसु गुणट्टाणेषु पोग्गला संति, तेण अपदेसा असंखेज्जतिभागो, सपदेसा अपदेसा असंखेज्जतिभागो, सपदेसा असंखेज्जगुणा । ते य बुद्धीए अट्टव्विज्जंति । हेट्टा सपदेसाणं अट्ट चत्तालाणि दो सताणि । तेतो कालापदेसा असंखेज्जतिगुणा । कहां ? भावावदेसिएसु असंखेज्जतिभागो कालोपदेसो होति, तहा भावसपदेसि वि ते दो वि मेलेऊणं असंखेज्जतिभागा कालावदेसियरासिं णिप्फाएति । तत्थट्टण्हमसंखेज्जतिभागो बुद्धीए । दो छक्कालपदेसयाण भावसपदेसयाण मज्झातो कालापदेसया चोद्दसकालसपदेसयाण दो सयाणि चतुत्तीसाणि छहिं मिलिएहिं दो चत्तालाणि कालपदेसयाणं, इतरेसिं सोलस परिमाणं । तहा दव्वापदेसा णिप्फातिज्जति ति सोलसण्हं दोण्णि लब्भंति । दव्वापदेसा चोद्दस दव्वसपदेसा सपदेसाण मज्झातो तीसमपदेसा दसुत्तरदुसतदव्वसपदेसाणं तुल्ला रासी मोत्तूणं बत्तीसमपदेसा, दो सताणि चउव्वीसाणि सपदेसाणं दव्वापदेसाणं मज्झातो दो खेत्तावदेसा लद्धा । तेसिं चेव सपदेसरासीतो बासट्टी चउसट्टी संखित्ता तीसं खेत्तसपदेसा सतं बासट्ट दव्वसपदेसयरासीतो खेत्तसपदेसयाण तीसं मेलेऊण सतं ठाणउणतं सपदेसाणं खेत्तापदेसेहिंतो तेसिं चेव सपदेसया संखेज्जगुणा कहां ? जेण दोहिं असंखेज्जएहिं णिप्फातिता तीसा व पाहट्टसतेण य । अहवा एग पदेसोगाहेहिंतो दुपदेसोगाहेहिंतो दुपदेसागाढा जाव सव्वलोगागाढा । तत्थासंखेज्जा लब्भंति सट्टाणसिद्धीतो वा । ततो दव्वसपदेसया विसेसाहिया । कहां दुगुणा वा असंखिज्जा वा ण भवंति ? भण्णति । जम्हा पुव्वं बासट्टी णिग्गया ततो दव्वापदेसया तीसं सुद्धा । सेसा बत्तीसं जाया । तेहिं विसेसो लब्भति । अहवा खेत्तापदेसया परमाणू य खंधा य खंधाएसु पक्खित्तं ते य बत्तीसमेय । जे खेत्ततो अपदेसा ते नियमा दव्वतो सपदेसया संपुण्णा चेव रासी इट्टो विसेसाहिया जाया । दव्वसपदेसेहिंतो कालसपदेसया विसेसाहिया । जेतो बत्तीसा पदेसिया दव्वा तेसिं कालापदेसिया दोण्णि, तीसं कालसपदेसया दव्वसपदेसु वि चोद्दस काला पदेसया । कालसपदेसयाणं दो सताणि दसुत्तराणि । मिस्सा सोलसा य देसया । कालसपदेसयाणं दो सताणि चत्तालाणि विसेसाहिया जाया । दव्वसपदेसएहिंतो कालापदेसयाणं दो भावा पदेसया । चोद्दस भावसपदेसया तहा कालसपदेसयाण मज्झे असंखेज्जतिभागेत्थ भावसपदेसया दो सताणि चतुत्तीसाणि । भाव य सपदेसयाण चोद्दस सकालापदेसया छुहिऊणं दो सताणि अट्ट चत्तालाणि जाताणि अट्टविसेसो । एत्थ अप्प-बहुं - तहा सट्टाणे सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया, दव्वपदेसट्टयाए संखेज्जपदेसियाणं संखेज्जगुणा संखेज्जपदेसिया असंखेज्जगुण ति कट्टु असंखेज्जभागहीणा परमाणवा अपदेसा, खंधा असंखेज्जभागवट्टिया एगपदेसोगाढा थोवा । दुपदेस

सव्वलोगावगाढा, संखेज्जासंखेज्जपदेसा लोगागासत्तणातो एगसमयठीतीया दव्वा थोवा । दुगादि असंखेज्जकालावत्थाणातो ते य सपदेसा असंखेज्जाभावाओ अपदेसाओ थोवा । सव्व वण्णादिभावतुल्लाधारदुल्लभत्तणातो दुगादिअणंतपज्जवपरिणामातो असंखेज्जा सपदेसा गुणाणंतट्टाणवट्टीतो कहं अणंता ण भवति ? । भण्णति । ण सव्वाणि तु ठाणाणि एहिं समकंताणि दोहिं छप्पणेहिं सतेहिं पोग्गलपरिमाणं उदाहरणी कृतम् । एत्तो य परमत्थतो अणंता रासी ॥छ॥

ण वुड्डी सक्काराणारंभविरहातो गगणवत् । ण वा हाणी तक्कारणाण चयातो गगणवत् । णिक्खमणं पवेसणं ता तो वुड्डी हाणी णेरतियादिसु उवचिज्जमाणा वट्टंति णिग्गमभावोद्धितसिद्धा । णेरतियादिसु अवट्टाणं वुड्डी हाणी विभिज्जंति । अव्वोवच्छिन्नं आवलियाए असंखेज्जतिभागो उक्कोसो जहण्णो समतो । एवं हाणी वि अवट्टाणं । उववाओवट्टणविरहो जो जस्स भणितो सो दुगुणो कज्जति । एगम्मि एगो दव्वट्टो, दुत्तिओ उववण्णो तमत्ता चेव ते परतो पुणरवि समी हवंति । एवं सव्वत्थ एगिंदियाण परट्टाणं णिदिट्ठं । सट्टाणेणाणुसमयअविरहिता जीवणेरइय णेरइभेदं असुरकुमारत्तभेया एगेदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-तब्भेय-समुच्छिम-तिरिय-गब्भ-तिरियं समुच्छिम-मणुयगब्भवक्कंतिय-वाण-जोतिसिय-वेमाणिय- तब्भेयाणं च । जो जस्स विरहोववायकालो सो वि गुणो अवट्टाणं । उववातो जहण्णेण एकं समयं उक्कस्से आवलियाए । असंखेज्जतिभागो सामण्णो पत्तेय भेयव्वा जाणेज्जा ॥छ॥

अपचयो हासो वट्टमाणकालादिरुवादिट्टस्स सह अपचएण सापचयः विद्यमानापचयो वा सापचयः । एवं सह उपचएण सोपचयः वुड्डी वि जं भणितं किंचि हीयते किंचिद्वर्द्धते । अपरासे सोपचयोपचया निर्गतः उपचयः अपचयश्च यस्य, णि शब्दो भाववाची । प्रत्येकं अवण्णस्स चउगारआदेश णिरुपचय निरुपचयाद्विप्रतिषेधप्रकृतं गमयति । अवट्टितत्थं तिधा या भावो पडिसेहातो चेव लब्भति । एगेदिएसु सट्टाणवट्टितो, अविरहिता ताहिं उवचीयंति, यासेस भट्टा णत्थि, सेस जीवेसु चत्तारि भंगा, उववट्टणोववातविरहकालेहिं जाणेयव्वा, सिद्धेसु दो सोपचय-णिरुपचयत्तं कालतो य साहेज्जा ।

पंचमे अट्टमो ॥छ॥

मणुयलोगसमयावलिगा अहोरत्तादिपरिच्छिन्नेण कालेण सेस खेत्तनिवासीणं ववहारो मणुयेहिं तेहिं वा परोप्परं कज्जति । लोगो असंखेज्जा तत्थाणता रातिंदिया परित्ता रातिंदिय त्ति विरहो ? उत्तरं- अणंता जीवा वि गच्छंति उववज्जंति । एगम्मि समयादिए काले सो य पाडेक्कं समप्पयि अणंतेसु परित्तेसु य आतो तस्स वि कालस्स, तहेव णिदेसो पोग्गलदव्वेहिं छतुमत्थाणं गहणविसयमागच्छति । ॥पंचमं शतं ॥छ॥

वत्थदिट्ठेण कम्मणोपचया भणिया । प्रसासवैचित्र्यता नैकान्तिकः, ताव जहा सल्लुग्गहणं जहा य सुद्धी तहा साध्य-साधनविभागः कर्तव्यः । आश्रवादिप्रवर्तनेन मलीमसआत्मा तद्व्युपरमतयोभ्यां शुद्धिर्वस्त्रस्यैव । कति कम्मपगडितो ? ॥हा॥ ॥८॥ केवलिकालं बंधंति निबन्धनं बन्धः । जीव-पोग्गलाणं आंगांगीभावो बन्धः, जहा-णिगलपुरिससंबंधः तत् सट्ठिती वितिज्जति । उपात्तस्य उक्कोसा मज्झिमा य जहण्णा य तिविहो । तत्थ खवगसेढी यदि चऽण्णो अंतोमुहुत्तस्स बंधंति तम्मि चेव वेदेति । उक्कोसे तेत्तीसं सागरः कर्मणः स्थितिः । कर्मणो निषेका-जीवप्रदेशेषु कर्मणः पुद्गलः नैषेकः, ताम्रादेरिवमूषायां, अहवा वि कम्मट्ठिती, ततो जं भणितं होति कम्मणिसेगो । तीसं सागरोवमाण कोडाकोडीतो तिण्णि य वाससहस्साइं जत्तीयाणि रूवाणि उवरिं दीसंति तत्तिसयाणि भवंति । ‘अबाधाहाणे वा वृ लोटने’ तहिं तं स ताव इमम्मि उदयं देति सो अबाहा कम्मनिसेगो । सकलो कालो अबाहा कालो । तिण्णि सहस्साणि । अहवा जणतो रासी बाहाकालो भवति सहस्सणतो । सेसा उदयकालो वेतिज्जति । तप्पभित्तिय देसोदयादिणा अहवा तिण्णि सहस्साइं अबाहा बाहा आधूणिया भवति । सव्वो बाहा बाहाकालो कम्मट्ठिती पत्तेयं वा समप्पति । णाणावर(ण) दंस(ण)-वेद-अंतरायाण सामण्णं वेदणिज्जस्स इरियावहबंधतो एगम्मि गेण्हति दुत्तिए वेदे वेदेति । जहण्णकालो एयस्स विसेसितो; मोहणिज्जस्स सत्तरि कोडाकोडीतो सत्त सहस्सा । जहण्णो मुहुत्तभंतरतो संखेज्जतिभागो आणापाणुग्गहणकाले वा पज्जत्तगो सत्तरस भवग्गहणवट्ठी दिट्ठो त्ति कट्ठु, णाम-गोत्ताणं वीसं कोडाकोडीतो वीसयसयाणि । जह(ण्ण) अंतोमुहुत्तसकलोकालो अबाहाकालो बाहाकालो । सव्वत्थ जोएयव्वो । आउस्स तेत्तीसं पुव्वकोडिं तिभागज्जत्तियाणि । को एयस्स बंधको ? पुरिसवेदणिज्जोदयातो पुरिसो इत्थिवेदणिज्जोदयातो णपुंसतो तिविहकम्मवेदणिज्जोवसममुक्कोसंतो णोकारपडिसिद्धो । उवसंतो मोह-खीणवेदोवरिवट्ठमाणो सिद्ध पज्जवसाण रासी सुहुमसंपरागो बंधति, अहक्खातो न बंधति, सिए त्ति इव सामग-खवग-सवेदोवरिवट्ठमाणो सुहुमसंपरागतपत्तो मोहणिज्जं बंधति । आउयं कदाति न बंधति कदाति बंधिस्सति, मुहुत्तस्स अंतो तेण कदाति बंधति कदाति नो बंधति । सुहुमसंपरागो अबंधतो आउयस्स णाणा, किसं संजतो ? पंचप्पकारे संजमे बहुमाणे लब्धति । सेसो असंजतो देसेक्कदेसविरतो, संजयाऽसंजतो तिहिरहितो णोसंजतो णोसंजतासंजतो सेलेसीतो सिद्धो य अहक्खायसंजतो ण बंधति । सेसो बंधति एत्ति सेसो असंजतो बंधति सावगो बंधति । सेलेसितो सिद्धो ण बंधति, अहक्खायसंजमहेट्ठा संजते सत्त वि संभवन्ति । आउयं च पुव्वबद्धं सिया बंधिस्सति वा अहक्खायहेट्ठा चेव सेलेसिसिद्धो य बंधति । तं चेव

सम्मदिडी वि । सम्मदिडी सिया अविरयसम्मदिडीं आदिं काऊण सुहुमंतितं बंधति । सेसाउवरि ण बंधति । मिच्छा बंधति । सम्मामिच्छादिडीमं । एवं दरिसणे णाम-गोत्त-अंतर-मोहणिज्जं । सुहुमसंपरागातो हेट्टा बंधति उवरिं ण बंधति । वेदणिज्जं सेलेसि सव्वज्जा बंधति, सुहुमसंपरागहेट्टा सिया बंधति, सिय णो । समणा सण्णी, अमणा असण्णी । तत्तिए भवत्थकेवली सिद्धो य । अहक्खाततो हेट्टा सण्णी बंधति, उवरिं ण बंधति । असण्णी बंधति णोसण्णी, णोअसण्णी, केवली, भवत्थकेवली य न बंधति, वेदणिज्जं सण्णिणो आसण्णं सेलेसिपत्तो केवली य ण बंधति । आउयं दोसु पढमेसु तहेव भवत्थकेवली य सिद्धो य, मुणत्थिणो भवसिद्धीयो ण भवसिद्धियो सिद्धो भवसिद्धितो सिय अहक्खायहेट्टा बंधति । उवरिं न बंधति । अभवसिद्धीए बंधति, केवली न बंधति अहक्खायहेट्टा भवसिद्धीतो बंधति ॥छा॥ आउयं, तहेव अभवसिद्धीए णियमा सिद्धो न बंधति । सव्वातो अहक्खातो हेट्टा चक्खुदंसणी बंधति, उवरिं ण । एवं तिणि वि केवलदंसणीं बंधति । एवं दंसणावरणिज्जं मोहणिज्जमहक्खाती वि बंधति । केवलदंसणी सिय सेले(सि)सिद्धा वज्जो बंधति । किं पज्जत्तओ पज्जत्ती पज्जत्ततो ? एयाहिं असंपण्णो अपज्जत्ततो ततितो सिद्धो पज्जत्ततो अहक्खातोवरि ण बंधति । हेट्टा बंधति । इयरो बंधति । ततितो सिद्धो ण बंधति । मोहणिज्जमहक्खातसंजतो वि वेदणिज्जं भवत्थकेवलीओ आउयं तहेव अपज्जत्तयो सव्वातो आउयं सियायद्धं वा बंधति वा बंधिस्सति वा णोपज्जत्ततो ण बंधति ॥छा॥

एणेदिया अभासगा सिद्धा य । सेसा भासगा भासतो अहक्खायहेट्टा बंधति । एणेदियो बंधति । अभासतो सिय । एवं सब्भवि वेदणिज्जभासगो नियमा बंधति । अभासगो एणेदितो बंधति । सिद्धो ण बंधति, तेण सिय'परित्तो त्ति'; संसारपरित्तो, भवपरित्तो य दुविहो अहक्खायहेट्टा बंधति । उवरिं ण बंधति । अ(प)रित्तो बंधति । ततितो सिद्धो सो न बंधति । सेसितातो तहेव अहक्खायहेट्टा चतुणाणी वि बंधति । उवरिं न बंधति । वेयणिज्जं चउणाणिणो नियमा बंधति । केवलणाणिणो भवत्था सयोगी बंधति । अयोगी न बंधति । मतिणाणी सुतणाणी विभंगणाणीणे सव्वबंधगा आउयं तहेव सिया णाणावरणिज्जं किं मनजो० इत्यादि । अहक्खायसंजमे मणयोगी सो ण बंधति (हेट्टा बंधति त्ति) सेलेसिसिद्धा अजोगिणो ण बंधति । एवं सत्त वि मोहणिज्जं च विसेसेज्जा । वेयणिज्जं च तिणि वि नियमा बंधति । अजोगी सव्वाबंधतो, किं साकारादि ? सह आकारेण विसेसेणेति यावत्, साकारं ण जस्स आकारो तण्णणाकारं सामण्णणाणमिति यावत् । एवं चउयोगदुयं सव्वजीवाणं । अहक्खातोवरि ण बंधति । हेट्टा बंधति । तेण सिया । एवं ति, मतौ णाणावरणिज्जं किं अहोविग्गहगतिसेलेसिसमुग्घा(य)सिद्धा अणाहारगा

सेसाहारगा ? दो वि सिया । वेयणिज्जं नियमा आहारतो सेलेसिसिद्धो ण बंधति, अणाहारतो सेसा बंधति । आउयं पुण आहारतो नियमा बंधति । जो पुण (अ)णाहारतो विग्गहगतिआदितो सो ण बंधति । 'सुहुमे ति' सुहुमोदयातो सुहुमो बादरोदयातो वा ततो बादरो खवग-भवत्थकेवली ण बंधति । सेसो बंधति । इतरो सिद्धो । एवं सत्त वि एतेसु द्वाणेषु जत्थ णिच्चं सिय तिय आउयं बादरो सिय सव्वहायव्व वा अबंधतो वा वोच्छिन्नकालं बंधतो वा । इतरो अबंधतो । 'चरमि ति' । भवसंसारितो दुविहो - सेसो अरिदमो चरिमो सिञ्जिस्सति । तहा वि बंधति । अहक्खातोवरिता बंधति । अचरिमो वि सिद्धो ण बंधति । सेसो बंधति । एवं एते सव्व वि सिय बंधति सिया ण बंधति । एतेसिं चैव सव्वपदाणं अप्पाबहुयं भेदेण समुदायेण भाणियव्वं । छट्ठस्स ततियो ॥

जीव आहारग, अणाहारग, भविय, अभविय, णोभविय, णोअभविय, सण्णि, असण्णि, णोसण्णि, णोअसण्णि, सलेस, काउले(स), किण्ह-नील-काउले. तेउले. पम्ह-सुक्का, अलेस्स, सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी, संजत-असंजत. संजतासंजत, णोसंजत, णोअसंजत, कोह-माण-माया. लोभ, अकसाय । णाणो आभिनिबोहिय-सुत-ओधि-मण-केवल, मतिअण्णाण - सुतअण्णाण विभंगअण्णाण । सजोग मणजोग, वइजोग, कायजोगं अजोग । उवजोग, सागार, अणागार । 'वेद' इत्थिवेद पुरिसवेद, नपुंसकवेद, अवेद । ससरीरी ओरालिय वेउव्विय, आहारग, तेया, कम्मा-असरीरी । आहारपज्जती, सरीरपज्जती, इंदियपज्जती, आणापाणुपज्जती, भासा-मणपज्जती, आहारपज्जती, सरीरापज्जती, इंदियापज्जती, आणापाणुअपज्जती, भासा-मणअपज्जती, चउरिंदिय । एताणि सुत्तपदाणि । एगत्तेण य बहुत्तेण य । पत्तेयं पत्तेयं कालसपदेस-अपदेसत्तेण, एवं सेसियाणि छव्वीसयेसु उणेसु चारिज्जंति । तं जहा - जीवे, णेरइता, असुरादिणो दस पुढवी, आऊ-तेऊ-वाऊ-वणस्सति, बेइंदित तेइंदित, चउरिंदित, पंचिंदिय, तिरिक्खजोणिय, मणुस्स-वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिय-सिद्धा । तीय पडुपण्णाणागतो तिविहो कालो । एतेसिं दव्वाणं पुव्वमण्णम्मि भवे होत्तूण भावंतरं पडिवज्जति । तत्थ पढमसमयपडिवत्ति वट्टमाणसमयदेसंतोऽवबद्धदव्वादि तम्मि चैव भावे दुतियसमयादिसु वट्टमाणं सय देसं भवति । एसो अत्थो मंतिज्जति । जीवेणं भंते ! कालादेसेणं सपदेसे अपदेसे ? ण जीवो अजीवो होत्तूण जीवत्वे पढमसमयभावीति कट्टु, तीत-वट्टमाणगतद्धासु जीवभाव पढम(सम)यमणुभवति, तेण नियमा जीवपदेसयदेसो णेरइए एगत्तेण नेरइयपज्जाएण य पढमसमयभावी, अपदेसा दुतियातिसमयभावी, सपदेसो एत्थ य एगण्णं सामण्णेण ण णज्जति । किं सपदेसो घेप्पतु

अपदेसो वा ? दोणहं च । णेरत्तियत्तेणागहणमिच्छिज्जति । तेण सिय सप. सिय अप. । एवं सव्वठाणेसु सिय बहुत्तेण जीवाणं कालादेसेण स सव्वे वि जीवा न कत्तिमासपदे । एवं णेरतिया तिसिं उववायविरहातो जे वा उववज्जंति ते वा दुपदेससमयादिसु णेय । तेहिं विरहो तेण सव्वे वि ताव सपदेसा । अहवा एते य एक्को य पढम समयोववाती । अहवा एते य बहुया य पढमसमयोववातिणो एगिंदिएसु पुढवि, आउ, तेऊ, वाऊ, वणस्सतिसु असंखेज्जा अणुसमयमणंता य वणस्सतिसु उववज्जंते तेण सपदेसा य अपदेसा य अभंगं । सेसेसु णेरतियतुल्ला द्वाणेषु सिद्धं, तेसुं विरहित्तातो तिण्णि सामण्णं ण आहारो आभोग-अणाभोगतो वा, आहारादितो जीवादियो जीवपवण्णेयो । बहुत्तेण पुच्छा - तहेव जीवपदे । एगिंदिएसु य आहारा कालादेसेण सपदेसा य, वितियसमयादियाहारिणो तहा उववादिपढमसमये अपदेसा आहारका कालाभावदेसेण बहुत्तातो अविरहियत्तातो य नेरतियादिसेसद्वाणेषु सव्वे याव होज्जा आहारगा कालापदेसेण सपदेसा अहवा सपदेसा य । एगो य आहारतो सपदेसा य अपदेसा य । बहवो अणाहारतो अणाहारतो भुयो; । अणाहारगतपढमसमये अप. सेसो वितियादि अणाहारगतसमये सपदेसो । एगत्तेण जीवादिसु सिद्धं । तेसु सिय सव्वत्थ बहुत्तेण कालादेसेणं अणाहारगा जीवा अणाहारगतपढमसमय-वितियसमयेसु बहवो संती तेण अभंगं । णेरतिया अणाहारगा सव्वे ताव होज्ज बितियसमये सयदेसव्वा । अहवा अणाहारगपढमसमयवत्तिणो वा तेण अपदेसबहुं । अहवा दोण्हि आइड्डसमये एगो बितियसमया अणाहारगो । एगो पढमसमए ३ अहवा एगो दुसमए दो पढम समये ह्व १४। अहवा दो दुतियादि समएसु एगो पढम समए । तृ ॥५॥ अहवा अपढमसमए बहवो पढमसमए बहवो ॥ फुं (६)॥ एवं अणाहारगविरहवित्तियातो वेमाणियंतेसु छब्भंगा । एगिंदिएसु णिच्चं । विभंगगतिपढमदुतियादिविग्गहवत्तिणा बहवो, तेण अभंगं । अणाहारगा कालादेसेण एगिंदिया सपदेसा य अपदेसा य । सिद्धपदे सिद्धा सव्वे ताव अणाहारा सपदेसा कालतो, अहवा सपदेसा य । एगो पढमसमयमज्झिमाणो, बहुवा सिज्झमाणा वि बहवो एवं तिए भंगो । भवसिद्धिया जीवा कालादेसेणं सपदेसा सपदे, तत्थ भवसिद्धियत्तं अणादिपरिणामितो भावो जीवो जीवत्तेण जहा । एवं अभवसिद्धिय भावो वि एते रासी असंसिद्धा मणियव्वा । जधानि भवियाऽभविया एवमितरे वि भवन्नसिद्धस्स णत्थि कारणस्सेव कारियत्तपरिणयस्स कारणाभावो । जहा तेण सिद्धपदेण तं अभवत्तमवि णत्थि तेणव्वंतं असंबंधातो, एवमेव भवसिद्धिय अभवसिद्धिय पदा दो जीवदंडएण तुल्ला, एगत्तेण वि पुहुत्तेण वि, णोभवसिद्धिया णोअभवसिद्धिया कालसपदेस-अपदेसेण जीवा जहा, सव्वे ताव होज्ज सपदेसा, अहवा सपदेसा य अपदेसे य । अहवा

सपदेसा य अपदेसा य । एवं सिद्धिपदे वि तिण्णि । अण्णेषु णेरइयादिसु नत्थि संभवो ॥छा॥

इहापूहादिया जस्स सण्णा सो सण्णी लब्भति । एगत्तेण जीवेसु सिय सपदेसो, सिया अपदेसो । एवं णेरतिया सुर-तिरिक्ख-पंचिंदिय-मणुय-देवेसु । एवं पुढत्तेण वि सण्णी कालावदेसेण सव्वे ताव होज्ज सपदेसा य अपदेसे य, अहवा सपदेसा य अपदेसा य । तहा नेरतिया असुर-पंचिंदियतिरिय-मणुय-देवेसु विगलिंदिएसु णत्थि संभवो । असण्णिजीवेसु तिय भंगो । एण्णेंदिएसु सपदेसा य अपदेसा य । णेरइय - देव-मणुस्सेहिं सव्वे ताव सपदेसव्वे अपदेसव्व, सपदेसे य अपदेसे य, सपदेसेय य, अपदेसा य सपदेसा य अपदेसे य छब्भंगा । जम्हा असण्णी उववायविरहिता कदायि णोसण्णि णोअसण्णी जीव - मणुय-सिद्धेसु तिय भंगो । सेसेसु संभवो णत्थि । सलेस्सा सामण्णं जीवादिसु, ण अलेस्सो होत्तूण सलेस्सो भवति । तेणव्वंतजीवा सलेस्सा एगत्तेण बहुत्तेण य जीवपदे । णेरइया तेसु उववातविसेसा सिया अपदेसे सिय सपदेसे, एवं एगत्त-पुहुत्तेण सव्वत्थ सिद्धपदवज्ज उहियजीवपदं वण्णेज्जा । कण्हले० नील-काउलेस्साहिं जीवपदेसे लेस्संतरं संकंतीतो सिय सपदेसे सिय अपदेसे । सेसेसु उववायविसेसेण पुहुत्तेण जीवपदे एगिंदिएसु य सपदेसा य अपदेसा य । बहुत्तातो सेस पदेसेसु उववायविसेसेण तिण्णि भंगा जत्थ संभवो लेस्साणं । तेउलेस्साए वितियभंगो जत्थ संभवति, णवरं पुढवि-आउ-वणस्सतिसु अपज्जदेव तेउलेस्से विरहो वा । अहवा जे उववण्णा ते सपदेसव्व अहवा अपदेसव्व, अपदेस सपदेसे वा, अपदेससमयदेसा य, अपदेसा य सपदेसा य, अपदेसा य सपदेसा य जत्थ संभवति । पम्हा से तिय भंगो पुहुत्तो एगत्ते सिय अलेस्सो खवितलेस्सो एगत्ते जीव-मणुय-सिद्धेसु सिय पुहत्तेण । एतेसु चेव जीव सिद्धपदे तिय भंगो । मणुस्सेसु सेलेसिं पडिवण्णतो कदाति णत्थि तेण छब्भंगा । सम्मद्धिङ्गि एगत्तेण सिया सव्वत्थ पुहत्तेण जीवादिसु तिय भंगो, बे ति चउरिंदिएसु सासातणसम्मत्तविरहातो छब्भंगा । एगिंदिएसु असंभवो । समत्ताओ चवमाणो मिच्छत्तपदेसो लब्भति । सव्वत्थ तिय भंगो । एगिंदिएहिं सपदेसा य अपदेसा य अभंगं । सम्मामिच्छद्धिटी अभिमुहे सम्मत्तविसुज्झमाणा लब्भति । सेसा ण सव्वतो तेण एगत्ते सिय पुहत्ते जीवादिसु संभवतो छब्भंगा । संजताजीव-मणुयपदेसु तिय भंगो । णोसंजतो णोऽसंजय णोसंजतासंजतो संजतासिद्धो जीवसिद्धपदे तिय भंगो । सकसायजीवादिसु एगत्तेण सिय, पुहत्तेण तिय भंगो । एण्णेंदिएहिं उववाता विरहातो अभंगं । कोहे एगत्तेणं जीवादिसु एगत्तेण सिय, पुहत्तेण तिय भंगो । जीवएगिंदिएसु अविरहातो सपदेसा य अपदेसा य, कोतेहिं देवा विरहिज्जंति ततो छब्भंगा । सेस पदेसेसु तिय भंगो । अकसायीजीवमणुस्स-सिद्धपदेसु संभवो तत्थ तिय भंगो । माणे माया एगत्ते

सिय पुहुत्ते सिय । जीवएगिंदिएसु अभंगगं । बहुत्ताते णेरइय-देवा विरहिज्जंति ततो छब्भंगा । सेसेसु तिय भंगो । अकसायीजीव मणुस्स-सिद्धपदेसु संभवो तत्थ तिय भंगो पुहत्तेण ॥छ॥

णाणस्स चवतो अण्णाणं । तातो पढ्मे अपदेसो बितिए सपदेसो तिय भंगो । एवं णेरतिया सुरादिसु एगिंदिएहिं असंभवो विगलिंदिएहिं । सासातणसम्मत्तविरहातो छब्भंगा । एवं आभिनि-बोहिएसु एहिं पि एगत्तेण सिया सब्ब एय वज्जं । जत्थ ओहिण्णाण संभवो तत्थ एगत्तेण सिय बहुत्तेण तिय भंगो । एवं मणपज्जव-केवलेहिं पि य विरहितत्तणातो नत्थि वण्णदो तहेव अण्णाणस्स वियक्खो णाणं । तातो चवमाणो अपदेस-सपदेसो लब्भो एगत्त-पुहत्तेण, एगत्ते सिय इतरत्थ जीवादिपदेसु तिय भंगो । एगेदियेहिं अभंगगं बहुत्ताओ । एवं मति-अण्णाणे सुत-विभंगेसु य एगत्तेण सिया पुहत्तेण तिय भंगो । विभंगणाणं जत्थ संभवति तत्थ मग्गितव्वं । सजोगिस्स वियक्खो अजोगि । सो य जीवपदे णत्थि । णाजोगी होत्तूण सजोगित्तं लभते तेण ओहिय-दंडगतुल्लं । एगत्त पुहत्तेसु मण-वइ-काय-एगत्तेण सिय पुहत्तेण जीवादिसु तिय भंगो । कायजोगे एगेदिया विरहातो अभंगगं । अयोगीजीव-मणुय-सिद्धपदेसु तिय भंगो । सेलेसीए अभंगगं । ता सागारस्स अणागारं विपक्खो । इतरस्स इतरो । एगत्तेण सिया पुहत्तेण य । जीवपदं एगिंदियपदं च मोत्तुं तिय भंगो । सवेदगस्स वियक्खो अवेदो जीव-मणुय-सिद्धपदेसु एगत्त-पुहत्तेण णेज्जा । उवसामगत्तातो य चवमाणो सपदेसापदेसापदेसाप-देसातोणणेतो । इत्थिवेयगादीण परोप्परं सपक्खा विपक्खता एगत्तेण पुहत्तेण जीवपदादिसु वि जहासंभवं णेज्जा । अवेदए एगत्तेण जीव-मणुय-सिद्धेसु य बहुत्ते, एतेसु चेव अविरहितत्तातो तिय भंगो ॥छ॥

सरीरसामण्णं-जीवपदादिसु एगत्तेण ओहियदंडयतुल्लं । ण असरीरी होत्तूण ससरीरी होति । जीवपदे एगत्तेण सेसेसु तिय भंगो । तत्थेगिंदिए अभंगगं । ओरालियं जीवविगलिंदिय-तिरिय-पंचिंदिय-मणुएसु एगत्तेण सिय पुहत्तेण । जति उववातविरहो तेसिं तिय भंगो । अविरहे सपदेसा अपदेसा य । वेउव्वियं जीव-णेरइय-सुर-चाउक्का-तिरियं पंचिंदिय-मणुय-देवेसु एगत्ते सिय बहुत्ते । जत्थाविरहो तत्थ ति छ विरहे ।छ॥ आहारयं जीवमणुएसु विरहातो छब्भंगा । तेय-कम्मएहिं जीवपदे एगत्ते सपदेसो बहुत्ते य । सेसेसु उववातं पडुच्च तियभंगा भंगता णेया । असरीजीवसिद्धा णिच्चं संति तत्थ तियभंगो । आहार-सरीर-इंदियपज्जत्तीहिं एगत्तेण सब्बत्थ सिय, पुहुत्ते जीव-एगेदिएसु अभंगगं अविरहातो । सेसपदेसु तिण्णि

भंगा । एवं आणा-पाणु-पज्जतीए वि । भासापज्जती बेइंदियादिसु तीसु तिभंगो । पंचेंदिएसु वण्णस्स तियभंगो । आहार-पज्जतीए एगत्ते सिय सव्वत्थ पुहुत्ते सिय सव्वत्थ, पुहुत्ते जीव-एणेंदिएसु णिच्चं विगहगतिसंभवातो अभंगं सपदेसा य अपदेसा य । सेसपदेसु गतिविरहातो छब्भंगा । सपदेसव्व अपदेसव्वादि । ह् ॥४॥ सरीर-इंदिय-आणापाणु-भास-मण-अय एगत्ते सिय पुहुत्ते जीव-एणेंदिएसु अभंगं । उववाता विरहातो बेंदिय-तेंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियतिरिएसु अपज्जत्तया विरहे त्ति कट्टु, आगमणेण पुहरहा तेण तिय भंगो । मणुय-देव-णेइएसु कदायि अपज्जत्तयाण होज्जत्तेण छब्भंगा ६। भासा अपज्जतीए य, जीवपदे तिण्णि सपदेस निच्चं संभवातो एगो अयदेसो बहुया वा बेंदियादिसु भासा पंचिंदिएसु मणो । जो य अप्पणो कालो तत्थ पढमसमए अपदेसो । बितियादिसु सपदेसा हवंति । भावा संवरो पच्चक्खाणं इतरोऽपच्चक्खाणं । देसेक्कदेसविरती । देसपच्चयपच्चक्खाणं णेरतिया देवेसु णत्थि य । तिरिय-मणुएसु तिण्णि वि जाणं ति । पंचेंदिया तिविहस्स वि । विगलिं(दि)या अपच्चक्खाणं जाणं ति । जहा-पढम दंडतो निव्वत्तियासु ते तिविहा वि जहासंभवं च जाणेज्जा ॥छा॥ फुं॥६ ह् ४॥

तमुकाय-तमस्काय । अरुणवरुस्स दीवस्स बाहिरवेदिकान्तात् समुद्रं बातालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहिता उवरिजलं ता एगपदेसागाससेणीए ॥१३.२१॥छा॥

छव्विहे आउस्स बंधे । जाति नाम एगिंदयादि तृ(५) गति ह्(४), ठिति-स्थितिः, कालपरिमाणं । ओगाह-ओगाहणं सरीरपरिमाणं पदेसा कम्मपोग्गलगाहणं अणुभागो सुभासुभवेदणा विया । को णिहत्तणिहत्ताऊय ? णिउत्त णिउत्ताऊ य, एतेहिं णाम अप्पसहिएहिं छणिज्जंति ह्(४) फुं (६) । चउवीसा दंडएण एतेहिं चेव चउहिं चत्तादीहिं । गोत्त-अप्पविसेसिएहिं चत्तारि दो वि अट्ट दंडगा । अहुणा मीसएण नाम-गोत्तेण निहत्तणिहत्ताआऊ णिउत्तणिउत्ता आऊ य चत्तारि ।छा॥ एक्कत्थ चेव जीवा णिहत्ता । अण्णत्थ आऊयाइं एतेसु ट्ठाणेसु ॥छा॥

अविशुद्धलेश्यो अविशुद्धविभंगज्ञानः । असमोहतो-अणुवउत्तो अण्णं अविशुद्धं विसुद्धं वा समोहतो उवउत्तो, अविशुद्धविसुद्धं, समोहता समोहतो उवउत्ताणुवउत्तो । तच्चेव सव्वमिच्छादंसण दूसितणाणातो ण जाणंति । एवं विसुद्धलेस्सो असमोह समोहतेहिं अविशुद्धा सुद्धा । छच्चारेज्जा दो वज्जिय चतुसु जाणति णाणसंसुद्धे । ॥छा॥

पढम समया समएसु अप्पाहारते । सरीराग्निस्तोकत्वात् बालवृद्धवत् । विग्रहगती अलियदिदृतेणं एगसमए गमणे वि, अणाहारतो सुगुणगमणे । केयिं भणंति-अणाहारतो, केयिं भणंति पोग्गलोवादाणं । जहा कातूण जाति तम्हा आहारतो । एवं चतुसु दोण्णि तिसु एक्को समयो लब्भति एतेसिं ॥छ॥

सिद्धगतिरूपं वर्णयते:—चतुःप्रकृतिकर्मणोदारिक-तैजसशरीरविच्छेदानन्तरसमयरिजुगत्येक समयलोकान्तप्रापी विमुक्तो जीवः निःसंगत्वात् अलाबुवत् । तस्यैव विपक्षे अधोगमनं ससंगत्वात् अलाबुवदेव बन्धच्छेदात् एरण्डकुलिकावत् । तथैव विपक्षे बन्ध-विमुक्तत्वात् धूमगतिवत् । विपक्षश्च पूर्वप्रयोगात् इषुवत् । एवमस्य तथापरिणतिर्दृष्टा । अथवा तथैवास्य गतिपरिणामेन भवितव्यम् । तत् स्वभावात्मकत्वात् । विशेषधर्मोपेतः घटादिपदार्थवत् । 'जीवे भंते' ! जीवे यो जीवशब्दार्थः स एव द्वितीयः जीवशब्दार्थः । यथा-वनस्पतिः तरुस्तर्बुवनस्पतिः । अत्र शब्द भेदेन अर्थभेद इतरत्र शब्दार्थयोरभेद एव । तत्र शब्दार्थयोः परस्परतः सामान्यस्य चानुप्रवेशवृक्षतरुवत् । उभतो अब्बाहतं । जीवे णं भन्ते ! णेरइगे, णेरइगे जीवे नेरइए ताव णियमा जीवो विसेसो सामण्णे णियमिज्जति । सामण्णे भणियमितं तमण्णत्थ वि देवादिए एयं आदिवाहतभवसिद्धीए जीवे भवसिद्धीए भवसिद्धियत्तं जीवे णियमिज्जति ? जीवो न भवसिद्धियत्ते अभवसिद्धिय, णोभवसिद्धिय, णोअभवसिद्धियत्ते दरिसणातो, अन्तरबाहतं भवसिद्धिए णं भंते ! णेरतिए । णेरइए भवसिद्धिए ? णेरइए सिया भवसिद्धिए भवसिद्धिए वि सिय णेरइए सिया मणुस्सादिए आद्यन्तयोः पदयोः अभिवाचारः उभयबाहतं एवमेषां विशेषण-विशेष्यभावो नैकधा पदानां वाक्यभावं प्रपद्यमानानां द्रष्टव्य इति ।

'अण्णभत्थियाण समवायकहा'- समणे णातपुत्ते पंचत्थिकाये पण्णवेत्ति । तं जहा-धम्मत्थिकायादि । तस्स ड्ढवणा-अरूवी १११०१ एगं च संभविकायां ०००१० चत्तारि अज्जिक्काए ११११० एवं जीवकायं ००००१ णो खलु अत्थिभावं णत्थि वदामो । अस्तित्वमेतेषामेव स्वधर्मतः नैषामन्यधर्मोऽन्यत्र संक्रामन्ति मूर्तामूर्तचेतनोचेतनानां समावेयतः यः यत्र स तत्रैव नियम्यते । अन्यत्र नास्ति अत्थिभावं । अत्थि ते नत्थि भावं णत्थि ते । एवं धम्मत्थिकायादीणमधुवः एय गमो कतो सपज्जाय परपज्जायेहिं । सत्तमं शतं समाप्तमिति ॥छ॥

अट्टमो आरब्धते-

कतिविहा पोगल त्ति । तिविहा- मूलभेदतो ठवेज्जा ।

‘पयोग-मीस-वीससा तथा संगहणिपदाणि’ ठवेज्जा ओहियपज्जं । सरीर इंदिय सरीरिंदिय । वण्ण सरीर वण्ण, इंदिय वण्णइंदियसरीर वण्णं । ओहियपज्जत्तसरीरइंदियत्तो सरीरइंदियत्तो वण्णे । सरीरवण्णे, इंदियवण्णे सरीरइंदियवण्णे । पुणरवि मूलजीवभेदा । एगेंदिय, बेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिय, पंचेंदिया । एगेंदियादिपदं हेट्टा सभेदेहिं भिज्जति । पुढविकात्तिय, आउक्कात्तिय, तेउक्कात्तिय, वाउक्कात्तिय, वणस्सत्तिकात्तिय । पुढविकायट्टाणमवि हेट्टा दोहिं सुहुम-बादरेहिं । एवं सव्वेगिंदियभेदा सुहुमभेदेतरेहिं पुढवीसु । सुहुममवि दोहिं अप्पज्जत्त-पज्जत्तेहिं । तब्बादरमवि अपज्जत्तएहिं, एवं सव्व सुहुम-बादरा दुयएण भेदेण बेइंदियादयो अपज्जत्तएहिं पंचेंदिय, णेरइया सत्तविहा वि पज्जत्तापज्जत्तएहिं तिरियपंचेंदिया जलधर, थलधर, खहचरा एगेगो भेदो गब्भवक्कंतिय-समुच्छिमेहिं हेट्टा कज्जति । त एव पज्जत्ताऽपज्जत्तएहिं पुणरवि एक्केक्को भिज्जति हेट्टा । पंचिंदियमणुयभेदा दुहा-समुच्छिम, गब्भवक्कंतिएहिं । अपज्जत्त-पज्जत्तेहिं दुधा । दुधादेव मूलभेदो चउहा । आदिल्लो दसधा । बितितो अट्टधा । ततितो पंचधा । चउत्थो दुधा । तत्थ पढमो बारसधा । बितितो दुधा । तत्थ पढमो तिविहो । एत्थ एक्केक्को तिविधाओ । अण्ण पंचधा । सव्वे य देवभेदा अपज्जत्तपज्जत्त य भेदेहिं हेट्टा कज्जा । ओहियपदं पज्जत्तपदं च । एत्था रयणाए सम्मत्तं । एतेषु प्रायोगिकपरिणतपुद्गलद्रव्यं चारिज्जति । जहा जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगं परिणता, एवं जाव अपज्जत्ता सव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाति य । कप्पादीय-वेमाणियदेव-पंचिंदियपयोगपरिणता य अपज्जत्तसव्वट्टसिद्धं त्ति । अंतभेदातो सामण्ण भेदानुक्कमणं कायव्वं । अधुना एतेसु जीवपदेसु सरीरपदं, पयोगपरिणामपदेन चारिज्जति । जे अपज्जत्ता सुहुम-पुढविकाइय-एगिंदियपरिणताते, ओरालिय-तेया-कम्मा सरीरप्पओगपरिणता, एवं पज्जायाण ठितीहिं सरीरेहिं । तथा पुढविकाइय-बातरा वि जाव पविसेसपुव्वागसामण्णसामण्णोवक्कमाणेण पुढविकाइय तेया-कम्म-ओरालिएहिं चारिता । तथा सव्वे एगिंदिया पज्जत्ता बातरवाउकाए चत्तारि सरीराणि विसेसा वेउव्वियंति । बि-तिय-चउरिंदिएसु ताणि चेव सरीराणि । णेरतिएसु तिण्णि सरीराणि वेउव्विय-तेया-कम्माणि । तथा देवाण तिरियाण य मणुयाणयं गब्भवक्कंतियं पज्जत्ताण य पंच सरीराणि संभवतो जोएज्जा जहा सरीराणि चारियाणि । अपज्जत्त-सुहुमपुढविकायएगिंदियादिसु सव्वसिद्धंतेसु । तहेव इंदियाणि

विष्ययोगपरिणतपोगलेहिं णवरं, एगिंदियाण फासो । बेइंदियाण जीहा-फासा । तेइंदियाण, घाणि-जिब्धि-फासा । चउरिंदियाण चक्खु-घाणि-जिब्धि-फासं । पंचिंदियाणस्स य चक्खु-घाणि-जिब्धि- (सोत्त)फासिंदियाणि वत्तव्वाणि । एतानि चेव द्वाणाणि शरीर-इन्द्रिय-मिश्राणि भाणियव्वाणि । जस्स जति इंदिय सरीरा संभवन्ति सव्वक्कं सिद्धंतेसु चउत्थातो दंडतो एताणि चेव ठाणाणि इंदिय, वण्ण, रस, गंध, फासेहिं चारिज्जंति । अपज्जत्त-सुहुम-पुढविक्का० एगेदियादीणि सव्वसिद्धंताणि, तहा सरीर, वण्ण, मिस्साणि एतानि चेव ठाणाणि । तहा इंदिय, वण्ण, मिस्साणि तहा तिहिं विसेस्सितेहिं मिस्साणि सव्वाणि ठाणाणि चारिज्जंति । एवं णव ठाणा पयोगसहिताणि । उहियमहादंडए चारिताणि जहा, तहा मीसापदमवि पंचविहभेदादियं सव्वं णेज्जा । मिस्साभिलावेण पयोगपरिणामं जहा वीससापरिणतो वण्ण, गंध, रस, गंध, संठाणेसु सवियप्पभेदेसु परोप्परं चारिज्जंति पणवणाए । जहा एगं द्रव्यं उदाहरणं केच्चा चारेतियानीं । वीससा पयोगपरिणामो तिविहो-मण, वइ, काय । मणप्पयोगो चउहा-सच्चामो० असच्चामोस० एक्केक्को छव्विहो-आरंभ, अणारंभ, सारंभ, असारंभ, समारंभ, असमारंभ । संकप्पो सरंभो, परियावकरो भवे समारंभो, उह्वतो आरंभो । सव्वे णयाणं विसुद्धाणं एवमेत्थ चउवीसं भेदा । कायो सत्तविहो-ओराल, ओरालमीस, वेउव्वि, वेउव्विमीस, आहार, आहारमीस, कम्मयए भाणिय सरीराणि एगेदिएसु भेदेसु चारेज्जा जहासंभवं । एवं मीसापदमवि मणादिसु सव्वभेदेसु णेयं । वीससापरिणतो वण्ण, गंध, रस, फाससद्वाणेसु मीसामीसभेदेण जीवा परित्ति पाणि-पादो दव्वाणि मग्गेज्जा । पयोगमीस वीससा ठाणेसु मण, वति, काय, आरंभादिसु य सरीरेसु तिसु छभेदा । चतुसु दस एयारंभ सरीरेसु दो दव्वाणि तिण्णि य चारेयव्वा । सव्वाणिं पि सेसदंडएसु संभवतो चारेतव्वाणि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणं ताणि दव्वाणि तिसु चउसु पंच छ सत्त ठाणेसु स एग दुग तिग चउक्कग संजुत्तेसु णेज्जा सव्व ठाणेसु ॥ अट्टमे पढमो ॥

जच्चेव तिरिय-मणुया असीति विसेसा तेच्चेव देवेसु अपज्जत्ता लब्भंति । जीवपदे णाण-अण्णाणा । णेरइयपदे तिण्णि अण्णाणा, दो अण्णाणा । तत्थ समुच्छिमअसण्णिणो जाव अपज्जत्ता-पज्जत्ता ताव दु अण्णाणी । पज्जत्तीभावं गताणि णाणी । एते य असुर-वाणमंतरेसु लब्भंति । तत्थ संभवतो लक्खणं जोएज्जा । गतिग्गहणं निग्गय-अपविट्ठयं अंतरालवायगं गामंतरालमिव । जीए गतीए उववज्जिउकामो तीए णाणवेदनमारभवे आउय-वेयणसमणंतरमेव य भवट्ठग्गहणं ठाणं संपत्तं दरिसगं तत्थ य पज्जत्तादिभेदो भाणियव्वो ।

कतिविधा लद्धी ? दस विधा । णाण-दंसणादी । तावो संठवेतूण हेट्टा सभेदा कज्जंति । बालो अविरतो, पंडितो विरतो, विरताविरतो पत्थरेत्ता मग्गिज्जंति । णाणी अण्णाणी य मूलट्टाणस्स सपक्खो विपक्खो य णायव्वो । तहा अंतरालभेदस्स सपक्खो विपक्खो य, तेसु णाणाणि अण्णाणी य संभवतो जाणिऊण णिद्दिसेज्जा ।

णाणलद्धिया जीवा णाणी य अण्णाणी पंच भयणाए, तस्स लद्धी अण्णाणं विपक्खो । एवं आभिणिबोहियणाणलद्धीए चत्तारि संभवतो तस्स विपक्खो णाणी विण्णाणी वि संभवतो जाणेज्जा । एवं सुत, ओहिण्णाणे दो पविट्टाणि अच्चभिधारातो विपक्खो य भाणियव्वा । एवं अण्णाणलद्धीए णाण विपक्खो । तत्थ जे भेदा ते भाणियव्वा संभवतो भेदेण । एवं तस्संतरालभेदाण विपक्खो । णाणऽण्णाणि सव्वत्थ भेदसंभवतो जाणेज्जा । दंसणस्स विपक्खो नत्थि, सम्मदंसणस्स मिच्छा मिच्छसम्माणि मिच्छस्स सम्ममिच्छा, मिच्छासम्मिस्सेतराणि । तेसु णाण-अण्णाणाणि जाणिऊण णिद्दिसे, चरित्तस्स अचरित्तो वि सामाइयसंजमस्स । इतरसंजमा । इंदियलद्धी पंचहा । सोत-चक्खु-घाणि-जिब्भ-फास-गंध सव्वेसिं परोप्परं विपक्खा । उवरिमिंदिएसु हेट्टिल्ला संति । हेट्टिल्लेसु णो । उवरिमाएसु संभवति । णाणी अण्णाणी य संभवो जाणेज्जा, सागाराणागारं दुविहं ठावेत्तूणोवयोगं, तब्भेया अट्ट चउरो य । णाणे णाणा, अण्णाणे अण्णाणा भाणियव्वा ।

अयोगिसेलेसि सिद्धा । कण्हा-नीला काउ-तेउ-पम्ह देवा-णरगेसु । सुकलेसा तेसु चेव मणपज्जवणाणं णत्थि । सव्वत्थोवा मणणाणय परिमित्तखेत्त-दव्व-सामित्तातो । ततो विवड्ढिय खेत्त-दव्व-सामित्तातो ओधिस्स, ततो सुतस्स, संखातीते विभच्चे कहेज्जा । जं बायरो तु पुच्छेज्जा । ण य णं अणादि सेसी वि जाणती एस छउमत्थो त्ति । ततो अणंता आभिणि०-सुत-णाणाणं अणभिलप्पभावा अणंता । अभिलप्पाणं चाणंतभागो सुतणिबद्धो । अणभिलप्पे सुत-मतिणाणमत्थि । सव्वदव्व-पज्जवेसु केवलं । एवं अण्णाणे वि मीसए । एतेणेव क्रमेण जाणेज्जा । वित्तियुद्देसतो अट्टमे ॥छ॥

छउमत्थो विवरवत्तिसु जीवपदेसेसु वाबाहं करेस्सति । जीवकम्म-अमुत्त-सुहुम-कम्मपरिणामातो वातायणपतिट्टियसुहमरेणुवोमदेसवत् ।

सगस्स अप्पाणयं भंडं । तत्थ मतिसंताणा वुच्छेदातो अप्पसरीरवत् । तहा भज्जादिए सुत्थेसु सामातियं तस्स देसे वट्टति त्ति कट्टु, समणोवासगो पच्चक्खातो तीते वट्टमाणे अणागते पच्चक्खाति । तत्थ

करणाणि य जोगा य संबज्जंति । पच्चक्खाणं कम्मं तिण्णि कत्तारो करणाणि जोगा ण करेति अप्पणा, ण कारवेति परेण, करेत्तं ण समणुजाणाति एगेगं स-मण-वय-काएहिं तिविहं करणं तिविहेण जोगेण, तिका० दुविक जो० तिविक० एग जो० । दुविक० तिविक जो० । दुविक० दुजोग, दुकए जो०, ति जो- , एक० दुजो०, एक जोगो । (८ ८ ८ ८) एत्तेसु संजोगा कायव्वा । सव्वे वि एगूणं पंचासं भवंति । तीए एते वट्टमाणणागतेहिं तिगुणा सीतालसतं । थूलपाणातीवात, मुसावात, अदिण्णा, सदारसंतोस, इच्छापरिमाण, पंचगुणा । सत्तसत्ता पंचत्तीसा भेदाणं सावगवतरासी ॥छा॥

एगंतणिज्जरा सावगो सुभकम्मसंपदाण य योगाओ विसुद्धे गाहगदाणसिद्धवत् । अण्णत्थ असुद्धदाणं सुद्धो गाहगो तत्तिए सव्वमसुद्धं । सव्वमुदाहरणाणि य घेप्प, संपत्थितो असंपत्तो थेरा असुहा अप्पणा अथेरा अप्पणा कालं का० संपत्ते थेरा असुहा । अप्पा अथे० का० अप्प० का० एवं अंतो पडिसयस्स वियारभूमी सण्णाभूमी विहार-सज्जाय एवं वाहिं पि । तथा णिगंधीए अराधकत्वं कथमेव भवति ? अणालोतिए वि, भण्णति जम्हा कज्जमाणं कडं ति । उदाहरणाणि कप्पसुत्तसंबंधीणि देज्जा ।

पदीवस्स वट्टमाणपज्जोयवत्तिया गहिया ओहिओ जीवो । अण्णातो ओरालियसरीरीतो कतिकिरितो ? संपरातियकम्मबंधीति किरियातो आरद्धो पंचकिरितो भवति । इरियावहबंधी सेलेसिसिद्धा अकिरिया एक्कोरालिजीवो । एक्कोरालिजीवो एक्कोरालितो दो जीवो, एगो ओरालितो एगो जीवो, दो ओरालितो दो जीवा दो ओरालिया, एवं णेरइयादी । एवं पंचसु सररिसु, तेया-कम्मय, वेउव्विएसु उव्वट्टणा नत्थि । तेण सव्वे चउकिरिया सेसे सिय ॥छा॥

थेराणं अण्णउत्थियाणं य वियारणा नयाभिप्पाएण य जोएयव्वा ।

पंचविहो ववहारो । तं आगमादि । तं आगमी भवत्थकेवली जाव नवसंपुण्णपुव्वी । सो पच्चक्खातो सदोसणिघायणं वयस्सति । सुयववहारादिआणालेहकरणं धारणा । जहा आयरियदिण्णसंवारणमेत्तं । जीयं सुत्तत्थविदु आयरियधम्मसद्धियायरणं पमाणं । एतेन वा ववहारो आदीते २ ।

पहाणतरा जीवस्स कम्मपोग्गलेहिं बंधो णियलबंधवत् भवति । संखेवतो-इरियावहितो संपरायबंधो य । खीणोवसंतकसातो(इ)रीयावहियबंधी । सकसातो संपरातियबंधी इरियावहबंधी चिंतिज्जति । सेस पडिसेहं कातूण वट्टमाणसमयातीतपुव्वपडिवण्णयं प्रतीत्य तिण्णि वि इत्थियादि,

केवलिणो बंधति । वट्टमाणसमयं पडुच्च मणुस्से वा एगो होज्ज मणुस्सी वा मणुस्सा वा मनुस्सीतो वा । एतेहिं य चउभंगो कायव्वो । सव्वे अद्धभंगा भवन्ति । तं एयं वट्टमाणसमयं पडुच्च किं इत्थी पुरिसो नपुंसतो य ? बहुवयणे य सव्वे वेया पडिसेहेयव्वा । तस्स अवेदत्तातो जे वि पडिवज्जमाणा तेवि अवगतवेदा चेव । तं भन्ते ! इत्थी पच्छाकडो त्ति ? सो वेदो जेण अणंतरसमयपश्चात्कृतस्य । तत्पश्चात्कृतमग्रहणेन गृह्यते । एगवयणे ३ बहुवयणे ३ दुयसंजोए । बारस १२ तियसं अद्ध ह्व(४) । सव्वे वि बंधति । तं भन्ते ! (अ)तीते बंधी वट्टमाणे बंधति । एस्सेव बंधिस्सति । तत्थ भवाकरिसो भिण्णभवेसु तिण्णि ठाणाणि गहणागरिसे एगम्मि चेव भवे तिण्णि(इ)रियावहयबंधकालो । ॥छ॥ बंधी संपरायबंधो अवेयये भणितो सवेदय सव्वत्थ संसारिए संभवति तेण सिद्धो चेव संपरायियबंधो । णेरइय इत्थियादीण अहवा एतेय अवगतवेदो य खवग-उवसामगा अहक्खायसंजमद्वारेणमप्पमत्ता संपराइयबंधगा । तत्थ जे एते खवगोवसमगा अहक्खाया पत्ता ते किं इत्थिवेद पच्छाकडा ? एवं सव्वत्थ इत्थि-पुरिस-नपुंसगेहिं परात्ते तिण्णि । बहुत्ते तिण्णि । तिण्णि दुय संजोगा । एगो तिय संजोगे । छव्वीसं मीसिया । सादियादि ।ह्व=४॥ सपदेसे ह्व = ४= । एसो य पत्थारो पुव्व भणितो ॥छ॥ [Table : 1, page. 24]

अट्ट कम्मपगडीतो परिसहा चउ संभवन्ति, णाणावरणे २ णाणे अणविगमो तेण वा मज्जति । पण्णा से मतिणाण भेदो, णत्थि तीते वा मज्जति । वेदणीए-दिगिच्छा, परिपिवासा सीउदं(ण्हं) च । सेवगे तृ(५) जल्ल ११ । मोहणिज्जं दुव्विहं-दंसणचारित्तदंसणे(ऽ)दंसणं चारित्ते ।

अरति अचेले इत्थी-णिसीहिया-जायणा य अक्कोसे ।

सक्कार-पुरक्कारे चरित्त मोहम्मि सत्तेते ॥

अंतराए अलाभपरीसहो । सत्तविहबंधतो आउयवज्जो मोहणीय, आउयवज्जो । छव्विह वेयणीय(इ)रियावहेगबंधी । एत्थ य जा जत्थ पयडी तीए ते संभवन्ति । विरोधिणो ण युगपत् ।

बंधणं बंध सो २. (पओग वीससा) अप्पचक्खो णाणी । वीससा वणो तं वक्खाणेति । सो दुविहो सादिअणादी य । तत्थाणादीतो तिविधो । धम्मत्थिकायादीणं । जे य देसा तेसिं परोप्परं जो बंधो सो अणादीतो वीससाबंधो । एवमहम्मत्थिकायादीण पदेसपठव्वो य । सो सव्वकालं च अविरहितो सादितो जहा भणितो पउगो जीवदव्ववेयणपरिणतिविसेसो । तत्थाणादीतो-अपज्जवसितो ।

जीवस्स पदेसपधानपत्थरियस्स अट्ट जीवपदेसा मज्झे रुयगसंठिया उवरि चत्तारि हेट्ठा य तेण संचरंति । सेसातोदारियादिसरीरविसेसमसंकोवायोपदेसंतरसंपरिबंधे णो हवंति । कण्ण-छिद्दधरादि-सुद्धा । तत्थवियतिलं एणेण सह दो पासतो जे हेट्ठा य एगो । एतेसिं तिण्हं । जो एगो मज्झे तेण सह अणादीतो अपज्जवसितो ॥छा॥

सादीअपज्जवसाणो सेलेसिं संठवियपदेससंठिती सिद्धस्स णिच्चा बाहिरभंतरकिरिया विसेसा संभवातो खं.देसाणवं. उक्खेवणीक्खेवा भाणियव्वा जाव सरीरवज्जे ।

पुव्वपयोगे पच्चंति ए य अपच्चुप्पण्णपढमो नेरइयादीणं संसारत्थसव्वजीवाणं । तत्थ तत्थ खेत्ते तेहिं तेहिं कारणेहिं तम्हि तम्हि काले वेदनासमुग्घातकसायवेउव्विया आहारा तेया मारणांतिकसमुग्घाय समोहयणिच्छूढवयदेससंघातो समुप्पज्जति । पुव्वदव्वचेयणवत्तपव्वतितो पच्चुपण्णो । सेस कम्मायु तुल्ली करणत्थं केवली समो भण्णति । तत्थ पढमे समए सरीरप्पमाणं हेट्ठावरिल्लो अंतपतिट्ठियं दव्वंडं करंति, दुतिते पुव्वावराइं कवाडं करंति, ततिते पदक्खिणो य तं कवाडं करंति । चउत्थे कवाडंतराणिं जीवपदेसमप्पणाणि करंति । पंचमे मंथंतरोवसंहारं । एत्थ तेयो कम्मगसरीरसंघायं जीवपदे(स)संघायसह चरियमारभवे । छट्ट सत्तट्टमेसु तं जहागता तहेवोवसंघारो वा ॥छा॥

सरीरप्पयोगबंधो पंचविहो । ओरालियादि । ओरालिओ पंचविहो । एगिंदियादिपुढविक्रातियादि सव्वे भेदा सट्ठाणेषु पत्थरिज्जंति । सुहुम-बायरपज्जत्तादिणो य भेदा संभवतो ओरालियसामण्णं कारणं मग्गति । ओरालियं कारणं-जस्स वीरियादिकरणं वितियमवि एगिंदियोरालियं सामण्णं कारणं भण्णति तं चेव । एवं जाव सव्वभेदाणं कारियाणं कारणं णिद्धिट्ठाणि । एवं पु । आ । ते । वा । व । बे । ते । च । पंचिंदियतिरिय-मणुस्सा ओरालियओहियं । एगिंदिएहिं सव्वे बारस १२, । एतेसिं देशबंधो य सव्वबंधो य । सव्वबंधो नाम जे पोग्गला विसयसंपत्ता ते णिस्सेसा णिरूवलेसा ओरालियत्तेण परिणामेति । सो य पढमसमयोववाते हवति । देसबंधो वि केसिं चि पोग्गलाणं ओरालियत्तेण चयो अण्णेसिं पारिसाडं दोहिं पि पूयगदिट्ठंतो ओरालियप्पओगबंधं ओहियं एगेंदिय-पंचिंदिय संभविणं, सव्वदेसजहण्णोक्कस्सं भेदभिण्णं मग्गति । कालभेदेण सव्वबंधो उववातपढमसमये उक्कस्स जहण्णो देसबंधो । गहण-चागलक्खणो पोग्गलाणं । जहण्णो एगो समइतो, ओरालियसरीरी वेउव्वियसरीरी वेउव्वियलद्धी । ओरालियातो वेउव्वियं कारुणं अंतोमुहुत्तपडिआगओ ओरालियदेसबंधो एग समयं द्वि वा मरेज्जा । उक्कस्स तिण्णि पलितोवमाइं

पढमसमयसव्वाहारगुणाणि जाव य आउगं वेदेति ताव सो तयायू लब्भति । एगिंदियोहियाण सव्वबंधे तहेव देसबंधो जहण्णो वाउक्काइयविउव्वियं एग समयेगमरणे उक्कस्से पुढविकाइय बावीससहस्ससव्वबंधसमयूणे । एवं सव्वबंधो सव्वेसिं तुल्लो उक्कस्स जहण्णो वि सो गतो । देसबंधो पडिभेदं भिज्जति त्ति । ततो पुढवी देसबंधो जहन्नो पज्जत्तगखुड्डागभवग्गहणं । दो समयविग्गहो तेसु देसअबंधी ततिए सव्वबंधी । ते तिण्णिं समया खुड्डागभवग्गहणातो पाडिज्जंति । सेसो देसबंधो एते असंखेज्जसमया तत्थद्ववणत्थं अट्टव्विज्जंति । अ । अ । स । दे । दे । दे । दे । दे । उक्कोसेण सव्वुक्किट्ठा सव्वबंधसमयविरहितं २२ कज्जइ । आउक्काइयाणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं अ । अ । स । दे । दे । दे । स । दे । जहण्णो उक्कोसो । उक्कस्स द्विती समयूणा सत्तवाससहस्सा तेउ जहण्णं भणितं । राति ३ समयूणो । वाउस्स जहण्णो समउ वेउव्वियंतमुहुत्तागतदेससमयमरणकालो उक्कस्स ४००० वा समयूणो । वणस्सति जहण्णो पुढविकाइय तुल्लो । उ० दसवास सहस्सा १०००० समयूणो । बेइंदिय बारसं संवच्छरा १२ । तेइंदिय एगूणपणं राइंदिया । चउरिंदिया छम्मास । सव्वत्थुक्कस्सो समयूणो जहण्णो पुढवितुल्लो । तिरियमणुयाणं विगुव्वणविसेसातो जहण्णयो सामाइओ, उक्कस्सो ति पलितोवमसमयूणो । अधुना एतेसु चैव जीवभेदेसु ओहियादिसु सव्वबंधस्सय २ अंतरं चिंतिज्जति । तहा देसबंधस्स देसबंधस्स य । एत्थ य देसबंधो सव्वबंधंतरं भवति, ओरालियसव्वबंधंतरं खुड्डागं भवति, ति समयूणं बुड्डीए अट्टसमया दो विग्गहसमया एगो य सव्वबंधं समयो तेहिं ऊणं खुड्डागभवग्गहणं कज्जति । अ । अ । स । दे । दे । दे । दे । दे । स । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । आदिल्ल भवग्गहणस्स तिण्णिं समया पडिवज्जंति । ततो दुतिय सव्वसव्वस्स सव्वस्स य अंतरेयं समया उक्कस्सं अंतरं पुव्वकोडीओ । ओरालिओ पढमे समये सव्वबंधतो तेत्तीससागरोवमेहिं देवेहिं, तत्थ वेउव्वियसव्वबंधी । ततो चुतो ति-समयविग्गहगती होतूण ततीए समए ओरालियसव्वबंधी । पुव्वकोडीसु पुरिसेसु आदिपुव्वकोडीए अबंधगा समयसुद्धपक्खेवेत्ततो पुव्वकोडी तेत्तीससागरो समयो य सव्वबंधस्स य अंतरं ॥छा॥

देसे जहण्णो सो चैव वेउव्वियागतो समयं विसमतोक्कस्सो पुव्वकोडिअंतदेसबंधं काऊण तेत्तीसं सागरा । ततो मणुएसु ति-समयविग्गहं काऊण दो समया बंधतो ततिए सव्वाहारतो ततो देसबंध, एतस्स य आदिपुव्वकोडिअंतदेसस्स य अंतरं कण्णं । एगेदिएसु वि खुड्डागं ति-समयूणं जहण्णं, उक्कस्सं पुढवी उक्कसाओ समयूणं । सेसा दो अबंधसमयाविग्गहस्सा । ततो सव्वबंधो सुद्धपक्खित्ते कयं विग्गहगतीए ।

एगो समतो सव्वबंधतो, दो दो सव्वबंधयायस्से दिट्ठ ति कट्ठ वेउव्वियमविकिच्च अंतोमुहुत्तं अंतरं हवति । देसस्स देसस्स य पुढविउ खुड्डागं ति जह(ण्ण) उक्कस्स स २२ अ । अ । स । सुद्धपक्खित्ते कंठं । सेसस्स देसस्स य सव्वबंधसमयो अंतरं देस दे० अंत आदिया मरणकाली । उक्कस्से एगस्स अंतो अण्णत्थ विग्गहा ति-समतितो स । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । अ । अ । स । दे । दे । दे । दे । दे । दे । एवं आ० ते० वा० व० बे० । ते० च० सव्वबंधति समयूण खुत्तिऊणं उक्कस्से सव्वुक्कस्साहे ट्ठितीतो ठित्तिबंधगभवग्गहणं सुहपक्खित्ते वाउस्स देसबंधंतरे विसेसो उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं विगुव्वणातो पंचिंदियमणुयाणं सव्वबंधंतर ज. खुत्तिऊणं उक्कस्से पुव्वकोडी समयाहिया । तहेव देससमयो ज० उक्कस्से विगुव्वणितो अंतोमुहुत्तं । एते चेव सव्वदेसबंधा । जह(ण्ण)मुक्कस्सा विजातीयसरीरभवंतरविरहिता मग्गिज्जति । 'जीवस्स णं' सुत्तं । एग्गिंदियजाती, ततो बेइंदियादिविरहो । पुणरवि एग्गिंदियजाती, ततो बेइंदियादिविरहो, एत्थ ओरालिएग्गेदियसव्वबंधंतरं चिंतिज्जति । दो खुड्डागभवग्गहणाणि एग्गेदियत्तस्स आदिल्ले अबंधगा, दो समया सव्वबंधगं, दो समयं मोत्तुं सेसा दो भवग्गहणा, ति-समयूणा । बेइंदियादिसु य दो सागरोवमसहस्साणि संखेज्ज वा समभतियातियाणि सव्वं मेलेऊण कंठसु । ठवणामेत्तं । अ । अ । स । दे । दे । दे । दे । दे । वि.ति. च. पं. सं. संखेज्जा वासा । स । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । उक्कसं भणितं । जहण्णं आदिखुड्डभवग्गहणस्स तिण्णि समया हीणा । बेइंदियादिसु खुड्डगं संपुण्णं । पुणरवि एग्गिंदियत्ते आदीए चेव सव्वबंधो हवति तेण जहण्णं । ठवणा -

अ । अ । स । दे । दे । दे । दे । दे । स । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । स । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । पुव्वं जहण्णं देसबंधे आदि एग्गिंदियंतदेससमयो एग्गेदियादिखुड्डगभवग्गहणं संपुण्णं । पुणरवि एग्गिंदियखुड्डगआदिसव्वबंधसमतो ततो देसो भवति । एवं खुड्डगं बेइंदियादिं इतरसमयसव्वबंधगाहियं देसस्स देसस्स य अंतरं उक्क० आदिल्लंत देसो पुणरवि एग्गिंदियत्त सव्वबंधसमयो ततो देसो ।

ठवणा- अ । अ । स । दे । दे । दे । दे । दे । बेइंदियादिपंचेंदियंता स । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । स । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे । दे ।

पुढविएग्गेदितोरालिय सव्वस्स सव्वस्स य अंतरं जहण्णं च । तहेव एतस्स मज्जे आउ० तेउ० वाउ० व० बेइंदियादिणो पंचेंदियंता । तत्थ तरुकालो अणंतो खुड्डागभवग्गहणं च ति-समयूणं । उक्कस्स सव्वबंधंतरं देसजहण्णं मज्झिल्ल खुड्डागं सव्वेतरबंधसमयाधिये उक्कस्सो वणस्सइकालो

इतरसमयाहितो । एवं पुढवीण जहा तहा-आउ, तेउ, वाउ, बे. ति.च.पं.ति, सव्वेसिं मज्झ अणंता कालो उक्कस्सो । जं च जहण्णग भवसंबंधिसव्वबंधस्स सव्वबंधस्स य जहण्णस्स उक्कस्स य तहा देस जहण्णस्स उक्कस्स देस देसस्स य । एतस्सणं वणस्सतिकालस्स णोवणस्सति कालस्स २ सव्वबंधस्स य २ जहण्णस्सण्णिमंतरं दो खुड्डागाइं भवग्गहणाणि ति-समयूणाणि उक्कोसेण पुढविकालो असंखेज्जो । आदि खुड्डगं भवग्गहणं च ति-समयूणं उक्कस्समंतरं । दो स० जहण्णेण खुड्डागं भवति । मज्झिंले इतर सव्वबंधसमयाधियं उक्कोसो मज्झिमो असंखेज्जो । इतरसमतो ते एत्थ जो मग्गिज्जति सो दोहिं पासे ठविज्जति । देसरासी मज्झे सव्वो वि संखेज्जो वणस्सति अणंतो जहण्ण मज्झिम खुड्डागं घेप्पति । सव्वबंधे देसबंधेया उक्कस्से उक्कस्सं सव्वबंधो । आदि खुड्डागं तं खुड्डागगहणाणि । देसे आदि अंत देसो ततिय खुड्डागदेससमयोऽयं घेप्पति । छ।

‘वेउव्वियस्स पुच्छ’-सामण्ण विसेसेण वाऊ-तिरियं पंचिंदियं मणुस्स-देवेषु मग्गितव्वं । तहेव सामण्णादीण कारणा कायव्वा । वाउ-तिरित-पंचेदिय-मणुयाण लद्धी । देव-णेरतियाणं भवं पडुच्च सव्वपोगलगहणकालो सव्वबंधो । परिसाडण गहणमीसो देसबंधो । पढमसमतो सव्वबंधो । बितियादिसु देसबंधो । सव्वेषु ठाणेषु दो वि । एक्केक्के उक्कस्स मज्झिमो ओहिओ वेउव्वियबंधो सव्वबंधो । विउव्वणादिसमयो देवादिसु उक्कस्स विउव्वणादिसमतो तदणंतर मतो, देवे णेरइएसु वा अविग्गहेण सव्वबंधो । दो समया देसबंधो । विउव्विऊण समयं ततो देसबंधं, तदणंतरं मतो, पुणरवि देव-णेरतिएसु सव्वबंधी । उक्कस्सं तेत्तीसं सा० पढमसमयसव्वबंधमेत्तं सव्वट्टिसिद्धदेवाणं ।

‘वाऊण पुच्छ’- आदिविगुव्वणं समयकालो । सो चेव जहण्ण उक्कस्सो सव्वबंधो देसबंधे । जहण्णे विगुव्वित्त्तूण वितिय समयं ठिच्चा मतो, अंतोमुहुत्तमुक्कस्सं विगुव्वणा अंतो उद्धं सव्ववेगुव्वियभेदेसु सव्वबंधे एगो समयो देसबंधे जहण्ण उक्कस्सो णेरइयादिसु भण्णमाणो । ‘रयणप्पभपुढविपुच्छ’- विग्गहगतीए दो समया अणाहारतो, ततितो सव्वाहारतो तेहिं ऊणा जहण्णट्टिती, एक्कस्स पदेसबंधो तीए उक्कस्सट्टिती, समयूणा । एवं सव्वपुढवीसु । पंचिंदियतिरिय-णराण जहण्ण एणं समयं, उक्कस्सो अंतोमुहुत्तं, ते वा णेरइय तुल्ला ओहियवेउव्विय सव्वबंधंतरं चित्तिज्जति । (ग्रन्थाग्रं ४०००) जहण्णो विगुव्विऊण देसं ठिच्चा मतो, देवेषु उप्पण्णा, सव्वबंधतो चेव उक्कस्सेणं विगुव्विऊण देसं ठिच्चा तम्मि वा समए मतो, वणस्सति भमिऊण पुणरवि तल्लद्धि विगुव्वति । देसे वि विगुव्वित्त्तूण देसं ठिच्चा मतो, देवेषु उववण्णो । जहण्णो देसो उक्कस्सो देसाणंतरं वणस्सतिसु पडितो । ततो उव्वट्टो विगुव्वियलद्धिं काऊण देसादी बंधी जातो ।

‘वाउक्कायजातीते चेव पुच्छा’- जहण्णे विगुव्वणोरालिं गहणकालो सव्वो अंतोमुहुत्तं चेव उक्कस्सो । तम्मि चेव वाउणिकाए सुहुम-बातरपज्जत्तएसु हिंडति । वेउव्वियउत्तरगुणलद्धिमलभमाणो य सव्वकालं पलितोवमअसंखेज्जतिभागातो लभति वा णो चेव, तातो निग्गच्छति । देसे जहण्णो विगुव्वणं मुहुत्तो उक्कोसो । तद्देसव्वओ वणस्सतिसु पंचिंदियतिरियेसु तम्मि चेव जातिम्मि सव्वस्स सव्वस्स य अंतरमतेसु उक्कस्सो पुव्वकोडीतो जाव णव तम्मि चेव । ततो पुणो वेउव्वियत्तं लभते । ततो वा निग्गच्छति । एवं देसबंधंतरं पि । एवं मणुयाण वि सव्वबंध जहण्णुक्कोसो । जहा पंचेदियतिरियाण जीवस्स णं वाउकाइत्तजातीए णोवाउक्कातियजाती । अन्नेसो सो सव्वरासीणो वाउक्काइतो पुणरवि वाउक्काइयत्ते विगुव्विऊण सव्वबंधी । ततो खुड्डागभवग्गहणं णोवाउक्काइओ ततो वाउक्काइओ पढम समए सव्वबंधी । एसो अंतोमुहुत्तो सव्वो उक्कस्सेण मज्झे वणस्सति कालो छुब्भति । एवं देसबंधे वि दुविहे-पंचेदियतिरित-णराण वि तहेव । एवं रयणप्पभाए । रयणप्पभपुढवित्ते णोरयणप्पभपुढ० पुणरवि रयणप्पभपुढ० दसवाससहस्साइं समयूणाइं, ततो पुणो उव्वट्ठो अंतोमुहुत्तं ठिच्चा णरएसु उववज्जति । जहण्णा ठिति उक्कस्सो तरुकालो मज्झे छुब्भति । एवं देसबंधे वि । एवं सत्तसु वि पुढवीसु जहण्णिया ठिती अंतोमुहुत्तमब्भहिया उक्कस्सो तरुकालो । देसे जहण्णो अंतोमुहुत्तं उक्कस्सो तरुकालो । देवाण य आरणाच्चुत्तेसु मणुस्सो सातिरेग अट्टवासा । जं च उववज्जति तेणातिरेगो करेयव्वो । चउसु अणुत्तरेसु हेट्टिल्ल देव-मणुए संखेज्जसागरोवमाणि हिंडितूण लभते उक्कोसं अंतरकालो मज्झिमेण चेव गच्छति । वेउव्वियदेसबंधं वाउ पंचिंदिय-तिरिय-मणुय-देव-णेइया पढमसमयविउव्विणाथ थोगा । देसे असंखेज्जो कालो दिट्ठो आदिल्ल रूवाओ अंतो असंखेज्जो । एतवति चित्तो वणस्सति । आदी ण अंतो, अणंतो । स । दे । अ । आहारयस्स सव्वं भाणिऊणं । सव्वबंध देसबंध । एग समतितो सव्वबंधो, देसे जहण्ण अंतो० उक्कस्सेव पुणरवि ओरालिए अंतोमुहुत्तं ठिच्चा पुणरवि कारिअत्थं गेण्हति । सव्वो च्चिय अंतोमुहुत्तो अंतरं जहण्णं अंतोमुहुत्तं ठिच्चा पुणरवि गेण्हति । उक्कस्सेण आहारासरीरी उवट्टपोग्गले पं० एणेदियादिहिं हिंडितूण पुणो लभेज्जा देसे वि, तहेव अप्पाबहुं सव्वबंधो एगो मतो । देसे अंतो मुहुत्तंभंतरे संभवो मणुस्साय संखेज्जा किमुताहारतलद्धीतीया ? । तेयए सव्वसरीरीणं देसबंधो अणादिगहणातो, अणादीए वि अणंते । अणादीए सपज्जवसिए अंतरं णत्थि । अविच्छेदातो छिन्नस्सय मणुपत्ते अप्पा य अबंधगसेलेसि-सिद्धा थोवा । कम्मयं अट्ट भेदेण भाणिऊण सोवादाणदेसबंधं च,

अणादीयं, जहा तेयं अप्पाबहुयं, णाणावरणं दंस णाम-गोत्तणं अहक्खातोवरि ण बंधति । हेट्ठा बंधति सेसो बंधति । सुहुमसंपरातो मोहणिज्जं ण बंधति, सेसा बंधति । अहक्खायं अंतरं ण बं० सेसा बं० । आउस्स देसबंधी थोगा । सव्वसत्तादिभागादिआउसेसा बंधति त्ति कट्टु, संखेज्जतिभागो बंधगाण अबंधगा असंखेज्जगुणा, सट्टाणप्पबहुं । जस्स णं ओरालियादितोरालियं वेउव्विय-आहारएसु पडिसेहेतव्वं । तेयाकम्मएसु अत्थि । एवं वेउव्वियं ओरा० आहापंडिए कम्मएसु अत्थि । आहारादिए दोसु तेयं कम्माइं सव्वत्थ संभवन्ति । इवणं कातूण चारेज्जा । देसेसु सव्वेसु जहासंभवं सव्वसरीराणं देससव्वाबंधयभिण्णाणं सट्टाण-पर-ट्टाणेसु अप्पबहुं चिंतिज्जति । सव्वथोवा आहारगस्स पढमसमयदेसवत्ती अंतोमुहुत्तकालो त्ति, ततो देसबंधा संखेज्जासंखेज्जाय मणुस्सा वेउ० सव्वबंधे । पढमसमयिणो वाउ-तिरिय-पंचिंदिय-मणु० देव-णेर० असंखेज्जो पक्खित्तो विउव्वित्ता संखेज्जत मुहुत्तकालो त्ति कट्टु तस्सेव देसबंधी । तेयाकम्माणं अबंधा सिद्धा, ते य सव्वजीवाणंतभागो, तियाणंत गुणाणंतगुणा ते पुव्वरासीतो ओरालियसव्वबंधी वणस्सतिआदिसव्वबंधा जीवा असंखेज्जतिभागो त्ति पुव्वरासीतो अणंतगुणस्सेवं अबंधा वि से अबंधाविग्गहगतिया उववज्जमाणे पढमसमयतुल्ला तेसु सिद्धा य पक्खित्ता तेण विसेसाहिया, तस्सेव देसबंधा असंखेज्जासंखेज्जो कालो उववण्णाण लब्धति । एसो असंखेज्जो पुव्विल्लण सव्वबंध-अबंधगाण, ते य एतस्स असंखेज्जतिभागो रासिस्स तेया-कम्माणं देसबंधगा चव तेतु विसेसाहिया । एत्थंव तु ओरालियसव्वबंधी । जे य विग्गहादिसु अबंधिणो सेलेसि सिद्धवज्जा ते पक्खित्तो ते य असंखेज्जतिभागो पुव्वरासीतो । वेउव्वियअबंधा वि से एत्थ सिद्ध-सेलेसिया पक्खित्ता वेउव्वियबंधया समुद्धरिया । समुद्धरितरासी थोवा, तेण विसेसाहिता । आहारयसरीरस्स अबंधो वि एत्थ विउव्वियरासी पक्खित्तो आहारयबंधी । केतिया य समुद्धरिता तेण विसेसाहिता । एयं सव्वप्प-बहुं सट्टाणप्प-बहुं च । सव्वथोवा ओरालियस्स सव्वबंधी । तिसु वि समएसु अविग्गह वि विग्गहंतिसु जीवा असंखेज्जति सव्वजीवाणं हवंति । जे य अबंधा तेसु वि तिण्णि समया एगवक्कमी एगो दुवक्को दो सव्वे तिण्णि ते पुव्विल्लरासितुल्लाअबंधगगहणसामण्णे सिद्धो । आगता तेय सिद्धा ।

सव्वजीवाणं अणंतभागो । इतरे दो वि असंखेज्जतिभागो तेण विसेसाहिया । देसबंधे णो अंतमुहुत्ते वि असंखेज्जा समया तेण तहिनतो असंखेज्जगुणा । सव्वो य वणस्सतीए णिरूवेतव्वो । इतरो य असंखेज्जो । एतेसिं सिद्धा अणंतगुणा हवंति । एतस्स ठवणा ।

उ. ख स फुणं स असं३ दे ९ अ० ८	अ सव्वो १ देसं २ अ	तेन दे दे अ ५ अ ५ अ णं	उ स अ णं ६ दे ८ अ सं अ ९ दे से १	वे स अ सं. ३ दे असं ४ अ १० वि स	अ सव्वो १ दे. अ सं २ अ ११ विसे
ते विदे ९ अ ५	क विसेसा दे ९ धिया अ ५ अ ५ अ९	उ स दे णु			

अविग्गहा समओ एग विग्गहाते समओ वि विग्गहासमओ सव्वा बंधयं ओरालियस्स तिविहा विग्गहाएण अबंधगसमतो ति विग्गहा दो । एवं तिण्णि अणाहारयं समया । एत्थंसि सिद्धरासी पक्खित्तो विसेसाहितो जातो । पुव्वातो देसबंधगा असंखेज्जकाल ति । तेणासंखेज्जा य सट्ठागप्प-बहुं । एवं सव्व सरीरीण जाणे । तथा णाणावरणं दंसणावरणादीण सट्ठाणे पुव्ववण्णियं पत्थारेज्जा । अप्प-बहुं जोएज्जा सलक्खणेहिं । नवमो अट्ठमे शते ॥छा॥

अण्णउत्थियादि-केचित् क्रियामात्रादेवाभीष्टार्थप्रसिद्धिमिच्छन्ति । न ज्ञानेन किञ्चिदपि प्रयोजनं निश्चेष्टत्वाद् । घटकरणप्रवृत्ताकाशादिपदार्थवत् । अन्येन क्रियाभ्यो ज्ञानादेव तत्सिद्धिर्नह्यज्ञो गोपालकादिः शक्नोति । घटादिकमर्थमभिनिवर्तयितुं । अन्ये ज्ञानक्रियाभ्यामन्योन्यनिरपेक्षाभ्यां । अत्र चोपसर्जनं प्रधानभावेर्नोभयोर्ज्ञानक्रिययोः समावेश अभाववृत्त्या वा शीलं बालतपस्वीति । सो० देसा० २० थोगो.देसो थोगं श्रुतं सम्यग्दर्शनं उभयं ज्ञानचरितं तदभावोऽनुभया । णाणं पंच प्रकारम् । दरिसणं-सम्मत्तं । मीसं-मिच्छत्तं । चारित्तं सामादियादि । एत्थ संभवतो चारेज्जा । जा जस्स संभवति तथा फलं च णिदिस्से ।

पोग्गलाणं परिणती पुद्गलास्तान् तान् भावान् गच्छन्ति । ते चामी भावा युगपदयुगपत् समयिनि वण्णादिसव्वे य परोप्परं चारेत्त्वा । जहा पण्णवण्णाए । एगो पोग्गलत्थिकायो परमाणू दव्वं संपुण्णं । दव्वदेसा दव्वावयवो दव्वादिबहूणि संपुण्णाणि य । दव्वदेसा बहुते अवयवा, उदाहु दव्वं च संपुण्णं,

अवयवा य बहवो । अहवा दव्वाइं बहूइं संपुण्णाइं एगो य अवयवो । अहवा दव्वाइं च दव्वदेसाइं बहवो भंगा । जधा परमाणू तथा दव्वं जधा दुपदे-सयादिखंधस्स एगदेसेण परिणतो तदा दव्वदेसो । सेसा पडिसिद्धा । एवं यो पोग्गलादिंसु जहासंभवं जोएतव्वं जाव अणंता पोग्गला ॥छा॥

अविभागपलिच्छेदो “छिदि द्वैधीकरणे” समन्ताच्छेदः परिच्छेदः । सो च्विय परिच्छेदो छिद्यमानद्रव्यं यावच्छेदं ददाति तावद्विभागी भवति ॥छा॥ पदान्त्यावयवस्थमुपजातं तदा विभागपलिच्छेदं यथा षोडश द्वायाष्टको अष्टचत्वारि तथेतरदपि चत्वारो द्विगभेदगो द्वावेकका चेवं षोडश पलिच्छिदो । अविभागसंज्ञाः दो धाराच्छेदणं दव्वं जं बंधती पकारेहिं ते तस्स पज्जवा खलु जावं अविभागे च्छेदो ति । एवं पोग्गल जीवाकाश-धम्माधम्मत्थिकायादिसु सव्वत्थ समणं दट्ठव्वं केवलिकम्मएसु । इतरो णिवइं वरति । इतरेसु तु नियमा केवलीकम्माणि अत्थि । तथा मोहणिज्जं च उवसम-खवगंतराले समवलोगणिज्जं पोग्गलसंबंधात् पुद्गलीछत्रिवत् । इंदियगहणेण सव्वे सभेदा जीवसंबंधिणो पोग्गला गहितो । तथा जीव इति पुद्गल इति च पर्याया पूर्वभाषिता एव । अष्टमं शतं समाप्तम् ।

एक्करुकद्वीपादि । एत्थयं चुल्लहिमवंतचतुष्पादा दिसिसमवगाढा, अट्टावीसं पदक्खिणा चतुरो चतुरो णिद्धिद्धा । पढमो तिण्णि सताणि जोतणाण समुहं अवगाहितुं वितिओ दीवाओ जोयणसतं गंतुं समुद्दातो चत्तारि । एवं सवेदियाघणसंतायामविक्खंभा जहोवदेसं णेज्जा ।

अश्रुत्वा केवलिनो तस्य वा सकाशे यः श्रुणोति श्रुतज्ञानं उपासको न पृच्छति तत् प्रत्ययासत्र श्रुणोति । एवं सावया उवासिया य तप्पक्खितो सयंबुद्धो एत्थ दुवालसवागरणाणि धम्मो, बोहि, मुंड, बंभचेर, संज्ञा, संवरपंच, णाणाणि पंच एतानि एगत्तेण पत्तेयं पत्तेयं तदावरणिज्जसखयखयोदयोवसमेहिं लभेज्जा । खयोवसमादी एगो लभेज्जा । पुणो वि समुदाएण मग्गिज्जंति । तत्थ वि सिय तस्स तस्स आवरणिज्जकम्मक्खयादीहिं लभेज्जा ण वा लभेज्जा । उदाहरणं च भावेज्जा य । संबुद्धे तथा श्रुत्वा वयो बुज्जति भेदेण ॥छा॥

पवेसणयं, जो सट्टाणेण तस्स पवेसणं परट्टाणातो ? जो पविसो एत्थ घेप्पति ण सट्टाणोववत्ती किंतु परट्टाणपवेसे । चउच्चिह णेरइय, तिरिया, मणुय, देवा । सव्वे पुण सभेदेहिं ठवेत्ता एणंदिया अपुणरुत्ता बुद्धीए चारेतव्वा । संखेज्जा असंखेज्जा य भणितव्वा । अप्प-बहुं एतस्स णं भंते ! अहे

सत्तमाए द्वाणजीवविसेसागमणत्थोवत्तातो थोवा । ततो छद्दाए बहुतरा द्वाणागमणबहुत्तातो एवं जाव रयणप्पभा असण्णी खलुमादी ॥छा॥

तिरिजोणिपवेसणं पंचविहमूलतो ए.बे.ते. चउ पंचेदिय-तिरिक्खजोणिपवेसणओ । एवं जाव एणेदिया भावविसेसाहियाण दुगुणा जीवाणं तहासंभवातो मणुयपवसणगो मूलतो दुविहे ख जोणि पवेसणए । सव्वेसु एग दुग तिग य चतु पंच संखेज्जासंखेज्जा चारेतव्वा । जहाभणितं संजोगेहिं उक्खासतिरियपवेसणं एणेदिएसु एत्थं अप्प-बहुं । थोगो पंचिंदिय-तिरिय पवेसणओ । एवं जाव एणेदिया भावविसेसाहियाण दुगुणा । जीवाणं तहासंभवातो मणुयपवेसणगे मूलतो दुविहे-समुच्छिम गभवक्कंतिए य । तहेव जीवा मगितव्वा । अप्पबहुं-असंखेज्जा सम्मुच्छिमा संखेज्जा गभवक्कंतिया । देवाण मूलभेदा चत्तारि । तत्थ एगादीया असंखेज्जंता जीवा संजोगेहिं चारेतव्वा । अप्प- बहुं च, वेमाणिया थोवा ठाणागमणथोवत्तातो । भवणवासि पवे० असंखेज्जगुणद्वाणागमणबहुत्तातो । ततो वाणमंतरा । ततो जोतिसिया । पुणरवि ओहियप्प-बहुत्तं, सव्वथोवे मणुस्सया णेरइयए प० असं० देव० प० असं० तिरिक्खजोणि य प० असंखेज्जगुणे । एत्थ य सद्वाणोववत्तीण मग्गिज्जति । इतरेहिंतो चउहिं पवेसो घेप्पति । सद्वाणे संखेज्जे असंखेज्जा वणस्सतीए अणंता । णेरइया-देव-मणुस्स-बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाण सांतरणिरंतरुवट्टमाणोववातो । वणस्सति वज्जेणेंदियेसु सद्वाणेसु अणुसमयमसंखेज्जा परद्वाणेण विरहिज्जंति वि । एवं उवट्टणोववातो भाणितव्वो । संतं एव नारका विद्यमाना एव नारकत्वेन, द्रव्यार्थोऽत्र विवक्षितः पर्यायार्थेन नोद्रव्यार्थादिति । अथवा तदायुष्कपुरस्कृतप्रवणा एवातोऽपि सन्तः । अथवा सत एव गमे मनुष्यादेः एवं सर्वजीवप्रभेदा वक्तव्यास्तीर्थकरप्रणीतागमसाम्योपदर्शनं च वक्तव्यम् ।

पा. नागरसन्देहः

किं भगवतः प्रत्यक्षा एवैते अर्था उत उपदेशादिपूर्वका इति ? तदर्थमाह- क्षपितमोहादिकार्षण जालसमुद्भूतकेवलज्ञानदर्शनप्रकाशो हि भगवान् केवली मितममितं च सर्वतः पश्यति जानाति च । अतो सावबुद्ध इति ॥छा॥

पंचविहो अभिगमो-सचित्तः द्रव्यत्यागः । वस्त्रादीनामव्युत्सर्गः अचित्तानाम् । विनयाव-नतगात्रयष्टिना चक्षुर्विषयेऽजलिप्रग्रहता मनसो एकत्वीकरणता । एषोऽभिगमः । उपासनत्वं मनोवाक्काययोगैः ।

य(ज)मालेर्मिथ्यात्वगमः क्रियमाणोत्सूत्रात् । नवार्थास्तस्मिन् अभिनिष्पन्नानभिनिष्पन्नार्थानव-
बोधात् तन्यमानं णियमते एव कृतत्वं तंतु स्यादकृतं स्यात् कृतं योः कृतः स निष्पन्नः योऽकृतत्वे
निष्ठालक्षणः स अकृतः सूत्रं निश्चयार्थाभिधायि प्रमाणऽस्तु अभिप्रेतनिष्ठार्थाकांक्षी । अन्यत्र
भगवताभिहितमत्यत्र च तदभिप्राय इत्यतो सूत्रार्थोऽनवबोधादेर्किञ्चित्करमेतदिति । तथा च यमालिरेव
केवलिनो ज्ञानादासादयन् भगवता गौतमस्वामिना पृष्टः- किं शाश्वतो लोकः अशाश्वतः ? इति । स च
द्रव्य-पर्यायानन्तनय-दर्शनगोचरमविजानन् तुष्णींभूत इति ॥छ॥

“पुरिसेणं भंते !” पुरिसं घातयन् । तत्रान्यांश्च सूक्ष्मस्थूलानाकुञ्चनप्रसारणादिभिर्घातयति ।
छण्णे तो घाते ति भंगाश्च योज्याः । ऋषिस्तु सर्वप्राणिहिताय प्रवृत्तः विरतः मरणादनन्तरमविरतो
भविष्यति । तस्मात् तेनानन्ता घातिताः । जहा अण्णस्सोवरि अण्णो सो तत्तेय गहणं करेति वणस्सति
जीवाणं । एवं पुढविकाइयादीयणज्जण अणासादिगहणं । किरियातो य तहेव जोएतव्वाओ जहा
संभवन्ति । नवमं सतं सम्मत्तं ॥

किमिणं भंते ! ति दिस ति वच्चति ? । पादीणा पुव्वा । पदीणा अधरा । उदीणा उत्तरा । दाहिणा
य तमा हेड्डा । उवरि विमला । विदिसाओ या एतातो जीवा य अजीवा य । समुता एणेंदियादयोऽणिंदियंता
जोएतव्वा । धम्मत्थिकायादीण तसतण्ह देसप्पदेसा भाणितव्वा । अग्गेयी एणासणीलोगातो अलोगो जाव तहा
विमला अट्टपदेसोवरि चतुर्यगातो आरद्धा अलोगंता, हेड्डिम चतुर्यगातो आरद्धा तमा चउप्पदेसिणी जाव
अलोगंतो । एतासु दिसासु एणेंदिया अत्थि बेंदियादीण देसपदेसा भइतव्वा । जीवपदेसेसु णियमा जत्थ जो
गोपदेसो तत्थासंखेज्जा । संसारिणो अणिंदियो समुघातगतकेवलीभवितव्वो असिद्धो अत्थि चेव ॥

संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स संवृतात्मा प्राणातिपातादिषु अविकल्पितशुभाशुभपरिणामः
सामान्यः सकषायी गृह्यते । भावितात्मा येन ज्ञानक्रियासु स भावितात्मा वीचीति सहभावे संप्रयोगे वा,
संप्रयोगो द्वयोर्भवति । कषायाणां जीवस्य च सम्बन्धः वीची शब्दः वाच्यः । तस्य सकषायस्य यावती
शुभाशुभलक्षणा क्रिया सर्वा सांपरायिककर्मबन्धाय । पंथा तूपलक्षणमात्रं सर्वत्राधार एवं द्रष्टव्यः ।
यस्त्ववीची असंपृक्तकषायः स तु यत्र तत्रस्थः इयापथकर्मबन्धकः । यथाख्यातचारित्राकषायसमनुष्ठानात् ।
अथ सुत्तं रीयति इतरस्तु सकषायत्वात् न यथा सूत्रं रीयति ॥छ॥

आत्मरिद्ध्या सामान्यदेवो चिन्त्यते । इन्द्रस्तु गच्छत्येव संज्ञायात् । समोषितन्यायेन परस्तु यद्यनुजानीते तदंविद्यः असुरादिवैमानिकान्तेषु नेयं । अप्पिड्डितो ण सव्वठाणेसु, समिड्डियो तुल्लं बलेण पमत्ते गच्छेज्ज सव्वेसु पुव्विं विमोहेत्ता तमादिना सव्वट्टाणेसु महिड्डिओ य । अप्पिड्डियमतिक्रमति विमोहेत्ता अविमो० पुव्विं वा पच्छा पदेसे ट्टाणेसु । एवं देवो देवीए देवी देवस्स देवी देवीए, आत अप्पिड्डि समिड्डि महिड्डि विसेसिता भवणवदि आदिसु ॥छ॥१३॥

अणगारेणं पुट्टो गोतमस्सामी । एतप्पभित्तिं अणादिकालदव्वट्टताए त्ति । संदेहे तावत्तीसय त्ति ? भगवं पुट्टो । निच्चया । के सिया तायत्तीस पुव्वभवो ? । अण्णेसिं इंदाणं सामण्णमेत्तं च भणियं । तेत्तीसं च मूलट्टाण त्ति ततो तेत्तीसारे करणादेवीतो सव्वत्थ महिसीतो इंदाणं तहा तासिं परिकरो । तासिं चैव समुदितियाणं विउव्वणलद्धी । तहा लोगपालाण अगमहिसी । तप्परिवारविउव्वणलद्धीतो भाणितव्वातो । उत्तर-दाहिणभवणपति-वाणमंतर तीसवेमाणिताण ॥छ॥१५॥

एगोरूचीण तहेव पयाहिणं सिहरिपव्वयमुत्तरं समस्सिय ॥छ॥ दसमं सतं सम्मत्तं ॥

“उप्पलेणं भते !” उदाहरणी भणति कट्टु उप्पलं भणति । एगपत्तयं जावादिअंकुरअवत्था ताव एक्को । एताए जोणीए दु आदितो असंखेज्जो रासी पविसति । सेसाहिंतो पविसति । असंखेज्जो अप्पिणी समया संखेज्जा पढमेणं णो अवहीरणपविविण्णक्खणावि अवहीरिस्संति, णो च्चैव णं अवहीरित त्ति, गतं । बाहिरदीवसमुद्देसु अब्भहितं उप्पलोवरिगमणं । तेणंगोचरणबंधगा तहा आउवज्जाण आउस्स तत्थे को सिय सो बंधो वा । अहवा अबंधगो । बहुता ते बंधगा वा अबंधगा वा । अहवा दो तत्थेगो बंधतो अण्णे अबंधतो । अहवा अहवो तेसिं एगो अबंधतो सेसा बंधा । अहवो बहवो बंधगा एगो अबंधतो । अहवा बहवो तेसिं अद्धा बंधगा अद्धा अबंधगाण । सव्व पगडिवेदगा । सात असात वेदगत्ते भंगो । एगो सातं वा देज्जा असातं वा । एवं सव्वे भंगा णाणावरणस्स वेयणं पतिकम्मयव्वा । सत्तिकरणमुदीरणं । एगो बहूवा तहा सव्वेसिं कम्माणं । उदयो भोगोवत्था । लेस्सातो कण्हादीयातो चत्तारि संभवति । एगोदि बहुसंभवे मुणेज्जा । एगत्ते ४ बहुत्ते चत्तारि ४। दुयस्सं ६ तत्थ २४ तियसं ४ तत्थ ३२ चउस १६ सव्वे असीति ॥छ॥

मिच्छादिद्वी मिच्छादिद्विणो वा । अण्णाणी काययो० । सागाराणागारेसु अट्टभंगा , सरीर, वण्ण, संठाणं पोगलाणं जहा जीवदव्वं सुद्धमवण्णादि उस्सासो निस्सासो य पज्जत्ता समोहताणं अपज्जत्तसमोहताण णो उस्सास-णिस्सासो अत्थि । एगत्ते ३ बहुत्ते ३ दु ३ तत्थ १२ तियसं १ तत्थट्ट ८ सव्वे छव्वीसं । आहाराणाहारए, आहारादिसु सण्णासु चउसु असीतिं । पुव्वहं कोहादिसु असीति । वेद णपुंसगवेदवत्ते तिसु मूलट्टाणेषु छव्वीसं । सण्णाए असण्णी इंदिएसु एरिसं ॥छा॥

उप्पलमुप्पलत्तेण चेव जहं० अंतोमुहुत्त, उक्कस्सेणं पुढविकालो । अण्ण वणप्फति असंकंता उप्पलजीवो । ततो पुढविं संधरितो । पुणरवि पुढवीतो उप्पलं गतो, गति-आगतिए भवग्गहणेणं ण आउय गहणं जहं० दे० भवग्गहणाणि । एत्थ उववण्णो वेट्टो चेव उ असं० भवग्गहणाणि कालो देसेणं जहण्णा अंतो मु.उक्कस्सेणं पुढविकालो । एवं जाव वाउजीवट्टाणागमणं । सेस वणस्सतीए उक्कसेणाणंतं विसेसो । बेइंदियादिगमणागमणे संखेज्जातिं भवग्गहणाणि । पंचेंदियतिरिय-मणुस्सेसु भवे उक्किट्टं सत्तट्ट काले पुव्वकोडिपुहत्तं । आहारो छ द्विसिं । द्विती जहण्णा अंतोमुहुत्तं, उक्क० दसवाससहस्सा । समुघाता तिण्णि । वेदणा, कसाय, मारणंतिया । मारणंतिएण केति सरीरपदेसे णिच्छुभित्तूण उपसंहारं च कातूण मरंति । केति पक्खिदिट्टंतेणं गच्छंति । उवट्टणा तिरिय-मणुएसु संखाउएसु उप्पलस्स मूलादि सव्वे असकृत् । अनंतसस्समुत्पन्ना सव्वे जीवा । एवं सालुयादि मुणेज्जा ॥छा॥

“कतिविहे भंते ! लोगे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहो । दव्व, खेत्त, काल, भाव । लोगणालीमलिहित्तूण खेत्तलोगं वक्खाणेति पढमं । सो तिहा अहेलोय, खेत्तलोए सो सत्तहा रतणादी । तिरियलोगो-दीव-समुद्दलक्खणेगहा । उड्डलोगो बारसकप्पा । गेवेज्ज-अणुत्तर-तीसिपब्भारा १५।

अहोलोगो तप्पागारो । तिरियलोगो उड्डलोगो सव्वो सुपत्तिट्टागारो । अलोगो झुसिर-गोलग-संठाणो । जहा कीडाछगलगोल-मज्झ-झुसिरं । एवं अलोयातो लोगो समुद्धरितो । सेसयं अलोगस्स रूवं । अ० अहोलोगे खेत्तलोगे पुच्छा, जीवा जीवदेसा, जीवपदेसा, अजीवा अजीवदेसा, अजीवपदेसा । सपुण्णो जीवो । देसो तस्स अवयवो य । देसो तप्परमाणू सव्वे अहोलोगे अत्थि । णवरं अरूवीण देस-पदेसा । एवं ति पदेसा एवं तिरियलोग, खेत्तलोए, उड्डलोए य । अद्धा समयवज्जं लोए सव्वे संति धम्मत्थिकायादीणं संपुन्नदेसत्तं चेवत्थि । पदेसो समुवचरितो सो ण एत्थ संपुण्णो संभवति ।

आकासमसंपुण्णमलोगागासमवेक्खा । तेण देसत्तमेव लोगो मणुय-खेत्त-अद्धा-समतो लोग गहणेण घेप्पति । 'अलोए पुच्छा'-सव्व णिसेहेत्तूण आगास-जीवदव्वदेसे लोगागाससमुद्धिते सो य अगरु अलहुतो अणंतेहिं य तद्देसबंधीहिं अगरु-अलहुयपज्जाएहिं समुवेतो । जं लोगागासं ततातो अवणिज्जति तं च लोगाकासस्स अणंतिमं भागं भागयाए वहति । अहुणा अहेलोगे खेत्तलोगे कप्पदेसे अजीवादतो मग्गिज्जंति ।

खंधा परमाणू य ओगाहति । संपुण्णो जीवो णो ओगाहति । तस्स देसो ओगाहति । जो तत्थो-गाहते सो देसो एगो च्चव । एग जीवं पडुच्च ण तत्थ पुणो अवयवसंभवो कज्जति । एवं बहूणं पि देसा हवंति । तम्मि च्चव पदेसपरमाणू मग्गणाए पुण संसारिजीवाणं लोगप्पमाणसंवत्तण-संवत्ति-पाणणियमा असंखेज्जा जीवपदेस तत्थेक्क जीवम्मि वि बहुत्तं किमुत बहुसु समुग्घातगतसव्वलोगावि समयकालो पदेसो लब्भति । सेसकाले तस्स वि पदेसा च्चव संभवन्ति । तस्स पटवित्थरसंवत्तणाधरणितच्चुण्णदेस पदेसवत् । एसो अत्था भंगएहिं चारेतव्वो । तत्थ सुहुमजीवगोलनितोयजीवा पणिंदिया संति । निरंतरं लोगे जहा पाणीयपलोद्दमानवोसद्धमाणो णिरंतरोवचितो घट्टो, तहा लोगो बेइंदियादीहिं विरहो वि भवति । एगदेसागासम्मि जे जीते नियमा एगिंदियाण बहूण देसा मूलरासीए सो य एगो य बेइंदितो तत्थ एव दो वा बे । एवं एग बहुत्तेण जावणिंदिया एते च्चवप्पदेसमग्गणा । एतेसु बहुवयणं, एगेदियमूलरासीतो आरद्धं देसो णियमा बहुप्पदेसो एगेदियादिसु पंचिंदियंतेसु णेयव्वो । आदिभंगरहितं कज्जति । एगिंदियाण य देसा नियमा । अहवा एगेदियाण पदेसा एगेदियस्स य पदेसे एसो ण वुच्चति । एवं सव्वेसु एगवयणादि रहितो भाणियव्वो । अणिंदियसमुग्घायावगते पदेसे पदेसो संभवति । दे. खं. एगम्मि समुग्घातदंडादिसमयादिसु बहुत्तं । एवं सव्वभंगाणि धम्माधम्माकासाणं देस-पदेसा । अद्धा समया विजये । एवं तिरियलोगखेत्तलोगरुयगातो णव जोयणसताणि हेट्टा, तातो च्चवोवरिं ततो तिरियलोगो उद्धलोए जोतिसियाण जोतणसतातोयरतो णत्थि कालो ते अद्धसतजोतणत्था । एवं सलोगे लोगो तस्स एगो पदेसो मग्गिज्जति । अजीवावगाहादीण सो ह. जहा अलोगखेत्तदेसो अलोगस्स णं सव्वं नत्थि । नवरं एगे अज्जीवे दव्वदेसे लोगसमुदितो हवति । देसो लोगागासं अणंतभागा । अलोगाकासं अणंता भागा दव्वे मग्गिज्जति । दव्वं अ. ख. तिरिय-उद्धलोगअलोगेसु अणंताइं दव्वाइं जीवाजीवविगप्पियाइं । अलोगे आगासम्मि वा तहा णिच्चाणि कालतो पंच वि भावो । रूवीणं वण्णादि अरूवीणं अगरु-लहुय

पञ्जाया अणंता । सव्वड्डाणेसु अलोगे अगासस्स छव्वत्ता मेरुमेरुवत्थयत्थ चउदेव, जंबुद्वीव, दुवार, कुमारि, बलिपिंडखेवा, पडियधरणिगहणड्डा तिप्पमाण चतुदिसिपधावण कुमार जणणा य कुलसत्तवंजण मक्खयासंपत्तिरियलोगबहुता संखेज्जतिभागसेसअसंखेज्जभागयातो जोएयव्व स्ति । लोगप्पमाणअलोगस्साधुणा तहेवड्डेदेवा मेरुमत्थयसमयखेत्तदुवारपक्खेवबलिपिंडगहणगतिविणम्मणा लोगंतट्टिताअसद्भावड्डावणपसारणड्डदिसिदारगवाससहस्साणामंतक्खतगताणंतभागअगताणंतगुणनात् प्रखेत्तखेत्तपरिच्छेदो । ॥छ॥

एगम्मि आगासपदेसे एगिंदियादीणाणिदिंयंताणं पोग्गलाण एगावगाहो अणंताणं कहं परोप्परसंवाए एगत्थ चिद्धति ? एकाकाशदेशे स्थास्यते सावबाधया मूर्तामूर्तस्तथाविचित्रपरिणामात् विषयीभूतनर्तक्यादिद्रव्यचक्षुर्दृष्टिसंघातवत् । गोले द्वाणं सुक्कं एततो वेउवहेसंतो समप्पति । ॥छ॥

सुदंसणा ! चउव्विहे काले । पमाणकाले, अधाउनिव्वत्तिकाले, मरणकाले अद्धाकाले । से किं तं पमाणं ? दिवसप्पमाणकाले य रत्तिपमाणकाले य । प्रमीयतेऽनेन प्रमाणं । क्षण-लवादिना सागरोपमोत्सर्पिण्यवसर्पिणिप्रकल्पेन नारक-तैर्यग्योनि-मनुष्या देवानामायुष्कादिमानं क्रियते । रत्ती चतुधा । दिवसो य चतुधा । तत्थ पोरुसिं पमाणं पुहुत्तेहिं । सा य उक्किड्डा जहण्णा वा । जहण्णिया वि मुहुत्ता । रत्ती-दिवस-पोरिसी वा उक्किड्डा अट्टयं च समुहुत्ता । आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्टारस मुहुत्ते दिवसे भवति । तदा पोरिसी अद्ध पंचम-मुहुत्ता । राती दुवालस मुहुत्ता । तीसे पोरिसी दुवालस मुहुत्ता । अस्सोयपुण्णिमाए समा रत्ती दिवसा । पोसपुण्णिमाए अट्टारस मुहुत्ता । राती बारसउ दिवसो । चेत्तपुण्णिमाए समा वरिसस्स दिवससता तिण्णि छसड्डा । एत्थ ओमरत्ता ॥छ॥ सतेण तेसीतेण जति दिवसेतो मुहुत्तो लभति हाणी वा बुद्धी वा तो दिवस-मासादीहिं किं लभिस्सामि । तेसीतसतहेड्डा दिवड्डो मुहुत्तो तस्स हेड्डा फलं इच्छति । फलगतां तिभागेण उयट्टो एगसट्टी जाया । दोहिं गुणितं सत वावीसं, एणं गुणितो एत्तियो चेव सतवावीसभागो दिवसेणं लद्धो । एवं बुद्धी हाणी । काल-खेत्तदिवसातो 'सूरपण्णत्ति'करणवित्थरणवित्थरभणितातो पेयं ॥छ॥

जयंतीए भगवं पुच्छितो । कह णं भंते ! जीवा गरुयत्तं जीव हव्वमागच्छंति ? सिग्घमा-गच्छंति ? । पाणाति० लहुअत्तं । पाणातिचारवेरमणेणं लहुयत्तं । आउली, परित्त, दीहर हस्स सपक्ख वियक्खणं अट्ट दंडगा ।

भवसिद्धीय पुच्छा पुच्छाए-निर्लोठनाभिप्रायः उत्तरे । भव्यराशेस्सिद्धिर्न तु सर्वभव्या श्येस्यन्ते । भव्याः सिद्धंति । न तु सर्वाः भव्याः तद्राशेरानन्त्यात् । खदिरवनस्पतिवत् । खदिरस्तावदयं वनस्पतिः । एवं भव्या सिद्धयन्ते न तु सर्वा भव्याः । न्योतजीववर्जाना सिद्धा अनन्तगुणा । शेष राशिः सिद्धेभ्योऽनन्तभागः एक न्योतोऽनन्तभागसिद्धराशिरिति । एवं तीए काले एष्येव तथैवेत्येवं संसारभव्यानुच्छेदः । सिद्धयन्ति च भव्याः । बहुधा वा सिद्धान्तानुगत्याय शब्दाभ्यामवलोक्य वाच्यम् । आगाससेढी दिङ्गतो अनाद्यपर्यवसिता परित्राय परिवृत्ते ति स्थौल्यपरिच्छित्तेत्यर्थः । एवं कालादीण्युदाहरणाणि देयानि ॥७॥

सुप्तता निद्रावशता प्राणिनां घात-संरक्षणत्थविशेषात् तद्विशेष इत्येवं सर्वत्र ।

परमाणुपुद्गलेषु उत्पाद-विनाशयोरुत्पाद एव विचित्र उपवर्ण्यते । संघातेनोत्पादः विनाशश्च । विनाशो व्युत्पादौ विनाशश्च विनाशश्च । दो पोगला संहता दुयसंखे भिज्जमाणे दो । एवं जत्थ एकक-दुयग-तियगेहिं भेदं देति । तत्थ थावणे ।

पुव्वं संखेज्जा भंते ! एगततो संखेज्जा एगततो परमाणू इतरातो मेलेतव्वो । जाव दो वि संखेज्जा दो वि पुगला, तत्थ य पढ्मे एगो परमाणू पक्खेतव्वो । संखेज्ज दुपदेस परमाणू जाता । एवं बुद्धीए णेतव्वं । ठाणंतरं संकंतीय तहा असंखेज्जो तत्थ वि तहेवाभित्तावो ठाणंतरसंजोगवट्ठी य अणंते य अणंताभिलावो ॥७॥

एतेसि णं पोगलाणं संजोगविजोगेहिं कुज्जमाणेणं पोगलपरियट्ठा अणंता भवंति । एगो परमाणू दुपदेसिएहिं सव्वेहिं चारिज्जति । तहा तिपदेसिएहिं जावाणंते पदेसिएहिं पच्छाणंतापोगलपरियट्ठा दुपदेसियाणी लब्भंते एगम्मि चेव किं पुण अणंतेसु । तहा खेत्तादिभिन्नासु वा ।

कतिविहे पोगलपरियट्ठे ? सत्तविहे । ओरालियादि । सव्वे पोगला ओरालियत्तेण जया णिस्सेसा परिणामिता भवंति से तं ओरालियपोगलपरियट्ठे । तहा वेउव्वियादीण । आदिट्ठसमइए जीवेण णेरइयठाणादिसु पडुच्च ओहियमग्गणाकालसामण्णे । सव्वे सत्त वि संति । एगत्ते अतीतकाले अणंता सत्त वि पुरेक्खे वा सिज्जस्समाण पडुच्च नत्थि एगो दो संखेज्जा असंखेज्जा अणंता य अभव्वाणं च चउव्वीसा दंडतो ॥७॥

बहुते य अतीते अणंता, तत्थ भव्व त्ति कट्टु, एस्से वि णंता चउव्वीसा दंडतो । सत्तण्ह वि नेरइयस्स तं ठाणं पडुच्च ओरालिया णत्थि । तीताणागता वि देवत्ते वाउ-तिरिय-पंचिंदिय-मणुयत्तेसु जहा संभवं अत्थित्त-णत्थित्ते तीताणागतेसु भयियव्वं । णेरइयस्स ओरालियं चउव्वीसा दंडण्ण मग्गितव्वं । एवं पुहत्ते वि सव्वट्टाणेसु । तहा असुरादीणं । णेरइयाणं एगत्ते सत्त पुहत्ते सत्त ओरालियादिसु । एवं णेरइय भवत्ते एगत्ते सत्त, णेरइय भवत्तेसु पुहत्ते सत्त, सव्वे अट्टावीसं ओहियसहिता एगुणतीसं ॥छ॥

से एकेणं अट्टेणं ओरालियपोग्गल त्ति ?। एतस्स वक्खाणं करेति । एगो एगो अणंताहि उसप्पिणि ओसप्पिणीहिं त्ति वट्टिज्जति । एतस्सऽणंते ओरालियसरीरपोग्गलणिव्वत्तणा कालस्स वेउव्विय सरीरपोग्गलणिव्वत्तिकालस्स य । एवं तेयाकम्म-भासा-मण-आणा-पाणू-पोग्गलपरियट्टण-णिव्वत्तण कालस्स य । कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवे कम्मा पोग्गल णिव्वत्तिकाले । ओरालियादिदव्वगहणाणं कम्मदव्वगहणाणं कम्मदव्वगगणा सव्वोवरिं अणंतवट्टितानि बहुपोग्गला । तहा सव्वजीवट्टाणेसु य कम्मगमत्थितो बहुपोग्गलागासातो णिरंतरं संसारावत्थित्ति पोग्गलागासपक्खेवातो य । सव्वपोग्गलरासी कम्मगजोगपरिणामपरिणतो थोगेण कालेणं परिणामिज्जति । ततोऽणंतगुणेणं कालेणं तेयगपरावट्टो भण्णति । भवग्गहणबहुत्तातो मणो परियट्टो कह णं भवति ? भण्णति । मणस्स थोवेसु ठाणेसु लद्धी । सण्णिपंचेदियं मणपज्जत्ती पारंपरियाएणं बहुकालता । वणस्सति ए य अणंतो कालो । आणापाणुपज्जत्ती वि तप्पज्जत्तस्स भवति । अपज्जत्तगो य तीए जणण-मरमणुभवति बहुकालं । भासा य तसकालो तहा तप्पज्जत्ती य बहुकालो थोवट्टाणा, तेण जति वि तेयगस्स अप्पा पोग्गला तहा वि तेयगं सव्वट्टाणेसु कम्मगमिव अणंतरितपक्खेवातो सिग्घं परियट्टिज्जति । थोगा भाणिरंतरकाल बाल-थविर-छम्मास बहुभोयिवत् । तातो ओरालियपरियट्टो अणंतकालेण, जति वि दव्वगगणा थोगा, तहा वि जम्हा आणापाणो अपज्जत्तिं चव काऊणं ओरालियमेत्तगहणकालेण चेवाणंतवणस्सतीते संचिट्टणा, ततो आणापाणुपोग्गलपरियट्टो, अणंतकालेणं सव्वट्टाणेहिं जम्हा सो अत्थि । जति विवट्टो वग्गणा बहुया तहवि य ट्टाणं थोवं । ततो मणपरियट्टो अणंतकालेणं मण्णिज्जमाणदव्वगगणा बहुत्ताओ भासाहिं चोज्जइ वियतीयापोहमणोवियारो । पंचिंदिय-सण्णीसु बेइंदियादिबहुट्टाणेसु य भासाए तहवि य मणिज्जमाण वि पोग्गला बहवो इतरेहिं [.....] कालेण भासाए सेसट्टाणेसु भवे वेउव्वियं णेरइय-तिरि-एणेदिय-मणुय-देवेहिं भव उत्तरगुणलाभाओ [.....]

आणापाणु-ओरा-वेओ तेयोक्कम्मा-भासा-मणोआणेण [....] मा पोग्गलपरिय [.....] अप्पबहुत्तेण मग्गिज्जंति । तत्थ जे बहुकालणिव्वत्तीए थोगा । ततो पडिलोमाण त सिज्झंति । [.....] ६ णं ७ णं २ णं - णं ३ णं ४ तेण सव्वथोवा वेउव्वियस्स । एवं हेड्डाओ परिय [.....] वेहिं थेवं । दुग्ंधेहिं पंच रसे, ५ सुहुमपरिणामातो चतुप्फासं सति [.....] गंध २ रस ५ फास ४ सेसाई वा ५ जोगं पडुच्च तत्थ ते च्चेव रागादयो सुभनिमित्तं पडिव्वज्जंति । संवरो उदासीणो णिवारणा सुभनिमित्त-भत्ती [.....] गंध २ रस ५ फास ४ सेसाइ वण्ण... । गंध २ रस ५ फासतो अट्ट अमुत्तदव्वाणि । अवण्णा गंध-रस-फासाणि जीवदव्व सा य पज्जया णे [.....] हिया चेव । ओहियसव्वदव्वाणि य जहासंभवं णेज्जा । तथा सव्व पज्जवा । अजीवा पोग्गल-गंध-फासतो अट्ट चतुविहा भइज्जंति । दो सदव्वाण सह [.....] दव्व-पज्जवणिद्देसणं मग्गिज्जति । दव्वं पज्जववियुतं णत्थि कट्टु । अहवा पज्जवणयं दुपव्वोत्तरं दव्वड्डियस्स [....] गब्भवक्कं [....]

जीवस्स विचित्तया णरगादिसु कमतो तथा जगसद्धो पज्जायो । अहवा जगद्वैचित्र्यं कम्म एव स्वभाववादादिनिवर्त्तनार्थोऽयं यत्नः स्वतत्त्वज्ञापनार्थं वा । न च सिद्धेषु वैचित्र्यमकर्मत्वात् ॥छ॥

चंदविमाणं राहुणा निचंचंतरितं आदिच्चतेयो विसेसातो, पण्णरस दिवसकला कलणातो । दूरासण्णखेत्तं वा वीधीतो हेड्डोपरि विस्तरे य संकंतीतो तव्विसेसो । अण्णेसिं राहुदेवगमणागमणं चारयति । चारणरूवेण गहणादिकारणं ॥छ॥

नागो-हस्ती सद्यो वासो दु सरीरो । तातो उव्वट्टित्ता सिज्झंति त्ति कट्टु, तस्सरीरं च पुव्वसंगतिय वाणमंतरपडिभोगा विसेसातो सवंतरं पि हवति । एवं सव्वत्थ ॥१३८॥छ॥

कतिविहाणं देवा ? प्रभविष्णवो वा यो यो वा क्रियानुष्ठायिनो वा सामान्यमार्गणा भव्यो योज्योदेवत्वस्य तदनन्तरं संक्रान्तो देवो भविष्यति । पञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिः मनुष्यो वा । नर-देवा चक्रवर्त्तिनः । धर्मदेवा साधवः संवृत्तात्मानः । देवातिदेवास्तीर्थकराः । भावदेवा भवनपत्यादयः चतुर्विधा उप्पत्ती चिंतिज्जति । दव्वदेवा असंखेज्जवासाउया दिवलोगं चेव गच्छंति । अकम्मभूमगावि । सव्वड्डिसिद्धा सिज्झंति । सेसेहिंतो णरदेवा पढमपुढवी सव्वदेवेहिंतो य; ण सेसेहिंतो धम्म दे० छट्ट, सत्तम पुढवि, तेउ-वाउ-असंखेज्जवासाउए वज्जेहिंतो, देवातिदेवे पुढविवेमाणियदेवेहिंतो सेसेसु । भावदेवा पंचिंदिय-तिरिय-मणुएहिंतो । आउयं जहासंखं ज० अंतोमु० उक्क० तिण्णि पल्लोण सत्तवाससता । ज० उक्क० वास

चउरासीति पुव्वसतसहस्सा । धम्म ज० अंतो० उ० पुव्वकोडिदेसूणा । देवातिदेवस्स ज० बावत्तरि । उक्क० चउरासीपुव्वसतसहस्सा । भावदे० ज० दसवाससहस्सा । उक्क० तेत्तीससागरोवमाइं । विउव्वणा-भाव- देवातिदेवे सत्ती अत्थिकरणं । ततो अणंतर उववत्ती । पु० कंठा । णरदेवो तो अपरिचत्तभोगो णियमा णेरइएसु जंति । धम्मदेवो ण भवति । तिम्हि द्वाणे केच्चिरं होति ? सद्वाणड्डिति कालो-धम्मदेवो । असुभं परिणामं गंतुं पडिआगतो मरति सामतितो जहण्णेणं अंतरं लभित्त्तूण भंति ति । पुणो लभते दससहस्साइं । जा अंतोमुहुत्तमभतियं भगयमेवा अंतप्पितग्गहणगहितं, उक्क० तरुकालो । णरदेवो अवट्टं पोगालपरियट्टं ततो सिज्झिहिति । चक्कवट्ठीत्तं समत्तसहितो णिव्वत्तित्ति जम्हा सेसं कंठं । अप्पबहुं- सव्वत्थोवा नरदेवा । नरदेवा विजयेसु वासुदेवंतरातो संखेज्ज, तित्थंकरा तेसिं सअंतरमेत्तातो धम्मदेवा । ततो संखेज्जगुणा मनुस्सं । संखेज्जत्तातो भवियदव्वदेवा । असंखा मणुय-तिरिय-णिव्वत्तिद्वाणातो । भावदेवातो असंखा सद्वाण बहुत्तातो । देवप्प-बहुं, उवरिमातो हेट्टा अणुत्तरा थोगा । उवरिमगेवेज्जगे संखे०, मज्झिमगे हेट्टिमजावाणतो सहस्सारि तिरिया, ततो असंखेज्जा जे लग्गलगा तेसु संखेज्जा सोहम्मस्स तेहितो भवणवती असंखेज्जा वाणमंतरा असंखेज्जा जोतिसिया असंखेज्जा ।९॥छ॥

कतिविहाणं भंते ! आतायं ? कति भेदाः कति कल्पाः आत्मानो भवन्ति । सामान्य- विशेषविषयो आत्मशब्दः । आत्मेति सामान्यं । दव्वादीति विसेसो अट्टधा । तत्र द्रव्यात्मा निष्कृष्टपुद्गलस्वरूपो निर्दिश्यते । संशुद्धस्फटिकस्थानीयः । कषायपुद्गलोपधानपरिणामसन्नामितः कषायात्मा भवति । उपधानविशेषविषयतामात्मा प्रतिपत्स्यते संसर्गविविधपरिणामात् । अलक्तद्रव्या संसर्गा समुपनीतस्फटिकवत् । कसायकोधादिणो । जोगा वि मण-वय-काया । उवजोगो सागाराणाकारः । णाणं पंचविहं । दंसणं चतुहा । चरित्तं सामायिकादि । वीरियं उट्टाणादि । एतेसिं विवक्खो य जहासंभवं कज्जो ।

अट्ट वि ड्वेत्तूणं पढमं सत्तसु मग्गिज्जति । ते य पढमे णियमवतीचारेहिं ।

दव्वविसयं, कसायविसयं, च णाणूणं णिदिसेज्जा । दव्वोवयोगदंसणा सव्वत्थ दट्टव्वो । कसायाणोवसामगखवगा अंतो जोगस्स सेलेसीतो । णाणं सम्मदिट्टिसु । चरित्तं साहुसु, वीरियं जाव सेलेसीतो । पुव्वं पुव्वं उत्तरेण सह चारिज्जति । आदीए सह चरित्तत्तातो संभवं णेज्जा ।

अप्पबहुं- सव्व थोवा चरित्ता । तातो साधुसु तेसिमिकसमयउक्कस्स पुव्वकोडिसहस्सं पुहत्तं । ततो देसविरता असंखेज्जा । तिरिय-मणुएसु अविरतसम्मदिट्ठिसु चेव संखेज्जगुणा । तहा सिद्धाऽणंतगुणाणि णोकसाया तासु अकसाया अहक्खातोवरिवट्टमाणा समुट्ठिया तेयाणंता, ततो जोगा तातो विसेसकसायेसु । अहक्खातसेलेसिवज्जा सजोगिणो खित्ता तेसु चेव सवीरिया सेलेसिकरणाखित्ता विसेसाधिया । दवियदंसणउवओगा सव्वट्टाणाणुगा ते वीरियरासी गहिता । एत्थ चेव दव्वदंसणो-वओगा । ता सिद्धा खित्ता अणंतगुणरासीए अणंतो भागो विसेसो जातो ॥छा॥

आया भंते ! णाणे, आता सामण्णे अट्टसु । अहवा णाणमण्णाणेसु तत्थ वि से सामण्णं नियमिज्जति ।

णाणं नियमा आता । आया सेसभेदेसु वि अत्थि तेण आता णाणे वा अण्णाणे वा खदिरवणस्पतिवत् । एवं चउव्वीसा दंडएण तु चरेतव्वं । जत्थ जति आतसामण्णभेदपज्जवा संति, तेसु सामण्णमणोण्णभेदगहणेण वभिचरति । णणु भेदा सामण्णं जण्णेक्कोहे दो जीवट्टाणे तत्थ सामण्ण-विसेस नियमो कज्जो । चउवीसा दंडए । एवं दंसणेण सहतो मग्गितव्वो । सामण्णदंसणे परोप्परणियमो भेददंसणे अप्पा भतितव्वो सुत्ते य कंठ । दंसणसामण्णं ।

यो यस्य पदार्थस्य स्वभावस्तस्यात्मा जीवस्य वा अजीवस्य वा । सर्वपदार्थांश्चास्तित्वे सति स्वपर्यायेण आत्मानं प्रतिलभंते । तथैव यदि परेभ्यो व्यावर्तन्ते यदेव स्वभवनं सैव परव्यावृत्तिः या पि परेभ्यो व्यावृत्तिस्तदेव स्वभवनीय पर्यायावेतौ अन्वयव्यतिरेकाभ्यामर्थस्थितिः नरसिंहस्थानीया शाबलोयमर्थः । यत्र भावास्तत्राभावः घटवत्, यत्र भावो नास्ति तत्र भावो नास्ति खपुष्पवत्, परसिद्धं खपुष्पं, न स्वतः शब्दार्थज्ञानव्यतीतत्वात् । पारिशेष्याद् भवनाभवनविधिर्वस्तुन्येवं यो वार्थः वचनगतो विकल्पः सत्ताभावे न्याय-तर्कशब्दप्रवणतया साध्यः ॥छा॥

आया णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी । अण्णा पुच्छा । तस्यां यावन्तो वत्तास्तैरसौ व्यपदेष्टव्यः । तत्रात्मीयद्रव्यपर्यायैः पुद्गल-वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श-संस्थानानन्तप्रभेदैरादिश्यमानासती रत्नप्रभा सैव तन्मता तस्यामेवावधार्यते । यदि नावधार्यते शर्कराप्रभायामपि स्यात्तवेष्यते तेण परस्सादिट्ठे णो आता । अहवा सक्करप्पभपज्जवेहिं मग्गिज्जमाणा सा णत्थि । जति होज्ज सक्करप्रभा चेव सा तस्सरूववत् उभयादेशो जं च रयणप्पभारूवं । जं च सक्करा । एतं पुट्ठी । एकसमयाऽभिन्नकालावबोधायि वा विबोधकवशप्रणीति

तथावस्तुधर्मसंभवाज्जिज्ञास्यमानावबोधार्थं मृग्यते । उभयादेशेन न च रत्नप्रभांशः स शर्करांशश्च । एष सबलीकृतो न हेतुं शक्यते । तत्र द्वितीयावयवसंभवे यद्यस्तित्वावयवेन गृह्येत तत् सन्नियोगविशिष्टत्वात् द्वितीयावयवा भावप्रसंगोपि स्यादतो अस्तित्ववचनाप्रवृत्तिरथ शर्करप्रभावयवावयव-विनिर्देशः स्यात् । तथापि रत्नप्रभादेशेन तत्र रत्नप्रभांशः शर्करांशस्य सद्भावांशाभावो प्राप्नोति । अतोऽर्थसद्भावमभिसमीक्ष्य वक्तव्यः । अवक्तव्यवचनेन च वक्तव्या । शब्दपर्यायेनेत्यतो स्यादवक्त-व्या स्याच्छब्दक्षानेक-धर्मिणोऽ-र्थस्यैकतरधर्मविवक्षासमीप्रयुक्तस्तद्धर्मभवनाभवनं नियामकोऽनुक्तविधि-नियमानेकान्तप्रदर्शकः सर्वत्र विधौ चैकान्तनियमेनावस्तुनो भवानिष्टं प्राप्तयो दृश्यन्ते घटादिष्विव । परमाणौ भंगत्रयं । आत्मेतरउभयादेशेषु द्विप्रदेशे त्रयमस्त्यवशेषं च द्विसंयोगेन त्रयं । आताणाता आनावत्तव्वाणो अवत्तव्वं ॥६॥ त्रिप्रदेशे त्रयः सर्वत्राभिन्नैकद्रव्याणि विवक्षायां । आता णातेण आता णातेहिं आताहिं अणाएण ३ आतावत्तव्वेण तिण्णि ३ । णो आतावत्तव्वे वि तिण्णि ३ एगो अतणो आततदुभएहिं सव्वे १३ । प्राकृते हि द्वि प्रभृति बहुवचनं कृत्वान्यत्र द्विवचनभंगतापि योज्या । चतुर्षु देशे द्विधा स्थाप्यमानो बहुवचनमेव द्विक संयोगे द्वादश, त्रिक संयोगे चत्वारि, सर्वे १९ पंच प्रदेशे त्रिक संयोगेत्यबहुत्ववर्जिते सप्तमेवं चतुः प्रदेशवत् । सर्वे २२ षष्ट्येकदेशे त्रिक संयोगे अष्ट । शेषं पूर्ववत् । सर्वाग्रं २३ । एवं संख्यातानन्तेष्वपि योज्यम् । षट् प्रदेशिकत्वात् । एतानि सिद्धाण्युदाहरणाण्युपात्तानि शेष विषयस्याद्वादशः चोदनायामेकस्मिन्नपि एक द्वि बह्वर्थं द्रव्य-पर्याय-नाम, स्थापना-द्रव्यभाव-नैगम-संग्रह-व्यवहारकृत् सूत्र-शब्द समभिरूढैवंभूता-र्पितानर्पितगुण-पर्याय-प्रतिषेध-सकल-विकलादेशात् पंच-सप्त-नयगतयथाविवक्षितसद्भावांगीकरणविषये स्यात् शब्दस्यार्थो साध्य-हेतु-दृष्टान्तेषु चैकान्तवादः प्रयुक्तेषु भावाभावस्य च तेषु सर्वत्र तत् सद्भावगमनाय प्रयोक्तव्य इत्यन्यथा भावाभावयोरभावयोः एव लौकिकपरीक्ष्य प्रसिद्धदृष्टान्तवद्भाव्यः ॥७॥

रणप्पभाए संखेज्ज वित्थडा । असंखेज्ज वित्थडा परिरया तेसु उवघातो काउलेस्सादिविसेसितो मग्गिज्जति । तहा उवट्ठो 'पण्णत्ती' । वट्ठमाणादिसमया चूंत णेरइया विरहो य । पदाइं ड्वेतूण काउ आदिआइं मग्गेज्जो । कण्हपक्खिया च अवट्ठपोगलोवरिं जेसिं जे सिज्झिस्संति ण वा ? सुक्कपक्खिया अवट्ठपोगलस्स सिज्झिस्संति य । असण्णीपंचेदियतिरिय-गब्भवक्कंतिपज्जत्तगा अमणा णोइंदियविग्गहगती मणपज्जत्तअणंतरे सामण्णं ओघणाणं जीए सभावो विरहो कयादि दो संखेज्जा वा ट्ठणासंखेज्जत्तातो चक्खुदंसणी इत्थि-पुरिस-सोइंदियादिण मण-वइ, एते विग्गहगतीए परिसाडेत्ता गच्छति नरएसु । उवट्ठणाए असण्णीसु ण उववज्जति । विब्भंगणाणं च परिसाडेति । गाहा-

असन्निणो य विब्भंगिणो य उव्वट्टणाए वज्जेजा ।

दोसुवि य चक्खुदंसणी मणवइ तह इंदियाइं च ॥१॥

वेदेजा वा भवणिव्वंति आउय वेदो तिविहो वि पण्णत्तिसु पुव्वमत्थि चेव विसेसो तट्टाणभावी इमो । अणंतरोववण्णगादिपदाणि अणंतरोववण्णगा-पढमसमतो वावातो तदेतरो ओगाहो सरीरस्स आहारदिय चरमो य । पच्छिमसरीरणारगंतो तदेतरो । सव्वपदाणि एगादि असंखेज्जाणि भाणितव्वाणि । णाणत्तं असण्णिणो सिय अत्थि णत्थि । काइए तत्तुल्लाइं णत्थि । कंठाणि । एस चेवत्थो असंखेज्ज वित्थडेसु मग्गिज्जति । असंखेज्जाभिलावेण उव्वट्टणो वि दंस० णाणीसु तित्थंकरादिसंखेज्जत्तं भाणितव्वं । दोच्चाए वि एवं, णरवरं अस्सण्णी तिसु णिसेधेतव्वा । तेयलेस्सा काउ. णीलाओ य चउत्थाए पंकप्पभाए तित्थंकरा णोववज्जंति । तहेतराओ ओहिणाण-दंसणीण उव्वट्टति । नीलालेस्सा पंचमीए । कण्ह-नीला छट्टीए । किण्ह सत्तमीए । इयरे य किण्हा सत्तमीए । नियमा मिच्छद्दिट्ठि होतूण उववात उव्वं करेति । तत्थ गंतो भवति णाणी । उव्वट्टोववाते सम्मामिच्छत्तं नत्थि पण्णत्तीए । अत्थि सिय सव्व पुढवीसु लेस्सातो संकिलिस्समाणाओ सुक्कातो हेट्टा आगमणं विसुज्झमाणा किण्होवरिगमणआदिसंतासु विसुज्झमाणो सन्निलिस्समाणो दो मज्झे दो वि संभवंति । उव्वज्जयजीवपरिणतेसु वा णिरयट्टाणेसु उव्वत्ती सव्वत्थी सव्वत्थ भाणितव्वा ॥छ॥ १३।१।

एसोवत्थो वाणमंतर जोतिस-वेमाणियंतेसु चारेतव्वो । असुर-वंतरेसु आदि लेस्सा चत्तारि । ति-त्थंकरो णोववज्जत्ते । असण्णी उववज्जति । जोतिसिएसु तेउलेस्सा । सोहम्मादिसु तित्थंकरसंभवो सणंकुमारादिणो इत्थिवेदा आणते संखेज्जा उववज्जंति । मणुस्सा पडुच्च सव्वत्थोवोवरि णेज्जा । अणुत्तरेसु सम्मद्दिट्ठी चेव लेस्सातो संकंती असुरादि चारेतव्वा तहेव ॥१३।२।१३।३छ॥

सत्त पुढवीते कातूण सत्तमातो उवरिहुत्तं णिज्जति कालो । पुव्वो महाकालो । अधरो रोरुतोरक्खि महारोरु । उत्तरो मज्झे अप्पत्तिट्टाणो । तेण छट्ट पुढविणरएहिंतो महत्तरवित्थिणो महोवासा । पतिरिक्कतरारेवभूमी बहुत्तातो पवेसो थोवा, आइल्ल आउलं ओममसंपुण्णं अण्णो संपुण्णं । एवं सण्णीए छट्टी असुभतरा, उणाइतरा इतरा धम्मेहिं । तत्थादियंतासु अणंतासु अणंतरधम्मपडिसेहविही । मज्झासु उभया पासा विहि पडिसेहेतव्वा इट्ठी-सुभ-बल-वीरियं ।छ॥

रयणप्पभा पुढवी दोच्चं सकरप्पभं प्रणिधाय प्रतिनिधिः प्रतिविश्वमास्थाय बाहाल्येन महती आसीत् जोतणसत्सहस्सं ।

बत्तीसा अट्टवीसा य वीसं तहेव अट्टारं ।

सोलस अट्टत्तरयं, पुढवीणं होति बाहल्लं ॥१॥

सव्वपज्जंतेसु य खुट्टिया । जेण रज्जुप्पमाणा उवरि-हेट्टापतरपदेस परिवट्ठी भवति । जाव सत्तमा लोगमालिहितूण जाणेत्तव्वा । लोगा हेट्टोवरि दीहयाए चोद्दसरज्जु । तस्सद्धेण सत्त रज्जुतो आयामं, मज्झो सो त रयणप्पभाए घणोदधि-घणवात-अणुवात-हेट्टातोवासंतरं । तस्स असंखेज्जतिभागो ओगाहिता एत्थ लोंगो सत्तरज्जुतो हेट्टा य । उवरिं च लोगमज्झं अहेलोगो रतनप्पभ-खुट्टाग-पतरदुयं ।

अट्टपदेसरुयग-संठाणसंठितातो णव सत्ताणि ओगाहेत्ता भवति । एवं उवरि गंतुं उट्टलोगो । तस्साहो लोगस्स मज्झं रत्तुच्छपंकप्पभ-पुढवि घणोदधि-घणवाततणुवाता वोलेतूणं उवासंतस्स अद्धमतिरिच्चं ओगाहेत्ता भवति ।

उट्टलोय पुच्छा-ब्रह्मलोके विमानरिष्टविमानपत्थडे एत्थायाममज्झं तिरियलोगपुढवि जंबूदीवे मंदर. रतणप्पभपुढविखुट्टागपतरदुय अट्टपदेसरुयगमज्झं भवति । जतो दसदिसि पवत्तणं हवति । पुरत्थिमादीण णाम । कंठा । एत्थं दुवालसपदेसा उदाहरणत्थं आलिहितव्वा । इंदाए किमादिया कोत्त कहो को. कति पदेसा आदी । कति ? उत्तरं च ट्ठंति । कति पदेसा ? सव्वसमुदएण । किं पज्जव-साणा ? कोत्त इति यावत् । को एतीए संठाणे । एते पसिणा आलिहिते सव्वे दट्टव्वा ।

लोगस्संतो अत्थिलोगं पडुच्च पहा वि ताए णत्थि । अंतो तहा मुरगसंठाणसंठित्ता पुव्वुत्तराए पदेस हाणी । तहा दाहिण-पुव्वाए पतरगपदेसे मुरगहेट्टं दिसियंते चतुप्पदेसा दट्टव्वा मज्जे य तुंबं हवति ।

किमिदं भंते ! लोगे त्ति पउच्चति ? । धम्मादी पंच ५ जावति चलणत्थि ता सा धम्मत्थिकाय, दव्वपज्जापज्जायत्ता । ट्ठिती अधम्मे । धम्माधम्म-जीव-पोग्गलट्टाणं भायणं आकासं । अप्पणो य तप्पज्जातो तप्पदेसे य एणेणा वि पुण्णो दोहिं जावाणंतेहिं पोग्गलत्थिकायो । जीवाणं संसारे सव्वभावोवकारी जीवत्थिकायो ।

आभिणिबोहियणाणादीणाणं सपज्जयाणाधारो एगे धम्मत्थिकायपदेसे तप्पदेसेहिं चेव । केवतिएहिं ? जहण्णपदे तिहिं । एगो हेट्ठा उवरि वा पासातो दो पतरबहुमज्झे छद्दिसिं । छहिं उक्कोस पदे । अहमत्थिकायस्स जत्थ तप्पदेसो जहा धम्मत्थिकातो वि तेण जहण्णे चतुहिं उक्को सत्तेहिं । आगासस्स लोयाणो य जहण्ण उक्कोसए सत्त, जीवसुहुमणितोतताणंततं पडुच्चाणंतेहिं पोग्गलत्थिकातो वि अणंता परमाणू दुपदेसिया संखेज्जा असंखेज्जा अणंता कम्मपोग्गल ति कट्टु अणंता । अद्धा समयो मणुस्सखेत्तवत्ती । जे तत्थ ते फुसंति सेसा ण । तक्क, दिणकरगमणसमयमाणपडेक्कदव्वपरिसमंततं समा धायणंता एवमहमत्थिकायपदेसो वि, आगासत्थिकायो लोयालोयवत्ती तेण पुट्टो ण वा लोगवत्तिणा । धम्मत्थिकायेण जहण्णपदे एगेण धम्मत्थिकायेगपदेसेण । अलोयागासेकंतपुट्टो अलोयंततो चेव । दोण्ह वि धम्मत्थिकायाण मज्झे तहा तिण्ह जावुक्कोसपदेस ति । तथा धम्मत्थिकाये सट्टाणे सव्वत्थ छहिं, जीवत्थिकाये सिय लोयालोगं पडुच्च पुट्टेण, तं तहा पोग्गलद्धावि जीवत्थिकायपदेसो धम्मत्थिकायपदेसा....धम्मत्थिकायवण्णवरसंठाणाणंतेहिं पोग्गलत्थिकातो जहा जीवो पुणरवि पुग्गलत्थिकातो दुवादिणा मग्गिज्जति । तत्थ लोगंते दुपदेसितो खंधो, एगपदेसे समोगाढो णयदरिसणं पडुच्च प्रतिद्रव्यावगाहमंगीकृत्याऽभिन्नप्रदेशेऽपि भेदाः द्विप्रदेशस्पर्शनस्तथायं उपरि अधस्ताद्वा । तथापि द्विपुद्गलस्पर्शभेदा देश प्रदेशभेद इत्यतश्चत्वारस्तथा शेषद्वयमकैको स्पृशति परस्परव्यवहितत्वात् । पार्श्वस्थितप्रदेशाः स्पर्शाः उक्कस्सपदे, अवगाढहेट्ठोवरिपासइयाएसु द्विप्रदेशस्पर्शनाद्दशशेषद्वयव्यवहितत्वादेकैकता सर्वे द्वादश । तेधा धम्मत्थिकाये, आगासत्थिकाये, सव्वत्थुक्कस्सउक्कस्स तुल्ला । जीवपोग्गलद्धा जहासंभवमणंता एवं तिणिण पुच्छा । जहण्णपदेसो गुणिताणि पासत्थिय दुरुवाधियाणि उक्कोसपदेसं च गुणा सट्टाणं दो य रूवाणि । सव्वत्थ लक्खणं सामण्णं । एवं अहम्मत्थिकायो वि । आगासमुक्कस्सपदतुल्लं । जीवत्थिकायाणंतेहिं तहा सट्टाणे अद्धासिय जत्थ तत्थऽणंतेहिं । एवं संखेज्जा पुच्छा । तहेव ट्ठाणं दुगुणितं दुरुवहितं उक्कोसेणं पंच गुणं दुरुवहितं । आगासत्थिकाये उक्कोसतुल्लं, जीवपोग्गलट्ठाणं ता संभवेणद्धाए सट्टाणे य सेस दुगुणियं दुरुवहियं जहण्ण उक्कोसेयं चउगुणसंठाणेदुरुवधितता । एवं असंखेज्जयं णेज्जा । अणंत पंच एगपदेसावगाहप्रतिद्रव्यभेदे सत्यनन्ततैव पुद्गलादेश्चलनपुरस्सरतामधिकृत्यानन्ताः प्रदेशाः कल्पन्ते तेन अनन्तकं । जहण्णं द्विगुणं द्विरूपमधिकम् ॥छ ।

६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	२२

नन्वाकाश-धर्माधर्मानां लोका बाह्यानाममनन्त्यं स्वतोस्ति द्रव्यपुद्गलनयप्राधान्यमधिकृत्य-सिद्धमेकेषां । अथवा अनन्तेष्वपि पुद्गले स्वसंख्येया एव प्रदेशा धर्माधर्माकाशानां जघन्योत्कृष्टपदेषु । अथवा अनन्तप्रदेशासत्त्वमार्गेणैव नास्ति । अद्धा समतो धम्माधम्मागासाण सत्तहिं जीवं पोग्गल-सट्ठाणेहिं अणंतेहिं सकलो धम्मत्थिकायो मग्गिज्जति । तत्थ जति अण्णो दुतितो धम्मत्थिकायो होज्ज तप्पदेसेण तस्स फुसणा होज्ज, ण तु सो अत्थि अधम्मत्थिकायप्पदेसेहिं सव्वेहिंतो अवगाहित्तातो तस्स आगासं अलोयवज्जियं फुसति । जीव-पोग्गलद्धाहिं अणंताहिं धम्मत्थिकायतुल्ला समुदएणं पंचवि सट्ठाणे णत्थि फुसणा । परट्ठाणातो धम्मत्थिकायतुल्ला । एगो पदेसो ओगाहणाए मग्गिज्जति । जत्थेक्को धम्मत्थिकायपदेसातोगाढो सट्ठाण सुण्णं । धम्माधम्माकासाणेक्केक्को जीव-पोग्गलाणंता अद्धा संभवेऽणंता तहा अहम्मत्थिकायो वि । अकासत्थिकातो सट्ठाणे सुण्णो । अलोकाकासं पडुच्च णत्थेक्को वि धम्माऽधम्म-जीव-पोग्गलद्धाणं । लोए य पुव्ववण्णियं । जीवत्थिकायप्पदेसो धम्माधम्माकासेहिं एक्केक्केहिं जीव-पोग्गलद्धाहिं अणंताहिं पोग्गलपदेसो धम्माधम्मकासेक्केक्का जीव-पोग्गलद्धाणत्ता पोग्गलत्थिकाय चैव दुय सो दिण्णं ।

जत्थ भंते ! दो पोग्गलत्थिकाया ओगाढा तो एगम्मि वा दोसु वा पदेसेसु ओगाहेज्जा ? धम्माधम्मागासेहिं जीव-पोग्गल दुसमयखेत्ते अणंतेहिं जाव, दस । एवं संखेज्जो एगादिएसु संखेज्जंतेसु तिसु अणंतेहिं भयणाए जीव-पोग्गलद्धेहिं असंखेज्जेसु अणंतेसु य जहासंभवं णेज्जा । जत्थ णं एगे अद्धा समए तत्था धम्माधम्मागासेणेक्को जीव-पोग्गलठाणाणंतासमयखेत्तसंभविणो जत्थ धम्मत्थिकायो सगलो मग्गिज्जति । तत्थ धम्मत्थिकायस्स वा सामण्णेण केवतिया ओगाढा ? णत्थि एक्को वि, संगहितत्तातो । अण्णस्स य असंभवातो । अहम्मागासा असंखेज्जा पदेसा सेसाणंता तिण्णि वि । अधुणा सकलो धम्मत्थिकातो बहूहिं पदेसेहिं सह ओगाहणाए मग्गिज्जति, तत्थ णो धम्मत्थिकायपदेसा । किं कारणं ? तेसिं सकलधम्मत्थिकाया देसगहणातो । अधम्मलोगागाससंखेज्जा जीवपोग्गलअद्धा समयणंता । एवं अहमत्थिकायो सट्ठाणे सुण्णो । दोसु असंखेज्जा तिसु अणंता तहा सव्वे णेज्जा ।

जत्थ णं भंते ! एगे पुढविक्कायओगाढे लोयप्पदेसे जत्थ तत्थ सुहुमा पडुच्च असंखेज्जा । एवं तत्थेव आउ तेउ वाउ वणस्सति अणंतो सुहुमगोलणितो पडुच्च एवं परोप्परं वणस्सती सट्ठाणे अणंतो,

तिसु धम्मादिसु णत्थि अवत्थाणं, आहारपरिणामा संभवातो सुहुमजाला परिणामट्टाणो भाव इव अवगाहो पुण अणंताणं सव्वे ते पोग्गलेसु ट्टिया सरीरादिसु ।

कहि णं भंते ! लोगो बहुसमे बहुस्समः सव्वविग्गहितो सव्वसंखित्तोवट्टितो वावक्कित्तं वा सरीरं जस्सामो सव्वाविग्गहितो रयणप्पभाए दो आगासखुड्डागयतराइं रज्जुमाणणिव्वत्तगाणि लोगमाणणि । जति वि य अण्णत्थपतरा समासंति तहावि एतेसु पओयणं । तं चेव विग्गहकंडगं भण्णति । तत्थ बारसपदेसा समालिहितूणं वि विदिसातो णिव्वत्तिज्जंति, तहा पुव्वादिदिसिसंखेवे एगमेगंके दारयपदेसं हाणीए जोएज्जा । चतुरंतपदेसं एगेगंके दारपया संखेज्जा हाणी । एवं सव्वमिदं एत्थ लेज्जा ॥१३॥४॥छा॥

आया भंते ! भासा ? । आत्मेति जीवः भासा पोग्गलाए भिण्णा चेव जीवदव्वातो । एवं सव्वत्थरथादिंसु स्वस्वामिसंबंधोऽस्ति । पुव्विं भंते ! त्ति, भासावत्तणा पोग्गलकरणकालो तप्परिणामो तद्भावो वट्टमाणपज्जायकालो गहितो । घट इव । पुव्विं भासा भासिज्जति त्ति । तत्थ वि वट्टमाणसमतो चेव । सा य चतुहा ४ । तहामाणो कायसद्दो सव्वभावसामण्णवाची । एवं आया वि काये देसं सदव्वाणि काया भिज्जति त्ति ।

ओरालियादिसरीरगहणमेगा दव्वावचयोवचयजुत्ता तहा वट्टमाणकहणकालो सव्वस्सभेदो पांसुमिड्डिगहणइव ।

मरणं पंचहा-आवीयी य, ओहियायंतिय, बाल, पंडितं । तं वीयीयसद्दो सकलवाची । तस्स पडिसेहो अवीयी य । असकलमरणमिति, जाव तं च पंचहा-दव्व, खेत्त, काल, भावा । दव्वं नेरतियादि ४ । तत्थ आउपोग्गलदव्वाइं घेप्पंति । तं च आऊज्जणुसमयं अणुसमयं हिज्जत्ति । णेरइय दव्वाउयं । एवं तिण्णि वि ताणि चेव दव्वाणि निरए खेत्तविसेसणेण विसेसिज्जंति । तहा ४ कालेण ताणि चेव समयादिणा भवेण भावेण उवसमयादिलक्खणेणं । एवं पंच चतु मुणेज्जाओ वि । अवधिर्मनःपर्याया एगेगो चउहा । जाइं दव्वाइं वट्टमाणसमये णेरतितो अणुभवति तातिं पुणो केत्तिएण कालेण अणंतरं अवधिं कट्टु गेण्हिस्सति ? सो चतुहा णेरइयादि । एवं पंच चउसु चारेतव्वा । 'अंतरियमरणं' अन्त्यचरमरणमित्यर्थः । तच्च मोक्षमाणे भजनीयं, शेषो भव्यादिः पुनर्लिप्स्यते पंच चतुर्द्वा नेयानि । बालं द्वादशमं पूर्वोक्तं । पंडियमरणं दुविहं-सपरिकम्मापरिकम्मं । १३॥८॥छा॥

अणगारो साधु, तस्स परिणामाऊय वि से सब्भावातो द्वाणुप्पत्ती चिंतिज्जति । वरं आरातपरं अन्त्यं प्रधानं वा तत्थ परिणामविसेसे लेसावसातो हेट्टिल्लेसु वा उवरिमेसु वा आऊयबंधो । तत्थ जारिसेसु तहा बंधो तारिसेसु चेव उववज्जति । अह कहंचि तातो पडेज्जा तं द्वाणं विराहेज्जा । ततोऽणंतद्वाणोववाती अणपरिणामसंकंते कम्मसामणलेस्समेव पडियति । उदाहरणं-ओहिण्णाणी साधु-सावग-पडिलाभ परिणाम उवरि उवरि कप्पाओ य णिव्वत्ति । पोग्गलदरिसणतदुवयोगप्पतदब्बादिभायणपलोदृण परिणामहाणी । आऊयक्खयोवयोग इव, तहा भत्तपच्चक्खाए वि । णेरइयाणं विग्गहगती गतीए गहिता णेरतियादिसु मग्गिज्जंति । अणंतरसमयो उववातपढमो वितियादि परंपरो तदुभय णिसिद्धो विग्गहगति परिणामो आऊय परंपरे भाणितव्वं । एवं असुरादिसु आऊं जहा संभवं णेज्जा । उव्वट्टणा तेसिं चेव । मणुय-तिरियेसु एगसमय मणुस्सो अणंतरो वितियादि परंपरो विग्गहगतीतो उभयणिसिद्धो । एवं सव्वेसिं सव्वत्थ जहासंभवं च आउणिव्वत्ती परंपरवट्टणाए ॥१४॥१॥

उम्मत्तो मोहजक्खाइइयाए दढकम्मयत्तणातो विक्कमो मोहो, णेरतियाणं दुविहो वि । तहा सुराणमवियति असुरविसेसातो जायति । एवं उरालियसरीरीणं सेसदेवाण य, सुतादिलक्खणो संभवेण । पज्जुणमेघे कालवरिसीण अकालवरिसी, अहवा पज्जुण्णे कालवासी देवनिकायविसेसे सक्कादेसेण वरिसति, तहा तमुकायो य णेतव्वो ॥१४॥२॥छ॥

ते णं० वयासी एस णं भंते ! पोग्गले दव्वट्टतातो सासयं, पज्जवपरिणामिदव्वं हवति । अतीतकाल इव वट्टमाणागतेसु परिणामरासिफासेतूणं पुणरवि एगगुणफासादिएसु वट्टति । खंधे, तहेव जीवपुव्वकम्मपरिणामातो वा तहापरिणामसंसारसब्भावो वा दुक्खादिअणुभावी मुक्कता एसत्थो ।

परमाणुपोग्गले णं भंते ! दव्वादेसेण खेत्त-काल-भाव-चरिमो अचरिमो ? । तं भावं पुणो फासेहिति ? अचरिमो पुणो आगत्ता तब्भावं तत्थ परमाणू दव्वतो संघातं गंतुं पुणरवि परमाणुत्तं लभिस्सति । तेण णो चरिमो । खेत्तादीहिं सिय, जत्थ खेत्तकेवली समुघातगतो तम्मि चेव परमाणू समोगाढो वि तए संभवखेत्तविसेसेण णोचरिमो अचरिमो । किं कारणं ? सो अणंतरमेव सिज्झिस्सति । ण तस्स पुणो तहा तस्स परिणामो तहाकालो तव्विसेसगो पुव्वण्हादीतो भावो वण्णादीतो एतम्मि चेव समुघाते एत वितिरित्तो अचरिमो ॥१४॥४॥छ॥

णेरइतो विग्गहगती अगणिकायमज्जे णं गच्छमाणो वि णो डज्झति । उववण्णे णत्थि चेवग्गी । असुरा-णेर दुविहा वि, णवरं वीतीवयमाणो वि णो ज्झियाएज्जा । एगिंदियाण गती णत्थि ति ते न गच्छंति । एगे वाउक्कायपरपेरणेसु गच्छंति विराहिज्जंति पंचेंदियादिणो गच्छंति झियायंतियं । सेस देवा-असुर-तुल्ला । दस द्वाणाणिद्धा णेरइयाण-सद्दा रूवा, रसा, गंधा, फासा, गती, द्विती, लावण्णं, जसो - किती - उट्टाण - बल - कम्म - वीरिय - पुरिसकार - परक्कमे । जस्स जति इंदियाणि तस्स सेज्जा सुभासुभविसेसो य, सव्वत्थ देवो महिद्धीतो आत्मव्यतिरिक्तं क्रियां विकुव्वित्तणं लंघनं वा प्लवनं वा शक्नोति कर्तुंगो विकुरुव्विऊणं ॥१४।५॥छ॥

णेरइया सव्वे सव्वपोग्गलजोणीया । विप्परियासो पर्यायन्तरविपर्यासः । अनेकपर्यायान्तर संक्रान्ति वाविचीति सम्पूर्णः । अविचीत्यसम्पूर्णे आहारद्रव्यवर्गणासु णेज्जा ।

जदा सक्कस्स मेहुणेच्छा समुप्पज्जति तदा सुहम्मातो निग्गंतुं जंबूद्वीवप्पमाणं विकुरुव्वति भूमिभागं । तत्थाणीयं दुयं णट्टाणीयं गंधव्वाणीयं च अच्छरातो य तस्सहितो भोगे भुंजति । चेतियखंभो सुधम्माए । तेण ण तत्थ भुंजंति । तहेसाणो वि । सेसा पासादादीण भणितव्वा । सणंकुमारादयो परिचारमेत्तत्थं गच्छंति । समासणिया जहा फासा परिचारं मेत्तं कुव्वंति । जया वि तत्थ चेव । एवं उवरि उवरि परिवारविसेसो प्रविचारविसेसो य । सेसं कंठं । ॥६।छ॥

भगवता गौतमस्वामी केवलप्राप्त्यभिप्रायमभिप्रायं ज्ञात्वाभिहित चिरसंसिद्धोसि मे गोतमा ! चिर संश्लिष्टः, परिचितः, परिसंस्तुतः, अनुवत्ती । त्रिपृष्ठत्वे सारथिः, तथान्तराले दिवि देवलोकेऽन्यत्र च, किं बहुना ? मरणादुत्तरतः आवयोस्तुल्य संसिद्धत्वेनेति वाक्यशेषः । एवमुक्त्वे अतिप्रियमश्रद्धेयमिति कृत्वा यद्यन्योप्येतमर्थं व्याकुर्यात् अनेनाभिप्रायेण ।

‘जहा णं भंते ! एयमट्ठं वयं जाणामो’ तहा अणुत्तरावि ते ममादेश्यन्ते मनोवर्गणाभिरेषोऽभि- प्रायः । ततो भगवानुवाच गौतम ! किं देववचनं ग्राह्यं देवातिदेववचनमिति ? ततो ‘मिथ्या मे दुष्कृत’- मिति । मिच्छादुक्कडं करोति ।

तुल्लतासम्बन्धेन कतिविहे तुल्लये ? तं दव्व, खेत्त, काल, (भव)भाव संठाण तुल्लए । दव्वं परमाणु परमाणुस्स सेसाणो तुल्लो । दुपदेसो दुपदेसस्स सेसाणो तुल्लो । एवं संखेज्जासंखेज्जस्स सेसाणो तुल्ला जावाणंतो । एवं खेत्तमाकाशदेसो एगपदेसागाढो परमाणू खंधो वा खेत्ततुल्लो । सेसा अतुल्लो । एवं जाव असंखेज्जपदेसो गाढो कालतुल्लए एगसमयद्विती पोग्गलेग द्वितीयस्स तु सेस अतुल्ले । एवं जाव असंखेज्ज

समयद्विती भवभावतुल्लए भवं पडुच्च नेरतितो णेरइयस्स एवं तिरियादी । भावो जीवस्स पंचविहो, छव्विहो । सो समाणो असमाणो दव्वाणं वण्णादिकालतो कालस्स सेसो अतुल्लो, संठाणं परिमंडलं परिमंडलस्स सेसमतुल्लं ॥७॥

भत्तपच्चक्खाते णं अणगारे आहारम्मि गिद्धे गढिते किं कारणं ? महावेदणिज्जोदयो, सो तेण वसत्ततो परिणामो हवति ।

जं पि लोवाहारं तं पि ते णिरुक्खित्ता पोगला गेण्हंति । सुतरं पक्खेवाहारं वा अभिलसति । मारणंतियसमुग्घातेण गतो संतो विणियद्वृत्ति । अण्णपरिणामसम्भावातो सव्वद्वसिद्धादेवा लवसत्तमा अणुत्तरोववातियाणं छट्ठभत्तसाधुकम्मक्खवणमेत्ता वेसासाऊआ मता साधू य सव्वातारज्जुतो जो ।७॥

रतण-सक्कराते अंतरं असंखेज्जा जोतणसतसहस्सा । सव्वासिं च परोप्परं सत्तमाए य अलोगस्स य । तहेव रतणाए जोतिसस्स सयसत्तनउआणि । जोतिस-सोधम्माणं असंखेज्जा सतसहस्सा । तहा सव्वेसिं च परोप्परमंतरं । सव्वद्व-ईसीपब्भाराए बारसा । इसीपब्भारा अलोगस्स तसीतलजोतणं उस्सेहं अंगुलेणं ।

एस णं भंते ! रुक्खसालए तस्स पढमजीवो मग्गिज्जति, एवं सव्वतरुसु । पढमा सक्को पुरिस सममारंतो सिं तहा करति वेयणबोहणखलातो छविः शरीरं तं छिन्नति नो दुक्खंकरः ॥१४॥८॥७॥

अगारेणं भावियप्पा अप्पणो कम्मलेसा । जं तं कम्मं तस्स गहणसंतकालं सुहुमं, तातो न जाणति ण पासति, लेस्सा सा चेव जदा तु जीवो सरूवी ससरीरो तस्स कम्मस्स सुहदुक्खोदयोभया जाणति पासति य अप्पणो सरीरं ।

अत्थि णं भंते ! सरूवी ससरीरा तेसिं लेस्साओ ततो कतरे ? ते भण्णति । चंदिम-सूरियविमाण पुढविक्काइयजीवलेस्सातो ओभासंति य ।

‘णेरतियाणं’ अणत्ता णाम अमणोण्णा । जीवेगत्तातो एगा भासा ।

सुरियं तेयणिस्सिण्णमुग्गवमाणं दद्वूणं पुच्छा । सेसुप्पण्णा तत्थ समणो जहाभणितं सम्माणुद्दाइं ॥१४॥

केवली भासते समणो-वयण-कायजोग सामत्था । सिद्धे सव्वे वि णत्थि तेण विधम्मता । तेण जहासंभवं । समणा समणो य जोतेतव्वा ॥१४॥ चोदसमं सतं सम्मत्तं

शतक १५

सावत्थी नगरी । कोट्टुगं चेतियं, हालाहला अजीव कुंभगारी साविया, चउत्थी सपरियातो । गोसालो पासावचेज्जा ॥छ॥ सोणे कलंदे, कणयादे, अच्छिद्दे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे, गोमापुत्तो । अट्टुंगणिमित्तविदु । पुव्वेहितो समतीए णिज्जुहितवंतो गोसालो य सिक्खाविंतो तेहिं ते सत्तम पडिभोगा, तेण छ पण्हाणि वागरेति लाभादीणि । सव्वण्णवादं वदति । अज्जिणे जिणप्पलावी जाव नगरे समासद्दणं । भगवं समोसद्धो । गोतमसामी पविद्धो । सुणेत्ता निग्गतो । परिसाए गोसालउप्पत्ती भगवं कहेति । भद्दा माया । पिता मंखली । सरवणं सण्णिवेसं । गोबहुलमाहणगोसालाए जम्मं । जुवाणो जातो । अप्पणा फलहएणं विहरति । भगवतो बितियवासपरितातो । रायगिहे अंतरवासं वरिसारत्तं करेति । णालंदा बाहिरिया तंतवायसाला । तत्थेव गोसालो मासपारणए, पढमे विजयस्स पंचदिव्वाणि । गोसालो-‘तुमं मम धम्मायरियए’ त्ति, बितीयमासपारणं आणंदस्स । ततिते सुणंदस्स । चउत्थं बाहिरे णिगंतुं कोट्टागसण्णिवेसे संखडीए । बहुलमाहणपारणयं । गोसालो ण पेच्छति । जमडोड्डाणं दाउं सिरमुंडणयं वित्तीसु । ता मिलितो सो । गोसालसहितो पणियभूमीए विहारो सरदकाले । अण्णदा सिद्धत्थपुरातो णगरातो कुम्मग्गामं; तत्थंतरे तिलथंबो । पुच्छा । सत्त पुच्छा । तम्मि चेव उप्पत्ती, ओसरण उप्पाडेणं गोसालेणं वरिसवदलं, जम्म, विसियायणो मुणी, मुणिय जुया सेज्जातरो, कसातितो । णिसिरणंतो (तेओ ले)स्साए भगवतोवयोग । सीतलेस्सा णिसिरणं । खामणं । गोसाल कहणं । भीतो । कह लद्धी लेस्सा ? पुच्छा । कुम्मासं पिंडी- पाणय-चुलुयं, छट्टेण, छम्मासा । कुम्मग्गामातो पडिआगमणं । तिलपुच्छ मुसावाती । सव्वं दिद्धो । एगाए सक्कलीए सत्त पउट्टपरिहारो । परावृत्य वानस्पत्यास्तत्रैव जायन्ते । भगवता कथितमितरसर्वजीवस्तथादृष्टः, पउट्टपरिहारदिट्ठी जातो । ममंतियातो अवक्कंतो तं तवच्चरणं कतं । लद्धी य, पासावच्चिज्जा पुव्ववण्णिया णिमित्तेणं वागरेति । णो जिणे गोसाले । परिसा निग्गता । वादो णो जिणे । आयावणपेढिताए सुणेति । कसातितो हाला करेज्जा । अणंतगुणे य अणगाराणं न वे ततो थेराणं णो च्चेव णं करणया एवं अरहंताणं खंतिखमणं अरहंता भवंति । जावं च णं णिवारेति थेरा अणगारे ताव गोसाले आगते संघे पडिवुडे । अखममाणे, अदूरसामंते ठिच्चा णाहं गोसाले, से मते । एत्थ ससिद्धंतं पण्णवेति । जे अम्हं सिज्झंति ते चउरासीतिं कप्पसतसहस्साइं । सत्त दिव्वे । सत्त संजूहे । सत्त सन्निगब्भे । सत्तपत्तोट्टपरिहारे । पंचकम्मणि । सतसहस्ससट्टिसहस्साइं, छच्चेते तिण्णि य कम्मंसे खवइत्ता ततो पच्छा सिज्झंति । एतस्स माणस्स पुव्व साहेति । सत्त गंगा उत्तरा सत्त भावेतूण भवति । सव्व समुदिताणं मेलते । कंठे । बादरबोंदिकलेवरगणणाए । अण्णं सुहुमा पल्लोवम-सागरोवम

गणणा कुञ्जा । एवं सव्वं पमाणमाऊयं च णेज्जा । संदिद्धत्तातो तस्सिद्धंतस्स ण लिखति । जाव तण्णाहं गोसालो, दुट्ठु तुमं कासवा ! एवं वयसि । गामेल्लय तेण य दिट्ठंतो भगवता । भगवता भणितो-अंगुलियाए लुक्कति । सच्चेव ते छाया । गोसाले कोवो, सव्वाणभूती अणगारा वयंति-परोपमाणं अहिक्खिव, धम्मयारिए कुपिए एगाहच्चं करेति । सुणक्खत्ते ततो परिताविते कोसले । आलोइय पडिक्कंते । पुणरवि भगवता पडिचोदिते । कुपिते सव्वसमुग्घातेण णिसिरिति भगवतो उवरिं, भगवं परितावितो णियत्तिऊण तमेवाणुपविट्ठो । ततो गोसालेणं एस णं तेयएणं अणुपविट्ठे सत्ताहेण मरिस्सति भगवता तुमेव च । अहं सोलसवासे जीवी । हं, आविट्ठो गोसालो । अणेगाइं सुणिओ इव समायरति । मतो अचुत्तकप्पो । मेंढियगामे भगवतो, सीहो अणगारो रोयणं, कपोतयमंसं कुक्कुडवयणीए उवक्खडो । छट्टमासस्स समोसरणं, पुच्छा, सव्वाण सुणक्खत्ताणं देवलोगो । गोसालो देवलोगातो वेयङ्गिरिपादमूले, सतदुवारणगरं, संमुतीराया, भद्दा देवी, महापउमो णामेण देवसेणे विमलवाहणो य, तथा साधुपडिणीतो, उवरज्जणवेसेण्णत्ती, मिच्छा पडिसुणणं विमलस्स अरहातो पयोपदे सुमंगलअणगार, चउणाणी, आयावण, रहतुंडपेल्लण, जातिसरेण मारण, अवे सत्तमगमणं, साधु सव्वड्डिसिद्धगमणं । ततो एगेगा पुढवी, दो दो वारा जलयर, खहयर, आऊ, तेऊ, वाऊ, वणस्सति, बेंइदिय, तेइंदिय, चउरेंदिय जाव दुयक्खरिया दारिया, अण्णिकुमारुप्पत्ती, अणुयवो, विलाभ विराहिय सामण्ण सव्वत्थ, दाहिल्ल देवलोगफासाणं जाव सव्वड्डिसिद्ध, महाविदेह, सुकुल दढपतिण्णाणगार, केवलुप्पत्ती, अप्पणो भवावलयण, साहुसद्दावण, महासद्दकहणं । मा अज्जो ! आयरिय-कुल-गण-संघपडिणीयत्तं काहि धम्मा, जहाहमवट्टुपोगलपरियट्टुअणेगजम्म-मरणकालं, कलीभावभायणे आसि । तथा होसह ति । एतं सोच्चा तत्थत्थेगतिया आलोएस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति ॥१५॥

अत्थि णं भंते ! अहिगरणंसि, जत्थ लोहाणि पिट्टिज्जंति ? बहुलोहसंभारणिप्फण्णा, तस्स मज्झे वाऊकातो । इत खुत्तियादिसंघट्टातो संमुच्छंति, विणस्संति य । पुट्ठो संतो निक्खमंति य ।

कम्मणसरीरसहितो जत्थ इंगाला कज्जति सा इंगालकारी, तत्थ य वाऊकातो अविरति य दुव्वतो तं सव्वंगाणि य पंच किरियं पुट्टाणि । अणंतरितअगणिपाणातिवातातो पुरिस इव जीवो अहिकरणी वि अहिकरणं पि अधिकरणं दव्वं, सरीरं पंचपकारा इंदियाणि तथा बाहिरो परिग्गहो जीवो, जाव संसारी तावाधिकरणी सस्सामिसंबंधेण अभेदोवयारेण वा उदारियादिसु ट्टितो अविरतिं पडुच्चतोदारियादिसु तस्स विरती णत्थि । तथा सहसं दो सहायवाची दो वि पदे एगत्तेण चउवीसा दंडएण णेज्जा ।

आत्मपरोभयाधिकरणिनः अविरति । प्रेषणान्वेषणैः तथात्मपरोभयनिवर्तिताधिकरणाः प्रेषणादेरेव पंचसरीरा पंचिंदिया तिष्णि जोगा, एतेसु साधिकरणता चारेतव्वा । आहारयं पदं पडुच्चाधिकरणं भवति । सेसाणि अविरतिं पडुच्चा ॥१६॥१॥

जरा सरीरवेतणा बंधो मणसो वावारो मानसो समनष्केषु, विगलिंदिएसु जरा, सेसेसु दोवि सक्को ।

उगहो पंचविहो । गोतमे ! जं सक्को भणति तं सच्चं ? भगवं सच्चं, गोतम, एयम्मि चेव किं सम्मावादी मिच्छावादी ? भगवं सम्मावादी । सूक्ष्मकायमपोह्य'हस्तादिमुखे दत्त्वा जीवसंरक्षणार्थं सुहुम भासा(सा)धूणं मुक्कं,

चेतकडा जीवस्स भावाचेतणकडा वा ? अहवा वि ता संचिता रासी कृताः कर्मणोदयः पुद्गलास्तेषां च रासीनां क्षयो भवति । रोग-दुःसय्यातंकादिभिः । सव्वत्थे णेज्जा ॥१६॥२॥छ॥

प्रतिभाप्रतिपन्नगाणगारस्स मज्झगगमणागमणादि णत्थि काउसगादिणा द्वाणं, सेस दिवसं अणुण्णायं । अंसिताणाणुक्कारिसातो । तेसिं छिंदमाणानंतया सुभासुभा सामण्णा कज्जति । धम्मंतराई अणुमोतणं । जति अणुमोयते तस्स वि किरिया कज्जति ॥१६,३

अण्णतिलाततो । सीतकूरभोजी, अंतापंताहारो । एवंतियं कम्मं णेरतितो कण्हं कालेण खवेति ? णो तिण्डे । सो अत्थो जाव दसमभत्तितो साधू वासकोडि णेरतितो ? से केण्डेणं ? केन दृष्टान्तेन एवमुच्यते ? से जहा- केति पुरिसा जुण्णे कोसंबो चिक्कणो सा य गंठियादिविसेसिता परसूयमुंडो, एवं तस्स वीरियकरणहाणीतो छिज्जमाणस्स पसुण्णत्तातो महंतो आयासे, इतरस्स सवीरियकरणकम्म तहाभावातो । अप्पो, एसो दिट्ठंतो ॥१६॥४॥

सक्क पुच्छ- बाहिरपोग्गला किं बहुणां जाव संसारत्थो ताव पोग्गल पच्चयातो किरिया करोति ।

सक्कस्स महासुक्कस्स देवस्स य एरावणस्स य पुव्वभवो कहेतव्वो । कत्तियसेट्ठी गंगदत्तो परिव्वातो त्ति तेण रागदोसेण सक्को परितावितो णेण ॥१६॥५॥छ॥

स्वप्ना अनेकविधा । विपक्षमाणकर्म्मार्कर्मदर्शकाः मोक्षपर्यवसानाः ॥१६॥६॥छ॥

लोयपुच्छा, णिद्देसं भाणितूण पुरच्छिमिल्लचरिमंत पुच्छ य-पुव्वादिसा अलोयं पलिकखडिता उद्धाह-तिरियालोयालोयदंतगपविट्ठणितएगपदेसचरिमसद्दसंगहिता मंथाण विवरणिग्गम इव दट्टव्वा । तीसे पुच्छा,

जीवादीया तस्स जीवा संपुण्णा णत्थि । एगो पदेसो त्ति कट्टु एवमजीवा वि रूविणो संति एगपदेसे वि तट्टाण चउव्विहा वि, खंधादिणो तेत्थ सुहुमा सव्वलोयवत्तिणो पुढवि आउ-तेउ-वाउ-वणस्सतीण । बातरा लोगणालीए अंतो, तत्थ य लब्भंति । आगरिस विग्गहगति विसेसाओ तहाणिंदिया क्वाडसमुग्घातत्थ तत्थ जे जीवदेसा ते णियमा एणिंदियाणं तेसु दंतएसु, एस सव्वत्थचुतभंगो । अहवा एते य बेइंदियस्स य देसो एग दंतयवत्ती आकारिससमुग्घातगतस्स तस्स वा बहुदंतयवंतिणो वा देसा बेइंदियाणं वा बहूणं णियमा देसा एगम्मि वि दंतये पविट्ठा किमुत बहुसु । एवं जाव पंचिंदिया । अणिंदिएसु एगदेसो णत्थि । णियमा क्वाडं करंतो वित्थारो बहुदेस णिप्फंदेति । तेण एगम्मि वि बहुदेसता । तहा बहुसु बहुं चेव । एणिंदियाणं णत्थि । सो य पढम भंगो । एणिंदियाण बहुत्त भंगो ण गणिज्जति । सव्वत्थ संभवातो तत्थ देसे एणिंदिय देसा एणिंदियदेसा य बेतिंदिय देसे य एणिंदिय देसा य बेइंदियस्स देसा । एणिंदिय देसा य बेइंदियाण देसा । एवं बे० ते० चतु० पंच० अणिंदियस्स । पढम वज्जा दो, एणिंदिय देसा य अणिंदियाण देसा य । एणिंदिय देसा य अणिंदियाण देसा । एते भंगा जीवदेसेण पदेसे भण्णति । जत्थ एगो पदेसो जीवस्स तत्थ णियमा असंखेज्जा । सरीरसंवत्तणा संवत्तितस्स सव्वसमुग्घातगतं मोत्तुं तेणेणिंदियाण पदेसा तहा एणिंदियस्स वि । एगदेसे वि बहूपदेसा तहा बहूणं पि बेइंदियाणं । एव जाव पंचिंदियाणं । एगवयणं णत्थि सव्वत्थाणि-दियंताणं । जे अजीवा ते दुविहा । रूवी अरूवी य । ४ अत्थि अरूवित्थ । धम्मादयो संपुण्णा । पुव्व चरिमंते ण संति देसा पदेसा य संति । कालो णत्थि तेणत्थ । जहा पुव्वादिसीतट्टा सव्वतो लोयचरिमंत एगदेसागासादिचरिमदेसातो चत्तारि ।

लोयस्स णं भंते ! उवरि चरिमंते उवरि चरिमंत एगयतरं सदंतगं मग्गिज्जति । तत्थेणिंदिया अणिंदिया य संति । तेसिं देसपदेस बहुता सव्वभंगादी । जे जीवदेसा ते णियमा एणिंदिय देसा य अणिंदिय देसा य । अहवा एणिंदिय देसा अणिंदिय देसा । बेइंदियस्स य देसे । अहवा एणिंदिय देसा अणिंदिय देसा । बेइंदियाण पदेसा । एत्तेगेतरसामत्थातो एग बेइंदिए बहवो देसा ण संति । जति वि दंतया तस्स तहा वि एक्को चेव पतरो । अहवा तारिसो आकारिसो णत्थि । तेण भंग मज्झ भंग विरहितो । एवं जाव पंचिंदिया पदेसेहिं वि एवमेव, णवरं एग बेइंदिए वि बहू पदेसा तेणादी एकवयणं णत्थि ॥५॥ अहवा छव्विह छ णवरं धम्मत्थिकायदेसो एक्को चेव सेतरो पदेसो तस्स बहू संति । तेण कत्तयोदत्तिया एवमधम्माकासा वि । एवं तमतमातो । आगासंतरउगाहिता हेट्टिम चरिम एगतमतरतम्मि । जीवा एणिंदिय देसा । बेइंदियस्स देसे देसा णत्थि एगपतरत्तातो बहूणं देसा संति । तहा चेव पं. अणिंदियस्स देसो देसा णत्थि, बहूणं देसा । एवं मज्झिम जवबहुत्तं मोत्तव्वं । पदेसेहिं एणिंदिय देसा अहवा एणिंदिय देसा य

बेइंदिय देसा य । एगत्तं णत्थि एसो आदिभंगो । एवं बहूणं तहा पंचिंदियंताणं अणिदि० सय अज्जीवा एगत्तण पोहत्तिएहिं उरूवी चतुव्विहा वि । जहा लोगो छद्दिसिं मगियो तहा रतणपुढवी वि मग्गिज्जत्ति । रतणपुढ० पुरत्थिमिल्ले उवरि जहाततविंगाल-हुई महतीए तवियाए उवरि समारोहिता, एवं रयणप्पभा घणोदधिवलयोवरि संठिया । तीसे पुव्वचरिमंतो संठिज्जत्ति । सो य लोयचरिमंत इव दट्टव्वो । तहा चउद्दिसिं पि रयणप्पभपुढवि उवरि । चरिमंत खुड्डाग एगपतर पुच्छा- एगिंदिय देसा णियमा पएसा णियमा अहवा ते य बेइंदियदेसा य, तम्मि चेव पतरे अवयविणो देस-पदेसा हत्थ-पादलक्खणाड्डिता तेण बेइंदिय पदेसा य, तहा बहूणं देसा एवं पंचिंदियाणिंदियंताणं । एतम्मि य पतरे बेइंदियादीणं सट्टाणमत्थि तेण तियभंगो लद्धो पदेसेहिं तहेवादि विरहितो । अज्जीवा सत्तहा । एगत्त पोहत्तिया तिण्णि । अद्धा समयो य रूविणो चतुहा वि । रयणहेट्टिमचरिमंते एगपतरत्तातो बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणमाकरिसगमणसंभवातो य । मज्झिमो बहुवयणभंगो णत्थि । पंचिंदियो सरीरो जाइ त्ति कट्टु तदवयव-हत्थादि एगपतरत्ते वि बहवो संति । तेण तिय भंगो पदेसेसु आदि रहितो अज्जीवेसु अद्धा णत्थि । एगत्त-पोहत्तिया । तहेव जहा रतणप्पभाए तिरियदिसातो सक्कर० वालु पंक धूम तम तमतमा सोहम्मीसाणादिणं जावीसीपब्भारा तहा णेतव्वा । जहा रयणाए, हेट्टिमचरिमंतो तहा वालुयादीणं पुढवीणं सोहम्मादीणं अच्चुतंतादीणं च कप्पाणं भणितव्वं । किं कारणं ? एतेसु ट्टाणेषु देवो चंकमति तेण पंचिंदियेषु तिय भंगो । हेट्टिम गेवेज्जारद्धा जावीसीपब्भारातो विरहे हेट्टातलपतरेसु बेइंदिय-पंचिंदियेषु दो भंगा मज्झ रहिता देसेसु आदि रहिता चेव । अज्जीवा छव्विहा, देसे पदेसे कत्तयोहत्तिया एत्थ भंगो एगिंदियाण देस-पदेसेसु निच्च पडिया । एगिंदियादीणं एगउट्टिया एगस्स । एसो पढमो । तस्सेव वित्तिया पडिया । दुत्तितो बहूणं पडिता । तत्तितो पदेसे एगस्स य पडिया । पढमेगत्तं णत्थि । बहुसु तप्पडिता दो भंगा ।

एगो समतो अभेज्जो तेणं लोगंगोतरपरमाणू, एत्थ य संखेज्जासंखेज्जापदेसपरमाणूणं परोवाहिणा असंखेज्जा पदेसा भवंति । ततो पुणं सव्वेव कालपरमाणू वा संवासति णो वासतीति जाणणेच्छा ।

ये हत्थं पादं वा पसारेति तत्थयणि संभवघातातो पंच किरितो ।

सव्वा गती पोग्गलधम्मत्थिकायबलातो ॥१६॥८॥छ

अट्टमणि-कंचणकाकतो जहाणत्तियातो वण्णरात वा ॥१६॥९॥छा॥

देवाणं नारगाण य बल, लेस्सातो सरीरस्स, भावलेस्सातो छप्पि १६॥११॥छा॥ सोलसमं सत्तं सम्पत्तं ॥

पुरिसे तलमारुभति तम्मि अण्णे य तलजीवा य तलं च मारेति त्ति पंच किरियो । तलणिव्वत्तिणो जीवा संघातपारंपरिणेण संघट्टिज्जमाणो उद्वंति त्ति, कट्टु पंचकिरिया । एवं पडंतम्मि तलं पंच किरियं । जेत तलनिव्वत्तिणो जीवावयवा ते तहेव चतु किरियातो पुरिसा । कोडेषु क्षेप्तुपुरुष वण्णेयं । एवं मूल खंध-तया-साल-पवाल-पत्त-पुप्फ-फल-बीयासु पुरिसा एगारस । एतेसिं एगो पुरिसो सेतंतो अण्णत्थ कम्मं तुरयता पच्चंतंतु मूलादि । सेसो सव्वोवी २ रासी कोति पंच किरितो कोति चतुष्किरितो ।

कति सरीरा ? पंच । कति इंदिया ? पंच । जोगा तिण्णि, ओरालियसरीरं णिवत्तिमाणे जत्ता अचित्तेहिं पोग्गलेहिं तदा ति किरियातो । जया परितावेति पासट्टिय जंतू तदा चतु । उद्वेति पंच । एवं सव्वत्थ सरीरं । जहा णेतव्वं ॥१७॥१॥

महाव्रतधारी सामायिकादिसंयमस्थः सधर्मस्थः देशैकदेशविरतो धर्माधर्मस्थः । अविरतो अधर्मस्थः । एतस्मिन् धर्मे न शक्नोति शयितुमास्थातुं वा तमपुद्गलानां सूक्ष्मपरिणामात् । अर्चिष्विव विरतिः पुनरभावात्मिकाः तस्थः स्वयोगकषायवशात् पुद्गलबंधी न विरते उवसंपज्जित्ताणं विहरति । से जस्स धम्मो वा अधम्मो वा अत्थि जहा दंडी अण्णउत्थिया एवमादिक्खंति । भगवतो वयणमनुवदितुं एग पक्खं दूसेति समणा पंडितसमणोवासगा, देसककदेशविरतीतो बाल-पंडिता । ते पुणं भणंति-जस्स णं एगं जीवे पाणातिवातदंडे अण्णिक्खित्ते सो य अपंडितो । तेण सावयो बाल-पंडितो ण भवति, अपण्डितो चेव । एसो अण्णउत्थियपक्खो । अहं पुण एवमादिक्खामि । जेण एगम्मि वि पाणे अक्खित्ते से मीसे लब्भति । द्विधर्म परिग्रहात् । यद्येकदेशहानिः द्वितीयहानिरपि कथं न भवत्यतो मिश्रः । अण्णउत्थिता अण्णे तोचे अण्णे पदातो, जीवतीति जीवः । नारकस्तैर्यग्योनौ वा प्राणाच्चारयति पर्यायास्तिकवान् । आत्मा सर्वभेदेषु सामान्यानुवर्ती तेन द्रव्यपर्यायोरन्यत्वं विनाशाविनाशाच्छब्दार्थोभयकार्यव्यवहारादिभेदात् घटपटवत् सर्वत्र, उत्तरं-द्रव्यपर्यायांगांगीभावादौ युत्यप्रसिद्धितः । देवो सकर्मकः । न शक्नोत्यरूपी भूत्वाद्यस्तु सिद्धयति सकारणाभावादेव । तथापरिणममानः परिणमते न च मुक्तः पुनः कर्म गृह्णाति कारणाभावादेव, न च मूर्तममूर्तत्वं यात्यमूर्तं वा मूर्तताम् ॥१७॥२॥छ॥

शैलेशितां प्रयत्नोत्तिष्ठयोः निष्प्रकम्प अन्यत्र परयोगात् कश्चित् तमेव सशरीरं समुक्षिप्य नयति 'एजृ कम्पने' एजनाकम्पना पञ्चविधा । द्रव्यैजना चतुर्द्धा-नारकादिका । जीवा पुद्गलसंपृक्तद्रव्यैजना नारकस्य । तस्मिन्नेव क्षेत्रे एजना तथा नारकभवे औदायिकादिभावे नारकाख्ये एवं सर्वत्र चलनात्

पर्यायस्य स्पष्टतरभिधायिनि शरीरेन्द्रियाणि शरीरेन्द्रिययोगेषु तेयानीकायानीय संक्रान्तिवद् रसादिपरिणाम-
जगत्कायस्वभावो संवेगवैराग्यार्थं । संवेगादिपदानां फलं मोक्षः पुष्पं शुभ-नृ-सुरेषु ॥१७॥३॥

प्राणातिपातेन क्रिया क्रियते । सा च जीवप्रदेशैः स्पृष्टा । यद्यपि क्रिया परिस्पन्दो तथापि
तदविरतिं प्रत्ययसम्पादिताः पुद्गलाः सर्वथा जीवप्रदेशैः संस्पृशन्ते स्पर्शो दिग्भिः पूर्ववत् । एवं समयो
कालो देसो खेत्तभागो पदेसो खेत्तस्सेगमणुत्तरो णिच्छयस्स अप्पणा ववहारस्स णिमित्तमवि सुहा वि
इच्छिज्जति । एवं चेव णवमवि ॥४॥छा॥

ईसाणसभा सुधम्मसक्कसभा तुल्ला ? उत्तरतो मेरुमुद्धा भणितव्वा ॥५॥छा॥

रयणप्पभातो सोधम्मोववातो पुढविक्काइयस्स पुच्छा । संपाउणाणं पुद्गलग्रहणं पुद्गलप्राप्तिः ।
(ग्रन्थाग्रं ५०००) यो यत्रोपपद्यते उपपातः तत्र गमनं जन्मनि पुब्बिं संपाउणित्ता अलियगती जीवदेसाणि
छुहितुं सरीरत्ताए पोगले गहेतुं ततो इतरं सव्वहा सरीरं मुयति । सव्वजीवपदेसेऽहिय आहारेति एस सण्हो
भिण्णो कालो ॥६॥

जो पुण सउणी, खेत्तय दिट्ठंतेण गच्छति सो गंतुमाहारेति । सेस समुग्घाया पासंगिका । एवं
जावीसीपब्भाराए दोच्चादीयातो एक्केक्का उवरिहुत्ता तम्हा सोहम्मातो रयणप्पभमादिकातुं जाव सप्पमा ।
तथा ईसाणादिणो ईसीपब्भारासत्तमपुढवि अंता । एवं आउ, तेउ, वाउ, वणस्सतिणो सुहुमबादरादि
सामण्णो । वाउए चत्तारि समुग्घातं । सेसं कंठं ॥ सत्तरसमं सतं सम्मत्तं ॥

जो जेण पत्तपुब्बं भावो सो तेण अपढमो होति । जो जं अपत्तपुब्बो भावंसो तेण पढमो उ ॥१॥

जो जं पाविति ति पुणो भावं, सो तेण अचरिमो होति । अच्चंतवियोगो जस्स जेण सो तेण
चरिमो तु ॥२॥

ओहिंतो जीवपदे । जीवेणं भंते ? ति । जीवो तिसु वि कालेसु जीवभावं ण मुंचति । ण अजीवो
होत्तूणं जीवो होति । ण वा जीवो अजीवो होति । जहा मट्टियापिंडो होत्तूणं घटो होति, घटो कवाले
भवति ण तहा जीवो । णो पढमे अभूते भूते चेव भूते अपढमे णेरइया वि अणेगसो आसि, एत्थ
विच्छेदेण अपढमो मीसं चतुवीसा दंडण्ण णेज्जा जाव वेमाणिया, सिद्धो अहोत्तूणं भवति तेण
अपत्ततब्भावो पढमो ।

जीवाणं भन्ते ! पोह त्ति, तो दव्वड्डाए अपढमा, तहा णेरइयभावो अणेगभावो सो पत्ते त्ति । तेण अपढमा, एवं जाव वेमाणिया । सिद्धत्तमपत्तं पत्तं तेण सिद्धा पढमा । आहारत्तेणं पढमे अविग्गहगति समुघातसेलेसिसिद्धवज्जाहारगा । जीवस्स आहारगत्त पढमं । एवं बहुसो पत्तं । एवं चउवीसा दंडतो हुत्तेण वि सव्वजीवा आहारगत्तेणाणंतसो । तहा णेरइयादी । सिद्धपदे आहारपत्ता संभवातो ण मग्गिज्जति ॥७॥

अणाहारणं भन्ते ! अणाहारगो विग्गह-समुघातसेलेसिसिद्धा । जीवपदेसियकेवलिसमुघात सेलेसिसिद्धा पढमा । सेस जीवा विग्गहगतीए । पढमा णेरइयादि । अपढमा अणाहारगता । सिद्धपदे पढमा पुहुत्ते जीवपदे तेसु चेव सिय णेरइयादिसु । अपढमसिद्धपदे य पढम भवसिद्धिं भवसिद्धियत्तं । जीयत्तं दव्वड्डत्ताए । जीवभव्याभव्यादीनि कृत्वा जीवपदे णेरइयादिसु सव्वत्थेगत्तं पुहुत्तेण अपढमा, तहा अवत्तं । णोभवसिद्धिय णोअभवसिद्धियो सिद्धो । सो तब्भवेण पढमो । एवं एसो भेदेण सिद्धे वि सण्णी सव्वे जीवा अणंतए सो तेणापढमा । तहा असण्णी वि णोसण्णी णोअसण्णी । जीवमणुयसिद्धा एगत्त पुहुत्तेणं अपढमा । सलेसत्वं सलेसेसु चेव मग्गिज्जति । ते य एगत्त-पुहुत्तेण अपढमा अलेस्सेहिं ति । जीवमणुयसिद्धेसु सो य भावो तेण अपत्तपुव्वो पत्तो तेण पढमो एगत्त-पुहुत्तेण वि । सम्मत्तं जेण अलद्धं लद्धं सो पढमो पाढेऊण पुणो पुणो लद्धं अपढमो । एवं णेरतियादिपदेसु सिय सिद्धपदे पढमं । एवं अपुहत्तेण वि सिय जीवादिसु वेमाणियंतेसु सिद्धपदे पढमा । मिच्छत्तं सव्वत्थ जत्थ संभवति तत्थापढमं एगत्त पुहुत्तेण सम्ममिच्छत्तं जेण पढमं पत्तं सो पढमो । जेण फासेतूण पडिपडियं पुणो पत्तं सो अपढमो एगत्त-पुहत्तिया । संजते सामायियादी संजमो जीवमणुस्सेसु संभवति । जेण पढमं लद्धं सो पढमो होतूण असंजयत्तं गतो पुणो पत्तं तस्सापढमं पुहुत्ते पढमा वि संति अपढमा वि, एतेसु पदेसु बहवो तत्थ संति । पडिपडितसंजमा होत्तूणं पुणो लद्धवंतो अस्संजयत्तं । दोसु वि एगत्त-पुहुत्तेसु पढमं । संजतासंजतत्तं देसेक्कदेसताविरती तिरियमणुएसु तं जस्स पढमं सो पढमो । जस्स बि ति लंभो तस्सापढमत्तं पुहुत्ते वि सिय णोसंजता णोअसंजता जीवसिद्धेसु एगत्त-पुहुत्तेण पढमा, भवत्थकेवली संजतमज्जे सकसाय लोभादिकसायंता पढमा दोसु वि कसायाणादिसिद्धे, अकसाती उवसामगखवगा सिय खाइगस्स पढमा कसाइत्तं उवसामगत्थो अवस्सं होतूणं ण होति, ततो य णो भवति तेण पढमो वि, जीव-मणुय-सिद्धपदेसु णि सिद्धा णियमा । पढमा णाणी सामण्णं जीवादिसु जीवपदे जेसु णाणं अलद्धं ते पढमा । जेसिं लद्धं णट्टं लद्धंते अपढमा । तहा णेरइयादिसु वेमाणियंतेसु सिद्धपदे पढमो णियमा एगत्तेण पुहत्तेण

पढमा वि अत्थि पढमा वि जीवादिसु वेमाणियंतेसु सिद्धपदे बहुया वि पढमा । एव णेरइय-तिरिय-मणुय-देवेसु सिद्धे णत्थि अण्णाणंगवं मतिज्ञान जीव-णेरतिय-तिरिय-मणुय-देवेसु तहा सुतमवधि-मनपज्जवा वि एगत्त-पुहत्तेण जीवादिसु सिय पुहुत्ते पढमा वि संति अपढमा वि । एसो विसेसो सिद्धे पुण चतु णाणा संभव एव तेण मग्गिज्जति ॥छ॥ जीवमणुयसिद्धपदेसु केवलणाणं अपत्तपुव्वलद्धं तेण पढमं । अण्णाणं सामण्णं । तहा मतिअण्णाण-सुत-विभंगा जहासंभवं अपढमा अवच्छिदा विच्छेदेण पत्ता सयासीति सामण्णं तिण्णि विसेसा जत्थ संभवन्ति तत्थापढमा । अयोगी मणअजोगी । एवं वयि-कायाऽयोगि त्ति पत्तं, पत्तं तेण पढमो । सो सागराणागारोवयोगो जीवपदे सिय पढमो, सिद्धं दड्डूणं णेरइयादी अपढमा, सिद्धा तब्भावोवयोगेण पढमा । सवेदसामण्णा णपुंसगित्थीणं वेयगा अपढमा, अवेयगा जीव-मणुय-सिद्ध संभाविणो सिद्धा पढमा । उवसामए अपढमो वि लब्भति । सरीरा ओदारियात्तिणा ॥५॥छ॥ पढमापत्तपुव्वमासि त्ति कट्टु आहारयं कस्स ति पढमं कस्सति दुतियादि वि हवति । एत विवक्खो अपत्तो पत्तो त्ति पढमो असरीरित्तं । पंच पज्जत्तीतो तहा पज्जत्तीओ य सव्वजीवेहिं अणेगसो पत्तो त्ति पढमा ते पढमाऽपढमं मग्गितं । चरिमाचरिमं भण्णति । तत्थ गाहा-

जो जं पाविहिति पुणो भावं सो तेण अचरिमो होति ।

अच्चंत वियोगो जस्स जेण(भावेण) सो तेण चरिमो तु ॥छ॥

जीवे णं भंते ! ण कदायि मोच्छति तेणाचरिमो । णेरइयभवं कोति सिज्जस्समाण मोच्छति सो चरिमो । अण्णो पुणोववाती अचरिमो । एवं जाव वेमाणिया सिद्धपदगतो ण मोच्छति तेण चरिमो । पुहुत्ते जीवत्ते जीवत्तं ण मोच्छति तेणासिद्धो तेणाचरिमो । सेस णेरतिया णोचरिमा वि अचरिमा वि । एवं एगत्त पोहत्तिया दंडगा णेया ।

आहारतो सिद्धा सिज्जमाणो अचरिमो सेसो अचरिमो । आहारत्ते जीवे तं जीवत्तणं ण मोच्छत्ति अणाहारया जीवसिद्धपदेसु विच्छेदेणासंसारिया अविच्छेदेण सिद्धा अचरिमा, णेरइयादिणो सिय जे सिज्जन्ति ते चरिमा । सेसा अचरिमा । पुहत्ते चरिमा वि संति । भवसिद्धिया जीवा पदे सियासण्णलद्धिं पडुच्च अणवकंखियविसेस चरिमा वइस्सन्ति भवियत्तं णेरइयादिगता भवसिद्धिया सिय चरिमा सिय अचरिमा, णोभवसिद्धिया सव्वे सिज्जिस्सन्ति त्ति कट्टु पोहत्तिए चरिमा वि अचरिमा वि । अभविया अभवियसभावं ण मुंचन्ति । णोभविया णोअभविया य सिद्धा ण ते तब्भावं मुंचिस्सन्ति तेणाचरिमा । सण्णी असण्णी चरिमा वि । जे तब्भावं मुंचिस्सन्ति अचरिमा वि णो मुच्चिस्सन्ति । णोसण्णी णोअसण्णी ।

जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमा । एते चेव मणुयपदे तप्पज्जयविसेसिया चरिमा । जम्हा ततो सिज्झिस्संति सलेस्स सुक्कलेस्सा ? ते तब्भावमुवजीवंति । उ० व० जीविस्संति य ते अचरिमा जे तदंते वट्टंति ते चरिमा सिज्झमाणा । एवं णेरइयादिसु वि जाणेज्जा । अलेस्सा जीवपदे सिद्धपदे य चरिमा, मणुया तब्भावेणमलेस्सा चरिमा, ततो सिज्झिस्संति ति कट्टु । सम्मदिट्ठी पुच्छा, जेसु सम्मदरिसणं संभवं तेसु मग्गणा । तत्थ जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमा सम्मदिट्ठिणो सव्वदा सिद्धासु अत्थि सम्मत्तं । जेसु य सम्मदिट्ठिसु पत्तंते पडिओ सम्मदिट्ठिणो वि अवट्टपोगलस्स पुणो उक्कोसेण लभिस्संति तेणाचरिमा । सेसपदेसु णेरइयादिसु जे सिज्झिस्संति ते चरिमा । पुणोगामिणो अचरिमा । मिच्छदिट्ठि जे सम्मत्तं लभिस्संति ते चरिमा जे ण ते अचरिमा । सव्वपदेसु संभवतो सम्मामिच्छत्तमविलद्धपडिपडितो पुणो लभिस्संति अचरिमो । जो एकदा लद्धूणं अपडिवादी सो चरिमो एगत्त-पुहुत्तेसु णेज्जा । संजतो सिय चरिमो अपडिपडितो सिज्झति चरिमो पडितो पुणो लब्भति । संजतासंजतो सावगो देसक्कदेसातो पडितलद्धी अचरिमो । ततो साहुत्तायारं परियसिज्झमाणो चरिमो । णोसंजता णोअसंजता तब्भावातो ण पडिस्संति ततो अचरिमा सिद्धा, सकसाया सामण्णकसायभेदेण लोभादयो जे अणंतरं खविस्सति ते चरिमा । जे कसायपरिणामं कातूणं पुणो परिणमिस्संति ते अचरिमा । अकसायिणो उवसंतखीणकसायो य सिद्धपदे अचरिमा । तथा जीवपदे पि जो अकसायी सो पडिऊणं पुणो लभिस्संति ततो अचरिमो । तहा मणुया सिया वि णाणी जीवा चरिमा वि अचरिमा वि । तहा णेरतियभवादिवेमाणियंता सिय । जेसिं चत्तारि णाणा तेसिं कयावि पडेतूणं पुणो लभंति ति अचरिमा । जे अच्चंतं मोच्छित्ति ते चरिमा । केवलणाणिणो तडण्णाणा मोत्तिणो ति अचरिमा । अण्णाणी चरित्तारिणोऽपि जे सम्मत्तं लभिऊणं मुच्चंति ते चरिमा । सेसा अचरिमा । सजोगिणो जो चरिमा सेसा अचरिमा । सजोगीजीवमणुय-सिद्धा मणुयत्ते चरिमा, सेसा अचरिमा । सागाराणागारा तेहिं अविरता सव्वजीवा तेणाचरिमा । एगत्त-पुहुत्ते वि णेरइया जाव वेमाणिया, ते तब्भवपज्जायं पाविस्संति ते अचरिमा, सेसा चरिमा । से सिज्झमाणा सिद्धपदचरिमं तस्सण्णतो णत्थि गमणं सहवेदेण सवेदा जो तं मोच्छित्ति ते चरिमा, ण मोक्खिणो अचरिमा । णेरइयादिसु वेमाणियंतेसु सिय एकत्त-पुहुत्तेण मणुयपदे उवसामगं पडुच्च सिय चरिमाचरिमा य । अवेदगा जीवपदे अचरिमा उस्सग्गेण णियमा अचरिमा । तहा मणुयपदे । उवसामगं पडुच्च सिय चरिमता अवेदगा, जीवपदे अचरिमा । उस्सग्गे णियमा अचरिमा । तहा मणुयपदे सिय उवसामगखवगविसेसं पडुच्च सिद्धपदे अचरिमा णियमा । णेरतियादिसु एगत्त-पुहुत्ते सिय पज्जायं पप्प सरीरिणो ओदारियभेदेण य जीवपदादिसु सव्वत्थं सिय पज्जत्तीओ अपज्जत्तीतो य सव्वपदेसु एगत्तेण पुहुत्तेण य सिद्धवज्जाओ सिय ॥१८॥१॥छ

इंदपुव्वभवो कत्तियो सेट्टी । गंगदत्तो जुण्णसेट्टी । कत्तियस्स सुतं । चोदसपुव्वाणि, परियातो वारस वासाणि य मासिया संल्लेहणा । तदणंतरं महाविदेहे सिञ्जिस्सति ॥१८॥३॥छ॥

पुढवी-आउ-वणस्सतिणा सलेस्सा मणुयेहिं चव ज्जंति ।

संखेवतो अणगारस्स सिञ्जमाणस्स कार्यमाणादिपुद्गला सूक्ष्मा अन्त्या निर्जरा । आजवंजवी भावप्रमुक्तिर्भाव्या विस्तारप्रसृता लोकव्यापिनो भवंति । आणत्तं । अणुत्तरं णाणत्तं । स जाती परजाति भेदे । उत्तमं न्यूनत्वं तुच्छत्वं रूक्षता सम्मदिट्ठी सुच्चावि एगत्तीए जाणति । णेरतियायिणो अणाभोगणेव्वत्तणाए गेण्हंति ।

आ आभोएण णो मण्णस्सोउवउत्तो णाणी मणोऽवहिं केवली जानाति । बंधो, दव्व-भाव दव्व बंधो २ -पयोग-वीससा । वीससा बंधो सादी, अणादी । पयोगो सिढिल-धणित गतो दव्वबंधो । भाव बंधो मूलपगडी, उत्तरपगडी । एवं णेरइयादीणं जीवाणं पावे कम्मे कडे कज्जति कज्जिस्सति । तेण कालि एतेसिं विसेसो अत्थि । अत्थि जहा इसुस्स पढमसमयधणुहत्थणिगतस्स बितियादिसु आगासदेसकालेसु वेगहाणी विसेसो । तहा कम्मस्स वि भूत-भाव-भविस्स तिव्व-मंदपरिणामविसेसातो विसेसो ।

णेरइय पोगलाहारो एण्यकालो, तेषां प्रथमं तावद् भक्तमिवसंशोधयित्वा असंखेयास्खल स्थानीयान् भागान्नः प्रीड्यग्रस्संति । तत्रापि रसादिनेव स्तोकान् वैक्रियशरीरत्वेन परिणमयन्ति । निर्जरयन्त्यनंतभागान् मूत्रादिनेव न तेषु शक्यते स्थातुं सूक्ष्मत्वात् तेषां प्रदीपार्चिष्विति ॥१८॥३॥छ॥

अह भंते ! पाणातिवातवेरमणादयो उद्दिट्ठाजीव-जीवा स्वपरतो भोगाभोगोपग्रहतया संभविनो संभविन इति पुच्छा, यत्र प्राथमिकास्ते उपग्राहका पश्चिमान् सूक्ष्मनियोगान् ।

युग्ममिति गणितसमयनिष्पण्णा सण्णा ते य चत्तारि, तं कड, दावर, तेयोग, कलिओगे य । इच्छए रासी तस्स भागहारो चउक्कतो कालेण अवहीरमाणस्स सेसं चत्तारि वा तिण्णि वा दो वा एगो वा जुहु दिट्ठा एते भवंति सो य रासी तण्णामतो होति । एत्थ दिट्ठीवादे जीवाजीव-पोगल-धम्माधम्मागासगुण-पज्जयामविज्जन्ति तेसिं च रासीणं तण्णामता हवति । णेरइया उक्कस्स जेता बहू उववज्जंति थोवाणि ताणि फिडंति । सेसं कंठं ॥

वणस्सतीणं जहण्ण-उक्किट्ठेसु णेवावहिज्जंति चउक्कय भागहारणं तेण चउण्हपदाणेक्कमवि णत्थि पवेसे निग्गमं पडुच्च य ट्ठाणेहिंतो चत्तारि पडित्ता तहा सिद्धा वि अण्णं भत्तिकातूणं पवेसो चतुसु वि ।

जावतियाणं भंते ! वरं अंधगवण्हिणो, तेउक्काइया जीवा किं अंतोमुहुत्ताउया ? बहवे । अह उक्किट्टाउया तिरातिदियाणि आउ । तत्थंतो मुहुताउ बहवे । एसो अत्थो । अंधुया वृक्षाः तस्स अंधगो वह्नि अंधगवह्नि । अंधगवह्निस्स अग्गिस्स, अग्गिस्स परा बहवो जीवा । जे य वरा थोवाउया । जे उक्किट्टपराउया ते थोगा । वर सद्धो आसण्णे । परसद्धो बहुत्ते । परो वट्टति । एत्थ बहुत्ते दट्टव्वो हंता, जे वरा तोरिल्ला ते बहवो परा तीहाउया थोवा ॥१८॥४॥छ॥

सम्मद्विडी णेरतियो अप्पकम्मतरातो मिच्छदंसणकिरिया विरहातो इतरस्स तदारेण कम्मवट्टी । एवं सव्वत्थ णेरतिय-तिरिय बद्धाउस्स छम्मासावसेसस्स वेदणं । णेरइयाउयं तिरिक्खाउयं संतं दुण्हासुरकुमाराण मिच्छद्विडी तस्संवत्तणिज्जं । आउयकम्मपभावेण दूसियमसंपुण्णमितरस्स तु सुभातो जहाभिट्ठं विगुव्वणादि ॥१८॥५॥छ॥

गुडादिसु ववहारो ववहरितव्वबलेण जहाति ण मिच्छयि णिच्छयो जं तत्थ परमत्थं तमणुसरति । परमाण्वादिट्टित्तिप्रदेशिकस्स्कन्धादिभावितं । परमाण्वा दु फासे सीते णिद्धे वा, सीते लुक्खे वा, णिद्धे उसिणे वा, लुक्खे उसिणे वा । एवं संखेज्जा जाव ताव सीत उसिण णिद्ध लुक्खा । जे य सुहमाणंता पादरेसु पंचधा जावट्ठं । एत्थ य उवमा बातरे सुक्कक्खडमेव अगुरु अलहुया तित्तिरे सुहुमपरमाणू संति । मीसेसु पंचिंदिणो एतेसु चारेतव्वा ॥१८॥६॥छ॥

सरीरमेव परिग्रहः । सरीरोवधितहाकम्ममहापरिग्रहो, जहासंभवं जोएज्जा ।

प्रणिधानं प्रकर्षेण मनसादिनिधानं स्थापनं तेषामेव सुप्रवृत्ति-दुःप्रणिधानं । जहासंभवं णेज्जा ।

अण्णमण्णं सद्धावेति अवि उप्पडो उत्पन्ना कहा आसी । तेहिं धम्मत्थिकायादयो उदिट्टा । सावगवयणं, 'अज्जो'त्ति, आमंतणं, जहेव भगवता एते भणिया तहेव । जति तुब्भेहिं अब्भुवगतो अज्जं । जहेव कार्याः कर्तव्या यदि तथैव क्रियन्ते अभ्युपगम्यन्ते करोतेरेनेकार्थत्वात् तो सच्चं, अथान्यथा । ततो मिथ्या एवमुक्तेः प्रत्यूचुः । यदि न जानीते किं भवां श्रावकः, तत्र मंडुकेन छद्मस्थः प्रत्यक्षविषयाभ्यामतीतत्वेऽपि वस्तुस्थापनोदाहरणान्यूपत्तानि वायुकायादीनि कंठानि । एवं धम्मादयो भविष्यन्ति । तत् सम्यगभिधाने भागवतानुशिष्टः । विगुर्वणायामन्तराले स एव जीवः कर्मणः तैजस-शरीरव्याप्त्यावतिष्ठते । असुराणां पूर्वदाता, अशक्तपुरुषवदेवानां च तृणाद्यपि । तथा कर्मपरिणामात् अशक्तकाष्ठप्रहरणप्रणेतृ पुरुषवत् ।

रूयगवरद्वीपा से संखेज्जतिमोयमणुपरियट्ठंति ण ततो परं केवलमेगदिसं जाति दिवंतरातीणं । अण्णतरं ताणं पोग्गला तस्संवणिज्जा सुभपरिणामतीत्र-मन्दादिविशेषोत्तरस्येते उत्कृष्टाः पज्जायुए

सहचरितवेदणिज्जा अणिहत्ता ते वाणमंतरा वरिसेण नियमा अणंतभागखंडाणि कातूण पढममणंतगं वरिसेण खवेति । एवं समरजोएण णेज्जा । भक्षभक्षिताहारवत् घृतपानाहारबंधोवरि उवरि ॥१८॥७॥छ॥

पुरतो अगतो दुहतो गंतुं समं ठिच्चा सव्वतो अवलोयणं । पच्छतो वा अवलोयणं, दुहतो अकसाइस्स इरियावहिता ततो उवउत्तो गच्छति अबंधतो चेव ॥छ॥ नैव सत्वोपघाताय वर्त्तामहे योग-गुप्ति प्रचारात् । हिताभिप्रवृत्तमात्रयत्या क्रियावत् । छउमत्थे परमाणुपोग्गलं चउभंगो जाणति पासति । जो ण जाणेज्जा पासति । पढं(मे) जाणे पासति । पढमे केवली । बितीए सुतणाणी । सुण्णा ततितो । चउत्थो मिच्छादिट्ठी । एवं जावाणंतपदेसिए जोएतव्वं ।

आहोहितो ओधियब्भंतरे परमाबोधितो अंतोमुहत्तकेवलणाणुपत्तीं पाविउकामो एतेसिं विसयं णिरुवेज्जा । जं समयं जाणति णो तं समयं पासति । दरिसण-णाणभेदो ॥१८॥८॥छ॥

भव्यो योग्यानन्तरं तत्रोत्पत्तिमनुभविष्यति । मृत्पिण्डो घटस्यैव, यो यत्रोत्पत्स्यते नारकादिषु स योग्यः अंतोमुहत्ताऊयं णेरतियत्तं बंधति । उक्कस्सेण पूर्वको० तिरियमणुया । इतो सव्वेसिमंतोमुहुत्तं जहण्णं भ. अरस्स तिणिण पलितोवमा । उत्तरकु. एवं जाव सोहम्मो । सेसा जतो गच्छंति, तदा पू. पुढविक्कातितो ईसाणदव्वदेवो उववज्जति । आउ-तरुसु वि । एवं ते० वा० बि ति-चउरिदियाणं । पुव्वकोडि आऊया पंचिंदितो अहे सत्तमतो । तेत्तीस सागरोवम मणुयस्स सव्वड्डसिद्धे देवा दव्वं उक्कस्सेण ॥१८॥९॥छ॥

अचिन्त्यवैक्रियलब्धितथास्वाभाव्यादनगारः क्षुरधारादिषु विशेषत् । परमाणुफुडो णाम मज्जे वूढो सवायुना व्याप्तः न वायुस्तेन गृहप्रविष्टपुरुषवत् । जाव असंखेज्जो अणंतो ण कयावि वायुरपि व्याप्येत । तथारूपमवलोक्य वक्तव्यम् । मुक्तकद्रव्यान्येव गन्धवन्ति अंति रत्नप्रभादिषु ।

सोमिलपसिणा-जत्तो भवतो यत्नोवयः य इति सोत्रो धातुर्मिश्रणार्थो वायुः । अव्वाबाहं बाधु लोत्ने । न बाधा मे अव्याबाधं । प्रगताः अस्त्रवः यस्य स प्रासुकः । कया एतेषां पदानां यावद्भूतः सोमिलस्योक्तार्थः । सरिसवया-मास । कुलत्था सामण्णं सिद्धत्थाठिया । वेदंतरे जहा भूता विवेकाभिहिता एगत्वादयश्च । प्रस्ताः जीवद्रव्यार्थमधिकृत्य एकोऽहं, तदेव द्रव्यं धर्मद्वयावृत्तिनिबंधनं ज्ञान-दर्शन प्रतिष्टमित्यर्थमित्यतो द्विरूपोऽहं । जीवद्रव्यासंख्येयप्रदेशरूपताऽप्रच्युतेरक्षयोऽहं तदेव द्रव्यं धर्मद्वयावृत्तिनिबंधनं तैरेव न व्ययंगतो नह्येकीनान्येष्वपि जीव द्रव्यार्थेन वा अव्ययः । २। एव मेऽभिरधस्थितमव्ययगतिनिवृत्त इत्यर्थः । 'युजिर्'योगे "युजं समाधौ" योजनं योगः । उप सामिप्ये सामीप्येन योगः उपयोग आदिसमासः । समा शब्दार्थः । जीवद्रव्यं ज्ञान-दर्शनद्वितियस्वभाव-

मुत्पादनविगमध्रौव्यव्यावर्ति सदोपयोगं परिणामि सर्वद्रव्यपर्यायप्रधानो-पसर्जनभवनभुवनातिक्रांताविर्भावतिरोभूतिस्थानप्रचितधर्मानं-तगोचरसमाहितपदार्थ-युगयुगपदत्रिकालभेदाभेदप्रवृत्तिक्रमसमाध्यासित-संसर्गसर्वनयगोचरसुविशुद्धा यद्वर्ति । स्याद्वादानुवादानुसृति-वस्तुसंग्रहस्तुप्रतिष्ठितघटादिमत्पदार्थ-परिच्छेद्यतामधिकृत्योपयोगविश्वपरिणाम प्रभवप्रतिद्रव्यविज्ञप्तिबलसाम्या-द्वचासादनैकोऽहं । ॥छ॥ अद्वारसमं सतं समत्तं ॥छ॥

लेसुद्देसतो चत्तारि वा पंचमाण णिव्वत्ते त्ति संघातं गंतुं ण य आहारादिमागातेहिं । चतु ले० क० एवं कंठं । जाव जं आहारेति तं तेसिं विज्जति । चिङ्ग चयने । शरीरादिना पुद्गलोपचयः जमपत्तं न तं विज्जति । इंदियादिणा चिण्णे वा से 'उद्दाति' जं तं चिण्णं आहारितं तस्स जो परिणामितो अल्पेभ्यो उद्दाति णस्सति विणस्सति णिज्जरीज्जतीति । जाव सेसो पहाणो । रसो इंदियादिणा परिणमति विज्जति जहा खलो तेल्लं ति घसी तथा ते तेसिं पहाणता पोग्गलपारंपरण दड्ढ्वा । असंचेति तं ईहा पोहा सामत्थेण मनसा आहारादिप्राणातिपाते समीपस्थिता ख्याप्यन्ते । उवक्खाइज्जंते तत्थ ड्ढिता इति जाव जेसिं च जीवाणं ते प्राणा व्यपरोपयन्ति । तज्जातियपुढविकाइयादीणं तेसिं पि णेव परिसण्णाता, जहा-एतेहिं अम्हेहिं मारिज्जामो । अमणत्तातो मारणंतियसमुग्घातो पदेसनिच्छुब्भणेण य अनिच्छुब्भणेण य तवेसिं दो वि, एवं जाव वाऊणं विसेसो सव्वत्थ, कंठो । वणस्सतिकाइया संहणं ते णियमाणंता, एतेसिं णं पुढविकाइयाणं पुढविकाइया सुहु० बात. एक्केक्को अपज्ज(त्त)पज्जतो द्विविधो । एक्केक्को जहण्णतोगाहणो उक्कासोगाहणो य कज्जंति । उवरि पुढवि ततो सुहुमबातरा हेड्ढा अपज्जत्त-पज्जत्ता य हेड्ढा । एवं एतेण कमेण कायव्वा । जाव वाउक्काइया । वणस्सती दुविहो-साधारणसरीर-पत्तेयेहिं । साहारणो सुहुमो णियोयं बातरणितोयं च । सेसं तहेव चउक्कय वि गयं । सुहुमणितोय बातरणितोय पत्तेयसरीरा एकादश । एते चेव अपज्जत्त-पज्जत्त दुयएण बावीसं । ते चेव पाडेक्क जहण्णुक्कस्स य भेदेण चतुचत्तालीसं । अप्पबहुमग्गणुच्चारणा कुज्जा । तत्थ जहण्णोगाहणा जो पढमसमयो विवत्तिठाणो परियसरीरपोग्गलगाही । उक्कस्से जाव पज्जत्तिमेक समएणं ण पावति । एत्थंतरे असंखेज्जा समया अजहण्णुक्कसंतरं । सव्वथोवा सुहुमणियोयस्स अपज्जत्तस्स जहण्णा उगाहणा । एवं वाउ-तेआ-आउ-पुढवीणं । सुहुमापज्जत्तज-हण्णोगाहणातो असंखेज्ज वड्ढिताया । एवं समचउक्कवग्गादी भणितो । वातर च(उ)क्कवग्गादी असंखेज्ज वड्ढितो वाउक्काइया पज्जत्त जहण्णोगाहणादी पुढविकाइयंत भाणिऊणं पत्तेयसरीर-बातरणिओयाणं जहण्णो पज्जत्तबातरातो तुल्लातो असंखेज्जगुणातो दो वि । अहुणा सुहुमतिगं भाणितव्वं । तत्थ वणस्सती

चेवादीसुहुमं च चउक्कवग्गादी भणितो बातरचउक्कवग्गादी असंखेज्जवड्ढितो वाउक्काइया पज्जत्तजहण्णोगाहणादी पुढवीकायंतं भाणिऊणं पत्तेयसरीरबातराणियोयाणं जहण्णापज्जत्ता बातरातो तुल्लतो असंखगुणातो दो वि । अहुणा सुहुमतिगं भाणितव्वं । तत्थ वणस्सती चेवादी सुहुमणितोतो तस्स पज्जत्तस्स जहण्णा असंखगुणा । तस्सेव जो अपज्जत्ततो तस्सुक्कोसा विसेसाहिया । एवं मज्झो असंखातो दो विसेसाहितातो पूरिज्जंति । वाउ तेउ आउ पुढवीणं । बातरणिगोतस्स वाउ आदी । बादरवाउक्काइयस्स अपज्जत्तस्स जहण्णा असंखगुणा तदपज्जत्तस्स विसेसाहिया । तप्पज्जत्तमुक्कोसा विसेसाधिया । एवं ति वाउ वणस्सतीणं जाव पुढविक्काइतो । ततो बातरणितोतो लग्गति । ततो पत्तेयवणस्सतिसरीरतियं असंखेज्जगुणवड्ढियं भाणितव्वं । तहा वि सरीरत्तातो एत्थ चेव पुणो लक्खणमप्प-बहुएण भण्णति । एतेसि णं पु० वणस्सतिकाए सव्वसुहुमतरा, एता से सुहुमणितोतो पज्जत्ता जहण्णोगाहणं पप्प एवं जेसिं जेसिं मग्गिज्जति तेसिं तहेव णेज्जा । सव्वेसिं बातर पुच्छा । वणस्सती बादरेतराए पत्तेयसरीरी पज्जत्तुक्कोसो पाहण्णं पप्प तस्समाण विपरीतं पुढवि आदि वायुअंतं । बातरलक्खणं सुहुमेण बातरेण गतं ।

केमहालए णं भंते ! पुच्छा । जं तमादिलक्खणथोवंतरं तमसंखेज्जगुणा वड्ढितं तमेवाणुसरति । अनंताणं वणस्सतिजीवाणं सुहुमापज्जत्तजहण्णादीणि । ततो संखेज्जवत्तिणं जावतिया सरीरा से एगे वाउ सरीरे एवमेतेण कमेण असंखेज्जाभिलावेणं सुहुमा, सव्वेसिं भाणिऊणं ततो बातरवाउसरीरादिणो पुणो असंखेज्जविड्ढियंता णेया । जाव पुढवीति ।छा।

एक्कवीसं वारा सुहुमपेसणि-पिट्ट करेतव्वं । कमेण आलिद्धे जो उवरि हेट्टाणे आलिद्धे एवं सव्वत्थ । केसिं चि विसंघातिता सरीरा केसिं चि णो । तेऊणं बातरा थोवा सुहुमाणं, आउयं ति-रातिदियं । ततो उवरि उवरि विसेसो अणंतो वणस्सती ॥१९॥३॥

आश्रवति कर्म ये, एवं सव्वजीवेहिं भणितव्वं । भंगा संगहेणिमा वा वि-तिएण तु णेरइया होंति । चउत्थेण सुरगणा तव्वेउरालसरीरा पुण सव्वेहिं पदेहिं भणितव्वा ॥१९॥४॥छा।

चरमा जहण्ण ठितिया । तहेवासुहकम्मसंभवो वड्ढितो हीणो वा । असुरकुमाराणं जहा आउयवड्ढी तहा सुभो वेयविसेसातो, हाणीएण बहुसुभाणि दो वेदणा । अभोगपुब्बिया इतरा अणिंदा ॥१९॥५॥

निर्वर्तनम् निर्वृत्तिः । कार्यलक्षणानां पदार्थानां कर्तृकरणसंप्रदानापादानाधिकरण-कारक-ग्राम-संघट्ट-क्रियाफललक्षणा । अथवा स्थानं यद्यस्य स्यान्ननिर्वृत्तिस्तस्य जीवादिषु नेया । क्रियते यत् तत् करणं कर्त्यर्थे क्रियते वा येन तत् करणम् । तदेवार्थं अन्यार्थं नियुज्यमानं करणं भवति । करोत्यनेकार्थवृत्ति

त्वाभ्यां कृतः शैल्याद्या । कतिविहे करणे पण्णत्ते ? कंठाणि ॥१९॥६॥

बेइंदियाणं साहारण पुच्छा । णिसेहेतव्वा । तहेव अण्णे पुव्वकोडिआहारो उवक्खाणं तत्र प्रत्याख्यातं । तत्र व्यवस्थानं । एवं द्वीन्द्रियादीनां पञ्चेन्द्रियपर्यवसानानां सामान्य-विशेषस्थितिः । कंठा । समविशेषा ॥२०॥१॥

अधोलोकोतिरिक्तमर्द्धलोकस्य । समुच्छ्रायेन वैपुल्येन च रत्नप्रभां नवयोजनशतान्यवगाह्याधोलोको-
लोकार्द्धं रत्नप्रभावकाशस्यासंखेयतिभागमवगाह्य तथाधः सप्तरज्ज्वः । तथा धर्मास्तिकायोऽप्येतेनाक्रान्त
एवमधर्मास्तिकायोऽपि अभिवचनं एकस्याद्वितीयस्याभिमुख्येन वचनं वाचकं अभिवचनं पर्यायवचनमिति
याव हेत्वर्थो पारिभाषिकं वा धर्मास्तिकायादीनां योज्यम् । कंठचम् ॥२०॥२॥

गब्भवक्कममाणे कम्मयतेयय सहितो तेयपोगला वण्णादिजुत्ता । २०।३।२०।४।छ।

परमाणुपोगलवण्णादिपुच्छा । एगो परमाणू अणिदिट्टविसेसो सिय कालतो पंचवण्णसंभवी, दु
गंधसंभवी, चतुफाससंभवी । सीतो णिद्धो वा लुक्खो वा उसिणो णिद्धो वा लुक्खो वा । जो सीत-फास
परिणतो सो उसिणो ण भवति । इतरेसु दोसु संभवति । एवं उण्हा वि । तेण परमाणू वण्ण ५, गंध २, र.
५ फास ४ । दुपदेसे पुच्छा । तत्थ जति दो ति एगवण्णपरिणता ततो जहा परमाणू, पंचवण्णो तथा अह
भिण्णवण्णातो कालगो एगो, एगो नीलगो । एवं कालगममुयंतेणं जाव सुक्कल्लो एगो तथा णीलममुयंतेण
सुक्किलंतो । एवं जाव हालेद् सुक्किल्लो । एवं दस दुग संजोगा । गंधातो सुब्धि वा अहवा एगो सुरभी, एगो
असुरभी । तिण्णि गंधभेदा, रसे वण्णे जहा ५ दुय संजोगा १० फासे य भेदे । जहा परमाणुस्स चत्तारि सीतो
णिद्धो वा लुक्खो वा उसिणो णिद्धो वा लुक्खो वा ४ सो चेव दुपदेसो वि फासंते सव्वो सीतल
परिणतो । तस्सेव एगो निद्धो दुतितो लुक्खो । एगो भंगो । एवं उसिणो । सव्वो तदेकदेसो णिद्धो दुतितो
लुक्खो बितितो एवं सव्वो णिद्धो । तदेगदेसो सीतो दुतितो उसिणो । एवं लुक्खो, सव्वो देसो, उसिणो देसो
सीतो, जो जस्स विवक्खो सो मुच्चति । सेस दु तं दुपदेसभेदेण घेप्पति ४ । तत्थ सो चेव
चतुफासो । एत्थ एगो सीतो णिद्धो य । एगो उसिणो लुक्खो य एगो भंगो । सव्वे णव ९ जाया दुपदेसा ।
तिपदेस पुच्छा । अभेदवण्णपरिणते ५ । दुय भेदेण कालए य, णीलए य । अहवा कालए य, णीलगा य ।
दो भेदपरिणता एत्थ णीलओ पडिति । अहवा कालगा दो । एत्थ कालगो पडिति, णीलतो एक्को । एवमादिमं
दुय संजोगे तिण्णिभंगा । एत्थ य दुय संयोगा दस । एक्केक्को तिण्णि भंगा । तीसं भंगा दुय संजोगा दस । तिय
संजोगे वि दस । एगेगे दुगसंचारे पढम कालयंगुट्टमुयंतेणं छ पदेसिणीए तिण्णि मज्झिमाए एक्को । सव्वे

भगवतीचूर्णिः

दस । गंधे एगत्ते दो । अहवा सुब्धि-दुब्धि एगो । अण्णत्थ पज्जायाण एगो पडति । जाता तिण्णि स सव्वे पंच । जहा वण्णे तहा रसे फासे चत्तारि एगत्ते परमाणु तुल्ला, ति फासपरिणमे सव्वे सीतो । एगत्ते परमाणु तुल्ला, ति फासपरिणमे सव्वे सीते । एगो णिद्धो एगो दुपदेसो । अभेदेण लुक्ख परिणतो १। अहवा सव्वे सीते एगे णिद्धे दो लुक्खाभेदपरिणतो तेण चउत्थी पडति । अहवा सव्वे सीते दो भेदेण णिद्धपरिणता, ततिता पडति एगो लुक्खो ३। एवं उसिणे णिद्धलुक्खातो उब्भा बितिते लुक्खा पडति । ततिया ततिए णिद्धा पडति बितिया ३। एवं णिद्ध-लुक्खा वि चारेतव्वा । एक्केक्क छ तिण्णि सव्वे बारस १२। जति चउफासे देसे उसिणे एगत्थ दो परमाणू अभेदेण । तच्चेव दो देसा णिद्धलुक्खेसु संचरंति एगो अभेदत्थो देसे सीते उसीणे णिद्धे लुक्खे पढमो भंगो । लुक्खे दो भेदेण तत्थ अंता पडति २। ततिए णिद्धे दो तत्थ ततिया पडति ३। तहा मज्झिमाते पडिताते एगो कालंगुलिए बितियो पडंति मज्झिम तदनंतरातो पडंति ३। तहा आदिल्ला पडति । तहा पडियाए चव पज्जाएण अतिण्णातो पडंति । दो समुदिता तिन्नि सव्व चतुफासा ९। सव्वे तिपदेस फासा पंचवीसं २५ । चतुष्पदेसे एत्थं भाणिरुणं एगवण्णपरिणमे जहा परमाणू पंचसु द्वाणेषु, एगतरम्मि ५ । जति विवण्णपज्जातीतो दस दुग संजोगा होंति एगो चतुभंगो । चत्तालीसं भंगा । तिक्खणपज्जाए तिण्णि ठाणाणि । एगो एगो कमेण पडति । चत्तारि भंगा एग तिग संजोगे संजोगा दस सव्वे चत्तालिसं भंगा ४०, चउवण्णपज्जाए एगंतरियगमणेण पंचठाणाणि । तत्तिया चव भंगा ५ । सव्व चतुष्पदेसवण्णपरिणामरासी ९० । गंधे सुब्धि वा दुब्धि वा । सुरभि-दुब्धिगंधा वा । सुरभिगंधा दुब्धिगंधा वा सुरभिगंधा दुब्धिगंधा छभंगा । रसा जहा वण्णा । चतुपदेसो फासेहिं मग्गिज्जति । तत्थ पढमो दुफासेहिं मग्गिज्जति । तत्थ पढमो दुफासेण सो य । जहा परमाणू सीतलो णिद्धो वा लुक्खे वा उसिणो वा णिद्धो वा, लुक्खो (ए)त्थ ४ ति फासत्ते सीतपज्जाती सव्वो चतुपदेसो देसो णिद्धो देसो लुक्खो १। अहवा सव्वो सीतो देसो णिद्धो, देसा लुक्खा । अहवा सव्वो सीतो देसो णिद्धो देसो लुक्खो ३ । अहवा सव्वो सीतो देसा णिद्धा देसा लुक्खा ४ । एवं उसिणे चतुभंगो ४ । एवं णिद्धो सव्वो सीत उसिणेहिं समं चउभंगं ४ । एवं णिद्धो सव्वो सीत उसिणेहिं समं चउभंगो ४ । एवं सव्व लुक्खे चतुभंगो ४। सव्वे ति फासत्ते सोलस भंगा १६। चतुपदेसस्स चतुफासे मग्गणा । चत्तारि पोग्गला दोसु सव्व चतुभंगो ति कट्टु चतुसु अंगुलीसु सोलस भंगा १६, सव्व चतुपदेसफाससंखा छत्तीसं ३६ । एतेय अणंतो जाव सुहुमपरिणतो ताव सामण्णबादरे मग्गिस्सामो । उवरि वण्ण पुरं काउं पंचय दसो वण्णेषुं चव मग्गिज्जंति । गंध-फासेहिं णत्थि चतुपदेसातो विसेसो पुच्छ, भाणितूणं एगवण्णत्ते पंच संभवो ५, दुवण्णत्ते जह चतुष्पदेसो दस संजोगा चतुभंगिया भंगा ४०, ति पज्जाए एगो उस्सासु १। बितितो अंतपडिता, ततिय

पडिता, चतुर्थे दो अंतातो पंचमे आदी पडति । छट्टे आदी अंता य । सत्तमे आइल्लातो दो तिसु ट्वाणेषु पं(च)ण्हं दो पडंति । तत्थ बहुतं कट्टु संजोगा दस एगोगो सत्त भंगो । एत्थ सत्तरि ७० चतुवण्णत्ते एगेगं पाडेतेहिं पंच भंगा ५ । एगम्मि संजोगा पंच संजोगा भंगा पंचवीसं २५ । पंच पदेसा पंचवण्णत्ते पंचसु पंच ट्वाणाणि रुद्धाणि । एगो भंगो सव्वो पंच पदेसरासी । सतमेग चत्तालं १४१ रसेसु एवं चेव । छप्पदेसे पुच्छा-एगत्ते ५, दुवण्णत्ते ४० तिवण्णत्ते संपुण्णो । तिय भंगो तिसु ट्वाणेषु दो दो कट्टु दस संजोगा अट्टट्ट संगिता तेणासीतिं ८० । चतुवण्णपरिणामे चउसु ट्वाणेषु दो दो पडंति तेणेक्कारस भंगा । एक संजोगे संजोगा पंच चतुष्कगा भंगा ५५ । पंचवण्णपरिणामे सव्वमकंत एगो अतिरित्तो सो कमेण पाडेति । संजोगो एको भंगा छ ६ । सव्वत्थ पदेसभंगा रासी छासीतं सतं १८६ । एवं रसे वि गंध-फासा जा जहा चतुपदेसस्स, सत्त पदेसिए पुच्छा । एगत्ते ५, दुवण्णत्ते ४०, तिवण्णत्ते असीतिं ८० । चतु वण्णत्ते चतुसु ट्वाणेषु एगा ण पडति, तिण्णि पडंति । तेण पण्णरसभंगा । संजोगा पंच । पंचरासीयं पंचसत्तरि ७५, पंचवण्णत्ते एगेहिं संजोगा दोहिं दोहिं पडंतीहिं सोलस भंगा १६ । एत्थ सव्वगं दो सताणि सोलसुत्तराणि २१६ । एवं रसावि । गंध-फासा पुव्वा इव अट्टपदेसेसु एगवण्णे य दुवण्णे ४० तिवण्णे असीतिं ८०, चतुवण्णे-एग चतुक्को भंगा सव्वे पडंति । पंच चतुक्क संजोगा, एत्थं असीति भंगा ८०, पंचवण्णसव्ववण्णठाणा णिरुब्भित्थणं तिण्णि रूवाणि समहियाणि तेसु तिण्णि पडंति । छव्वीसं भंगा एगो संजोगो । १।२।६॥छा। सव्वगं दो सताणि एकत्तीसाणि २३१, णव पदेसे एगत्ते पंच ५, दुय संजोगे ४०, तिगे ८०, चतुक्के वि असी ८०, पंच संजोगो तत्थ णिरुंभित्ता चत्तारि रूवाणि समुच्चरंति । तेसु चत्तारि पडंति । तेणेक्को पच्छिमाण पडति । सव्वे भंगा एकत्तीसं ३१, एतस्स सव्वभंगगं दो सताणि छत्तीसाणि २३६, दसपदेसे एगत्ते ५, दु४०, ति ८० चतुष्क ८०, पंचए वि ३२ पंच वि पडंति देस भावाणि । जओ सव्वगं दो सताणि सत्ततीसाणि २३७, एवं जहा दसपदेसे वण्ण-गंध-रस-फासा भणिता । तहा संखेज्जपदेसिए वि असंखेज्जपदे(से) वि असंखेज्जदेसिए वि तहा जाव सुहुमपरिणामपरिणतो अणंतपदेसितो खंधो । ता एतो ते चेव भाणितव्वा । तहा अणंतपदेसितो खंधो । बादरपरिणामपज्जत्ती भवति । तस्स वण्ण-गंध-रसेहिं पुव्विल्लेहिं अविसेसो अतिरित्ता फासा भवंति । ते य भण्णंति । आदीए चेव तेण कक्खडो मउतो वा फासो पडिवज्जितव्वो । तथा गुरुतो लहुतो वा फासो पडिवज्जितव्वो । तथा गरुतो लहुतो वा फासो सीत-उसिण-णिद्धा य पुव्वभणिता, जति चतुफासे पढमजहण्णसंखाउ वणस्सति एत्थ य कक्खड-गरुत-सीता णिद्धा अंगुलीसु वुड्डीए उड्ढा ठविज्जंति । जे पुणं एतेसिं विवक्खाए पडितासु दट्टव्वा । एवं चतुसु सविवक्खासु संपुण्णो खंधो चतुष्फासपरिणतो सोलसभंगा लब्भंति ।

अतिष्णंगुली दो भंगा । एते सीता पड्डिताए उसिणे वि दो । एते चत्तारि गरुणं लहुएणं पि चत्तारि, अट्ट एते कक्खडेणं । मउतेणं पि अट्ट । सव्वे सोलस । अह पंच फासपरिणतो, ततो अंतिल्लो सविवक्खो जातो । णिद्धो लुक्खो य । आदिल्ला तिण्णि । संपुण्णा तेणेत्थ पंचसु ठाणेसु बत्तीसं जाया । एग बहुवयण देसभेदेण मग्गिज्जमाणा एसो णिद्धो भेदो गतो । सीतो सभेदो अंते ठितो णिद्धो सकलो । सीतट्टाणो सव्वकक्खड सव्वगरुय सव्वणिद्धदेसं सीतदेसं उसीण एत्थ वि बत्तीसं ३२,। तहा गरुओ देसभिण्णो अंतो सव्वकक्खड सव्वणिद्धदेस सीतदेस उसिणे बत्तीसं ३२ । अधुणा सव्वगरुय सव्व सीत सव्वणिद्धदेस कक्खडदेस मउय एते वि बत्तीसं ३२ । सव्वगं सतं अट्टावीसं १२८ । पंच फासे छ फासे मग्गिज्जति । एत्थ सव्वो कक्खडो सव्वो गरुतो देसो सीतो देसो उसिणो देसो णिद्धो देसो लुक्खो दुग संजोगो अतिष्णो देसेहिं डितो । एत्थ चउसट्टी भंगाणं ६४ । णिद्धो स देसो अंतडितो चेव । सीतो णिग्गतो चेव गरुतो पविट्टो । देस भेदेण सिद्धसमीवे । बितिया ६४ । एवं कक्खडो पविट्टो । गरुतो सट्टाणे । सव्वो गरुतो, सव्वो सीतो । देसो कक्खडो, देसो णिद्धो ततिया ६४ । एवं निद्धो भूतो सीत गु. दु.गु.संजोगो । अंते देसभिण्णो, सव्वणिद्ध, देस गुरु, देस सीते । एत्थ चतुसट्टी चउत्थी ६४ । तहा सीत-कक्खड दुग संजोगो सव्वे गरुए, सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे सीते, देसे उसिणे । एत्थ पंचमा चउसट्टी ६४। तहा गरुग कक्खडदुग संजोगो । सव्वे सीते सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे गरुए, देसे लहुए; सट्टी चउसट्टी ६४ । सव्वलगं तिण्णि सताणि चतुरसीताणि छ। फासे अहुणा सत्तफासे एत्थ आदिठाणं सकलं, सेसा देस भिन्ना । सव्वे कक्खडे, देसे गरुए, देसे लहुए देसे सीते, देसे उसिणे, देसे णिद्धे देसे लुक्खे । एत्थ भंगाण अट्टावीस सतं । तहा गरुतो आदीए सगलो सव्वे गरुए देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे सीते, देसे उसिणे, देसे णिद्धे, देसे लुक्खे । एत्थ वि बितियं अट्टावीससतं १२८ । पुणो कक्खडे ततिय ट्टाणे सीतं अवणेतुं ठविज्जति । सीतो य आदिसकलट्टाणे सव्वे सीते, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे कक्खडे, देसे मउए, देसे णिद्धे, देसे लुक्खे, ततियं सतमट्टावीसं १२८ । तहा चउत्थो कक्खडो अंते ठायति । णिद्धो य सकलो आदीए सव्वे णिद्धे, देसे गरुए, देसे लहुए, देसे सीते, देसे उसिणे, देसे कक्खडे, देसे मउए एवं चउत्थं सतमट्टावीसं १२८ । सव्वगं पंचसताणि बारसुत्तराणि ५१२ । जति अट्टफासे अट्टंगुलीतो पुट्टीए ठवेतूणं वामहत्थंगुट्टगातो भंगा आरब्भंति । सो अंतो लुक्खो तम्मि उट्टिए एगो बितितो पडितो । बीयं वेलीए वा दो । सव्वे चत्ता एवं दुगुणं । अणंता अणंतरं जाव बितित हत्थस्स मज्झिमंगुली अट्टमा आदि कक्खडत्ते ववत्था वि ता ताव दो भंगसताणि छप्पणाणि अट्टाफासा जाताणि । ॥२५६॥

कतिविहे भंते ! परमाणू ? । परमो पसोयणू य परमाणू । सो य चउव्विहो । चतुसु ठाणेसु हवति । दव्वपरमाणूखंधो दो वारा छेदेणं छिज्जमाणो जावाणो च्छेत्तुं सक्कति सो दव्वपरमाणू । एवं आगास-खेत्तलोगस्स छिज्जति तत्थ खेत्तपरमाणू । कालपरमाणू-तीताणागतवट्टमाणद्धा दो धारा छेदणं छिज्जति तत्थ जो अणू सो कालपरमाणू । भावपरमाणू-‘भुविर्भवन्नं भावः । पुद्गलाः यस्मात् भावात् परिणमंति स भावः’ तस्स तहेव च्छेदो कज्जति । सो य चतुव्विहो-वण्ण, गंध, रस, फासभेदेण । तत्थ वण्ण परमाणू-एगवण्ण दुवण्ण तिवण्णो जाव संखेज्जासंखेज्जाणंतं लक्खणो जो छिज्जमाणो दो भेदं ण देति सो वण्णपरमाणू । एवं गंधादी परमाणवो वि णेया ॥६॥

एत्थ य जे एते चतुपदेसादिखंधेसु चत्तारि फासा भणिज्जंति ते कहं ? गाहातो, वीसतिमसतुद्देसे ।

बेइंदिय १ मागासे २ पाणवहे ३ उवचए ८ य परमाणू ।

अंतर ६ बंधे ७ भूमी ८ चारण ९ सोवक्कमा जीवा १०॥१॥

चतुपदेसादि ए चतुप्फासे एणं बहुवयणमीसा वितियादीया कहं भंगा ? देसो देसावसता, दव्व-खेत्तवसतो विवक्खाए संघात-भेद-तदुभयभावाओ वा वयणकाले विसतिमसतुद्देश इति सुत्तठाणोवलक्खणं । चतुपदेसो आदी । जेसिं खंधाणं ते चतुपदेसादिया ते चतुफासा भणिता । तेसु भंगा एगवयेणणं बहुवयणेणं च । मीसा एगम्मि वि बहुवयणं बहुए वि लुक्खा भिन्नखेत्ता दोहिं पदेसेहिं, गतवयणं भण्णति । दव्व-खेत्त-काल-भावेहिं वयणस्स विकप्पा संभवन्ति । एत्थ चतुपदेसिए खंधो उदाहरणाणि भाविज्जंति । सव्वो सीतपरिणतो चतुपदेसितो तत्थ दो णिद्धा, दो लुक्खा दव्वतो गतं १ । एत्थेव लुक्खा दोण्णि वि एयणा परिणामेण पिहप्पिह, तत्थ बहुवयणं २ । णिद्धो तिण्णो लुक्खो एगत्तादि किरितो ३ । णिद्धा वि भिण्णा लुक्खा वि । किरिया विसेसेण चत्तारिभंगा ४ खेत्ततो भण्णति । सव्वो सीतो, दो णिद्धा । एवं एगम्मि पदेसे दो लुक्खा दो वि अण्णं । तिपदेसे १ । लुक्खा भिण्णखेत्ता दोहिं पदेसेहिं २, णिद्धा वा दोहिं ३, उभगं वा दोहिं दोहिं ४, कालतो सो च्चेव खंधो । सीतपरिणतो परिवत्तिकाले अभिण्णसमतो सव्वो तस्स दो णिद्धा, दो लुक्खा, पडिक्कमभिण्णकाला १ । लुक्खदुगमण्णो परमाणू अण्णम्मि अण्णो अण्णम्मि काले दु वि य लुक्खा २ । एवं कालभेदेण णिद्धदुगे बहुवयणं ३ । उभयेव भावतो एग गुणकालतो, खंधो सीतो एग गुण सीतो च्चेव णिद्धदुगं, लुक्खदुगं च । तहेव २ लुक्खस्स । एगो दुगुणलुक्खो तेण बहुवयणं २ । एवं णिद्धे वि भेदो ३ । तहा दो वि णिद्ध-लुक्खा भिज्जति । चउत्थभंगो । एवं वण्णतो जे तुल्लो सो

गंधयो भेत्तव्वो । तथा रस-फासेहिं संखेज्जाणंतेहिं पाडेक्कं दव्व-पज्जव-किरिया-खेत्त-काल-भावतुल्लातुल्लजाति-ठाणुक्करिसावकरिस-भेद-संघात-तदुभयभावविकप्पेहिं वकृ-श्रोतृ वचनात् नय-विधि-विवक्षा विवक्षाप्रपंचानेकविवक्षामंगीकृत्य भंगा योज्याः । बि-तिय चतुपदेसेहिं दु ति चतुपदेससीतोसिण-णिद्ध-तुक्खेहिं भावेज्जा । द्वि बहुलक्षलक्षणाः एवं सर्वत्र नेयं बुद्धया ॥छा॥

इमीसे णं, रयणप्पभाए य सक्करप्पभाएय अंतराणे सुहुमपुढविक्काइया समोहता सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्तेणेव उववज्जित्तए भविया भे ! किं पुव्विं आहारं उरालियं सरीरनिप्फंदेणिया पोगलआहारत्तए उववज्जंति ? उता, हुहुव वज्जित्तेण तप्पयोगपोगलगहणं करेति ? । गोयम ! पुव्विं पच्छा वि ले० खे० दुयसणि समुघातगामिणो ते पुव्विं उववज्जित्तूणं ततो आहारेति । जे अलिया दिड्ढंतगामिणो ते य देसे वि च्छुभित्ता समणंतरं आहारं गेण्हति । तस्समणंतरं चेवमुव्वमाणसरीरस्स जीवपदेसा तत्थेव संहरंति । एवं सव्वपुढवियंतरा सव्वकप्पे इसीपब्भारासु उववातेतव्वा । तथा उवरिकप्पगअंतरालेसु घणोदधिसु वातवलयेसु वाउक्काइया कंठं ॥२०।६।छा॥

कतिविहो बंधो ? तिविहो । कंठो । जीवप्पयोगबंधो नाम जीवो जे पोगले मणो वाय-काय-जोगविसेखेहिं आतजीवपदेसे सबद्ध-पुट्ट-णिहितणिकायत्तेण ठावेति अणंतरं बंधो । जेसिं अणंतर पच्छाकडो समतो बंधतो बंधत्तेण वट्टति बितियादिगतपच्छाकडो परंपरबंधो । नेरइयादिसु पदेसु णाणावरणिज्जादिसु तब्भेदेसु चारेतव्वा ॥२०।७

जेसिं पि सम्मंदरिसणादीणं अबद्धाणं तहापरिणामो तेसिं आदिपगडीबंधसबंधेण जेज्जा ।

जिणंतरं आदि २ अट्टयस्स अंतअट्टयस्स णत्थि । मज्झट्टयस्स सत्तठाणा अंतरा वोच्छिण्णो आसी । कालियं एक्कारसंगाणि । तित्थं चाउवण्णो संघो । तित्थ य णेता तित्थकरो । एगो कत्ता अण्णो कज्जमाणो । प्रवचनं प्रोच्यन्तेऽर्थाः तस्मिन्ने वा प्रवचनं । तद्यस्य स प्रावचनी प्रावचनिको वा ॥२०।८॥

चारणा-विज्जाचारणा य जंघाचारणा य । विज्जाचारणा-जे पुव्वगतसुतणाणया ठातो तहाविधातो गगणलद्धिणो । जंघाचारणा, जे आदिच्चादिरस्सिं णिस्सादिसु तवच्चरणे लद्धिसमागमातो गच्छंति ॥२०।९॥छा॥

आतोवक्कमो जो अप्पणा चेव आउयं उवक्कामेति । जहा सेणितो । परोवक्कमोजो परेण उवक्कामिज्जति । निरुवक्कमो जो सतमेव मरति जहा कालसोगरिगो । जे सोवक्कमा जे य निरुवक्कमा ते णातव्वा ।

कति इति संख्या वाची । अकतीति तत्तणिसेहो । असंखेज्जाणंतो वा अवत्ततो । दोण्ह वि मज्झे णत्थि । अत्थि एसो एक्कगो दुयादिया संखा, असंखासंखातीता दोण्ह वि णत्थि मज्झे अवत्तव्वो । एते एगेदियवज्जेसु तिण्णि वि । पुढविकाइया असंखेज्जं ति । तेण अकइ ति संचतो, तेसिं एसो य परट्ठाणोववातो घेप्पति । एगीभावेणवतो सिद्धा एगो वा दु आदि संखा अट्टसतं । ता अप्पबहुं-थोवा एगगा । उवण्णायायण समूहो उवन्ने । ततो दुयादिसंखा संचिता संखेज्जा संखाए संखेज्जत्ता । अकति संचिता असंखेज्जा ठाणत्ता असंखेज्जा संखातो एगेदिया असंखविया चेव । सिद्धा कति संचिता ? थोवा । मणुय-केवलीणं तहा आउयपरिणतीतो । एगत्तेण गया । बहुया एरिसत्तस्स जीवरासिस्स माणं कज्जति । छ रूवाणि छक्कगं । एग दोण्णि तिण्णि चत्तारि जाव पंच छक्केण य णोछक्केण य एगो णोछक्केण य । एगो छक्को । एगो वा, दोवा, तिण्णि वा, चत्तारि वा पंच वा बहूणं छक्कगाणं वितियादीणं संघारो छक्केहिं य बहूणं च छक्काणं । एगो दो. ति. च. पंच समुदय णोछक्काणं छक्केहिं य । एतेणं पवेसणगेणं । जे पविट्ठा पविसंति वा ते तं माणपरिच्छिन्ना घेप्पंति । णेरइए एगा दो या असंखेज्जंता अत्थि त्ति । जतो संभवो तेण पंच वि असंखेज्जो वि रासी एतेहिं चेव णिण्णवेतव्वो । अप्पबहुं-जतो एवं छक्कगसंखा ठाणंतो थोवा । छव्विह पविट्ठा णो छक्कगे पंच ठाणाणि वट्ठित्ताणि ततो छक्करासीतो सो य णोछक्को रासीवट्ठितो एगत्थ सव्वो वि संखेज्ज त्ति कट्टु छक्का बहवो पुव्वरासिं जिण्णंति । जतो असंखेज्जयावतारिणो ते असंखेज्जगुणा । छक्केहिं य णोछक्केहिं य पंचट्ठाणविवट्ठितो संखेज्जगुणा । एवं अप्पप्पणो ठाणेस णेज्जा । सिद्धाण य जो बहुरासी सो थोवा । थोवो रासी बहू । एवं बारसगं माणं । सेसं छक्क तुल्लं । तहा चुलसीतं माणं तहेव सेसं कठं । वीसइमं सतं सम्मत्तं ॥

सालि-कल-अदसि-वंसे उक्खु-दब्भे य अब्भ तुलसी य ।

अट्टेतो दस वग्गा असिति पुण होंति उद्देसा ॥१॥

जहा-उप्पलुद्देसो तहेव णिरवसेसो भाणितव्वो । लेस्सासु तीसु छत्तीसं भंगा । तिण्णि उट्ठिया पडिता तिण्णि दुग संजोगा । बारस तेग संजोगे अट्ट । एत्थ एगगे दस मूल-कंद-खंधी-तय-साल-पवाल-पत्त । एते सत्त तुल्ला । पुप्फ-फल-बीएसु देवो अतिरित्तो लेस्सादि विसेसेण उववातयव्वो । एसो सालीए दसवग्गो । कल-अयसि वि वंसे तुल्लं । णवरं देवोण्णोववज्जति । ततो लेस्सात्तोउक्कवग्गस्स खवीए देवो ण पुप्फादिसु सेडियवण्णं वसु तुल्ला तहा अब्भरुहे तुल्लसी य । छ ॥ एगवीसतमं सतं सम्मत्तं ॥छ॥२१

अह भंते ! ताले ति, सालिवग्गसरीसो एसो ठिती विसेसो कंठो ॥२२॥१॥छ॥

कंदे णत्थि विसेसो । णवरमोगाहणो जहण्ण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागुक्कोसगाउयपुहत्तं । ठिति दस सहस्सा ३ । छ। तए सालिसु खंधि सरिसा ५ । छ। ठिती एतेसु पंचसु अंतोमुहुत्त जहण्ण, उक्कस्सा दसवाससहस्सा । पंचालुद्देसए देवोवत्ती भाणितव्वो । सेस विसेसो य कंटो । ६। छ। पवालि जहा तहा पत्ते ७ । छ । पुप्फुद्देसेतो जहा पवालो । विसेसो कंटो ॥८॥ छ। फले जहा पवाले । विसेसो कंटो । ९। छ। जहा फले तहा बीए १०। एवं दस । वावीसतिमस्स ॥

अह भन्ते ! णिंब-अंब-तलवग्ग सरीसा दस वि वीसं उद्देसा २० । छ। अत्थियाणं मूलादीया दस विसेसो, कंटो । ३० । छ। वातिंगणीए वि दस । विसेसो कंटो ॥४०॥ छ। सेरिययवग्गस्स दस । विसेसो कंटो ५० । पुस्सफलिस्स दस । विसेसं कंटं । उद्देसए सुयअतिद्देसो णेयो ॥ छ। वावीसइमं सत्तं समत्तं । छ।

आलुयादी बादरा अणंतकायो एतेसिं मूलोववत्तिणो, तिरिय-णरजीवाणं केवति संखा ? कंठा । अणंताणं पढमाणं तएणं णावहीरंति तेसिं चाणंताणं अणंताणि ठाणाणि । तेसिं केण वि णावहारो । अणुबंधो नामं आलुयत्तं अमुंचंतो आलुअंतरेसु उववज्जंतो ठितिं च पालेंतो जो अच्छणं सो अणुबंधो । सो य अणंतो कालो । संवेहो आलुपत्ते णोआलुयत्ते पुणो आलुयत्ते, उववात णिग्गमा । दस उद्देसा । छ। लोहियादिसु दस ॥ छ। आए वि दस । छ। यावादिसु दस । छ। मासपत्नीए दस । छ। विसेसो य कंटो । छ। तेवीसइमं सत्तं समत्तं ॥ छ।

जीवपदे जीवपदे एक्केक्के दंडगम्मि उद्देसो ।

चतुवीसतिमम्मि सत्ते चउवीसं होंति उद्देसा ॥१॥

चतुव्वीसा दंडए चतुव्वीसं जीवपदा । तत्थ जीवपदे-जीवपदे एक्केको उद्देसतो तेण चतुव्वीसं उद्देसा । एयम्मि चतुव्वीस सत्ते । एत्थ य अत्थपदाणि उववातो को कहितो उववज्जति ? उववज्जंताणं परिमाणं एगो संखेज्जा असंखेज्जा अणंता वा, संठवणं छव्विहं । सव्वे वा संभवतो वा उव्वत्तं सरीरतोगाहणा जहण्णादिया । संठाणं किं सट्ठाणी उववज्जति वा चवति वा ? । लेस्सातो संपुण्ण विसेसियातो । णाणं-पंचविहं संभवतो णेज्जा । उवयोगो दुविहो-सागारो अणागारो । जोगा-मण-वइ-काया । ३। सण्णा-आहारादिया ४ । कसाया-चत्तारि कोहादिया । ४। इंदिया पंच ५ । समुग्घातो छव्विहो वेदणा-साताअसाता । वेदो-तिविहो-इत्थीयादी । आउ-जहण्णमुक्कस्स च । अज्जवसाणा-सुभासुभा । अणुबंधो तुल्लभवे तुल्लनिकाये ड्ढिती । तत्थ केसु त्ति, आउस्स य णिकायस्स ट्ठाणस्स पविसेसो अत्थि ?

जत्थ पुण एग भवो चव तत्थायुयं अणुबंधाणं अविसेसो कायसंवेहो ओहाणसं गमणं पुणो आगमणं । तम्मि भवे आणंतरिएणं । गाहातो -

उववातपरिमाणं संघयणुच्चत्तमेव संठाणं ।

लेस्सा, दिट्ठी, णाणे, अण्णाणे, जोग, उवयोगे ॥१॥

सण्णा कसाय (इंदियसमु)ग्घाते वेदणा वेदे य ।

आउं, अज्झवसाणे अणुबंधो कायसंवेहो ॥२॥

णेरइयरयणादिउववत्ति त्ति, तत्थ पंचिंदियतिरिय-मणुया उववत्ति जोग्गा । तत्थ समुच्छिमपंचेंदिया असण्णीय उववज्जंति, सण्णीय सव्वे य पज्जत्ता । आउयं, अंतोमुहुत्तं जहण्णं, पुव्वकोडी उक्कस्सा सव्वेसिं । असण्णीरतनप्पभा ते णो सेसासु तस्स जहण्णा ट्ठिती दसवाससहस्सा । उक्कस्सा पलितोवमा संखेज्जति भागो एत्तियं बंधति । उववातादियाणि पदाणि कंठाणि । गतिरागतीए भवभेदो तप्पसिद्धआउयकालो य जहासंभवं उक्कोसादितो मेलेतव्वो । भावो य कंठो । भेदेण भणिज्जमाणो णेतो । तत्थ पज्जत्त-पंचेंदिय-तिरितो उहितो मग्गिज्जति । उहियगहणेण य जहण्णट्ठितीतो उक्कस्सट्ठितीतो य घेप्पति । तहा उवत्तिट्ठाणेसु वितोहियगहणेण उक्कस्स जहण्ण उक्कस्सं जहण्ण गहणं । जहण्णुक्कोसाणि य सुद्धाणि । उववज्जमाणग उववत्तिट्ठाणेसु । तत्थोहिओ उहिएसु उहितो जहण्णेसु उहितो उक्कस्सेसु जहण्णो उहियट्ठाणे । जहण्णो जहण्णट्ठाणे । जहण्णो उक्कस्स ठाणे । उक्कोसो उहिएसु । उक्कस्सो जहण्णेसु । जं जं ठाणं जेसिं जेहिं उववज्जति तं तं उववातादिविसेसितं काउं सट्ठाणे आऊय उववत्ति जहण्णोक्कोसाऊय ट्ठाणाणि जाणिरुणं सलक्खणतो पाढेज्जा । उहितो अस्सण्णी अंतोमुहुत्ताऊतो रतनप्पभाए जंति जहण्णेसु । ततो दसवाससहस्सातिं अंतोमुहुत्तभंतियाणि । अह उक्कोसेसु ततो पलिता संखेज्जतिभागं अंतोमुहुत्तभंतियं । अह उक्कोसो ततो उक्कस्से ततो पुव्वकोडी तज्जहण्णे दसवाससते पुव्वकोडी । अह उहितो जहण्णुक्कसाणि । जहण्णे पज्जाएण अतिरित्ता, एवं उक्कोसं दोहिं उहियगहितेहिं अहियाणि । जहण्णो उववज्जमाणो उहियो दोसु मग्गितव्वो । जहण्णो जहण्णट्ठाणे, जहण्णे उक्कस्सट्ठाणे, तहा उक्कोसो उहिए, उक्कोसो जहण्णे, उक्कोसो उक्कोसट्ठाणे उववज्जमाणस्स जहण्णमुक्कोसं च जाणेज्जा । उववत्तिठाणे य उक्कोसं जहण्णं च जाणेज्जा । कायाणुवेहं जहाभिहितसुत्तं । तभवविणम्मि तं च कालं संजोएज्जा । उक्कस्सं जहण्णं च । एतेसु नवसु ठाणेसु पत्तेयं पत्तेयं अस्सण्णीयं पंचिंदियसमुच्छिमो उववातादिविसेसितो उववातेतव्वो । रतणाए एसो य णिरएहिंतो उवट्ठो णियमा सण्णिसु उववज्जंति । तहा सण्णी अंतोमुहुत्त

जहण्णट्टिती उक्कस्स पुव्वकोडी असंखेज्जवासाऊणो उववज्जति त्ति कट्टु, एसो वि उववातादिपदविसेसितो नवसु ट्ठाणेषु रतणप्पभाए चारेतव्वो । जाव सत्तमा पुढवीणं जहण्णुक्कोसातो ठितीतो रतणाए दसवा० जहण्णा । उक्कस्सा सागरोवमं । एवं जाव उवरिमाए उक्कस्स सो हेट्टिमाणंतराए जहण्णा हवति । जाव अधिसत्तमा । जहण्ण ट्टिती यस्स णियमा अपसत्थो अज्झवसातो थोगो कालो जातो इतरस्स दीहकालस्स मीसो भवति । जो य जहिं जति वारा उप्पज्जंति तं जाणे । सत्तमाए मणुयदेहं जहाभिहितसुत्तं । तब्भव विणिम्मितं च कालं संजोएज्जा । उक्कस्सं जहण्णं वेयत्तमुव्वट्टो ण लभते । एत्थ पविसेसो संघयणादीण कण्ठो चेव भण्णति । जो अविसेसो सो पढमगमगतुल्लो संखिप्पति । मणुस्सो उववज्जमाणो पज्जत्तगसण्णी कम्मभूमगसण्णी कम्मभूमगमणुस्सो सत्तसु पुढवीसु तहेवोववातविसेसितो एक्केक्काए णवट्टा संभूतसंबंधी मग्गितव्वो । उहिणाण-मणपज्जव-आहारतसरीराणि लद्धूण परिसाडेत्ता उववज्जति । एवं मणूसो सव्वत्थ विसेसितो उववातेतव्वो ॥२४॥१॥ पढमो उद्देसतो ॥छ॥

असुरकुमारुद्देसतं वत्ततिस्सामो । कतोहिंतो ? जहेव णेरइया-समुच्छिमपंचेंदियतिरिय-सण्णि-पंचेंदिय संखेज्जासंखेज्जतिरिय-मणुएहिं संखेज्जासंखेज्जाउएहिं पविसेसो । एत्थ य अस्सण्णी जहण्णेणं दसवाससहस्सं, उक्कस्सेणं सतुल्लपुव्वकोडिआउयत्तं णिव्वत्तेति । ण य समुच्छिमो पुव्वकोडिआउयत्तातो परो अत्थि । तहा असंखेज्जवासाऊ सण्णी जहण्णो सातिरेगपुव्वकोडी उक्कस्से तिपल्लोवमायू । एते उक्कस्सं जहा पुव्वभवायुं देवेषु बंधति जहण्णं सव्वे वि दसवाससहस्साइं । एवं मणुस्सो संखेज्जाऊतो सव्वट्टाणं देवलोयट्टितिबंधतो असंखेज्जत्तायूदेवेषु तुल्लट्टितीबंधी उक्कस्सो जहण्णेण दसवाससहस्सा । असण्णी उववातेहिं विसेसेऊणं जहण्णकालट्टितीयस्स पसत्था अज्झवसाणा जतो देवेषु उववज्जितुकामो थोवेण कालेण नियमा सुभपरिणतिं गच्छति । बहुआऊ बहुपरिणामो वि भवति । तहा मिच्छदिट्टी अण्णाणीण । सम्महंसणंते पडिवज्जति त्ति कट्टु, भवादेसो मणुय-देवत्तातो ण पुणो असंखेज्जावासासूववज्जति त्ति कट्टु, एवं पंचेंदियतिरितो सण्णी संखेज्जासंखेज्जाऊ णवट्टाणविसेसितो उववातितो मणुस्सो वत्तव्वो । संखेज्जवासाऊ जहा रतणप्पभाए णवरं सातिरेक असुरकुमारुक्किट्टिट्टितीए संवेहो कातव्वो । असंखेज्जवासाऊत्ते उववाताती णवट्टाणविसेसितो भाणियव्वो । तहेव बितितो उद्देसतो । छ॥२४॥२॥

णागकुमार पुच्छ । एतेसु वि उववातउहियादियाण वण्णेया । णवरं आउस्स संवेहो उक्कस्सेण दो देसूण पलितोवमाइं । एत्थ वि असंखेज्जवासाऊया तहेव सण्णितुल्लं देवलोगेषु बंधति । मणुस्सेहिं वि तहेवोगाहणा पविसेसो य कंठो ।२। जहा णागा तहा थणितादीया । उक्कस्साऊयादिविसेसिता णेया । एक्कारस उद्देसया ॥२४॥११॥छ॥

पुढविकाइय पुच्छा-णेइयवज्जेहिं तिरिय-मणुय-देवेहिंतो उववातो तहा तब्भेदेहिं एगिंदिएहिं, तहातब्भेदेहिं, पुढविकाइएहिंतो तहा आउ, तेऊ, वाउ, वणस्सति, बि, ति, चउ, पंचिंदियतिरियं, मणुय, असुर, वाणमंतरा, जोतिसा, सोहम्मीसाणाहितो सव्वे सभेदे भिन्ना कायव्वा । पुढविकाइतो उववज्जमाणो पुढविकाइएहिं उववातादिविसेसितो उहिय नवग दंडगेणं य कायव्वो । दोसु वि द्वाणेषु जहण्णिया द्विती अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सा बावीसवाससहस्सिया । जहण्णभवग्गहणा पज्जत्तापज्जत्तीए वि पज्जत्ती उक्कस्स द्विती अट्ठभवग्गहणा दोसु वि द्वाणेषु जहण्णद्विती । असंखेज्जकालं भवाणिय देवोवत्तीए तेउल्लेसाण य अपज्जत्त जहण्णद्विती हवति । णियमा बातरपज्जत्तिं लभंति । तहा आउक्काइएहिंतो एतस्स उक्कस्सा सत्तवाससहस्सा तहेवोववातपरिमाणनवगदंडगभेदा विसेसितो णेया । जत्थुक्कोसा द्विती तत्थट्ठ भवग्गहणिया जहण्णा, असंखेज्जा वि तहेव तत्थ कालो असंखेज्जो संवेहो य ।छ।

एवं तेउक्काइया वि । उववातणवदंडगविसेसिता णेया । उक्कस्साइं तिण्णि रातिंदियाइं । एवं तेणेव लक्खणेणं णेतव्वं । एवं वाउक्काइयाणं उक्कस्सा द्विती [.....] समुघाया चत्तारि वेउव्वितो अब्भतितो तहेवोववातणवगविसेसितो णेतो । विसेसो य कंठो ।छ। एवं वणस्सती वि उववातदंडगस्स य वि सियालिस्सातो चत्तारि ग [....]चओ । जो सो देवो अहुणोवण्णो सो लब्भति । सो य णियमा पज्जत्तएसु उववत्ति । सेसं कंठं ।छ। पुव्वभणियं च । एवं बेइंदियाणं [.....] दंडए विसेसियाणं उववत्ती भाणितव्वा । सम्मदिद्वीसासायणो जो उववण्णपुव्वो आसी सो लब्भति । संभवतो आउयं उक्कस्सं बारससंव [....] सविसेसो कंठो । ॥छ।) एवं तेइंदिया वि उववातादिणवगदंडग विसेसिता विसेसो कंठा । विसेसिता य उक्कस्स ठिती एगूणपण्णराइंदिया तहा चउरिंदिया उववातादि विसेसिता णवगदंडग विसेसं कंठा णिदिद्धा णेया । उक्कस्स ठाणेया उक्कस्सठिती छम्मासा । एवं विसेसेण णेया ।छ।

जति पंचेदियतिरक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति । किं सण्णि असण्णी ? गोतमा ! दोहिं पि । असण्णि बेइंदियसरिसवत्तव्वता । उववातादीहिं पत्तेयं पत्तेयं एगेगो उहियादिदंडगो विसेसण्णिज्जो । सेस विसेसोवकंठो । छ। तहा मणुया दुविहा वि उववाताति विसेसेण उहियाआदिणवदंडगा णेया । तहा देवाइ (.....)वे उववाता विसेसिता तेसु चेव दंडगेसु जहासंभवं नेज्जा । कंठा । जाव सोधम्मीसाण ति । उद्देसो बारसमो ।छ।

एवं आउक्काइयउद्देसतो पुढविकाइयउद्देसय तुल्लो । तेउक्काइय-वाउक्काइयउद्देसएसु देवोवत्ती णत्थि । तेण तिण्णि आदिलेस्सातो ।२४ : १५ ।छ।

वणस्सतिउद्देसतो पुढवितुल्लो । णवरं सट्ठण्णे उववज्जमाणा अणंता भाणियव्वा । २४।१६ । : ।छ।
 एवं बेइंदिय उद्देसतो उहियाए मग्गणाए मग्गिऊणं उववायादिविसेसिए काउं उववज्जमाणस्स
 उववत्तिठाणस्स य जहण्णुक्कस्स ठाणं णाऊणं सव्वकायसंवेहा कातव्वा, जहा तेउक्काइया तहा उवातेतव्वा
 । २४।१७।छ।

तेइंदिया जहा बेइंदियाणं उववाते छ । २४।१८। तहा चउरिंदियउद्देसतो वि । छ । २४।१९। एवं
 पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? एत्थ य समुच्छिमा असण्णीगब्भवक्कंतिया
 संखेज्जवासाऊ असंखेज्जवासाऊ य तिण्णि ठाणाणि घेप्पंति । नरगादिसु सत्त सत्तंसु वि उवट्टिऊणं
 उववज्जंति । तत्थइय उप्पण्णाणं जहण्णायु अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेणं पुव्वकोडी उववातो भणिओ ।
 परिमाणपदे असंखेज्जा । एवं संघयणादिपदाणि णेरइयाणं जहासंभवं भाणियव्वा । आउं रतणाते उक्कस्सं
 जहण्णेणाउं नवेव णवसु ठाणेसु णिद्दिसेज्जा, जहा रयणप्पभा । एवं सत्त वि भाणियव्वातो । उहियं
 पुच्छिऊण उववायादिततो णिद्देसो । पुणो उहिय जहण्णो तत्थ वि उववातादिविसेसं काउ णिद्देसो । एवं
 एक्केके भंगे उद्देस-निद्देसा जावं तिण्णि गमको उक्कोसो उक्कोसेसु ति । छ।

जइ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिएहिंतो किं एणेंदियादिया जाव पंचिंदिय ति ? पुच्छा,
 सव्वेहिंतो वि एणेंदिएसु पुढविकाइयादीहिं घणदंडयचउक्कादिभिन्नेहिं वि जाव वणस्सती तहा
 बेइंदियादीहिं चउरिंदियंतेहिं पज्जत्तापज्जत्तदुभेदभिन्नेहिं य तहा पंचिंदिएहिं समुच्छिमासण्णीहिं पि
 गब्भवक्कंतिया य संखेज्जवासाउगा देवलोगगामिणो तेण उववज्जंति । जइ पुढविकाइयाउतो तिरिक्ख
 पंचिंदिएसु जहण्णेणं अंतो० उक्कोसेणं पुव्वकोडीएसु णोअसंखेज्जवासाऊयेसु परिमाणं । जतो भायणं
 थोवं, ततो संखेज्जा जहण्ण उक्कस्सा जहण्णाजहण्णा ठिती णातूणं सव्वोवसंहारा भवादिया
 करेतव्वा । एवं जाव चउरिंदिया ताव उववातेतव्वा । पंचेंदियतिरियपुच्छा । ते य सण्णि-असण्णिणो दो
 दोविं उववज्जंति । असण्णी जहण्ण ठिती उववत्ती ठाणे बंधति । उक्कस्स ठितिं च असंखेज्जति
 पलितोवमभागं बंधति । जहा असण्णी पुढविकाइय उववत्ती भणिया तहेवेत्थं पि । णवरं सम्मदरिसणे
 सासायणसम्मद्विद्धि संभवं पडुच्च णाणा लब्भंति । तहेसाणंपि । एत्थ य जस्स परमजहण्णा ठिती
 उववज्जमाणस्स सा अतीव सण्णिरुद्ध ति कट्टु, परममिच्छत्तोदया लब्भंति । सेस गमगेसु विसेसो
 कंठो । एवं असण्णी गता । जति सण्णिहिंतो दुविहा संखेज्जासंखेज्जाऊ तत्थ जहा पुढविकाइएसु एते
 उववण्णा तहा पंचिंदियतिरिएसु वि एत्थ असंखेज्जाउणोववज्जंति ति कट्टु, एतेसिं जहण्णाउ अंतोमुहुत्तं,

उक्कस्स पुव्वकोडी । जत्थोववज्जंति तत्थ जहण्णा अंतो० उक्क० तिण्णि पलितोवमा । अवं णवसु
 ड्ढाणेषु उववातादिपाडेक्कविसेसितं कंठाभिहितं च णेज्जा । जति मणुस्सेहितो उववज्जंति, किं
 सण्णीहितो असण्णीहितो ? दोहिं पि तहा कम्मभूमगेहितो ते य पज्जत्ता दो वि । एतस्स ठिती अंतो०
 जह(ण्ण)उक्कस्स तिपलितोवमाउववज्जमाण ठाणे ठाणे संखेज्जा उववज्जंति । किं सण्णीहितो
 गब्भवक्कंतिया ? खेत्तपत्तातो । तथा जहण्ण ठाणे समुच्छिमा । ते य असंखेज्जा मिच्छदिट्ठिविसेसिता
 कज्जा । जति देवेहितो ? पुच्छा । जहा पुढविकाइएसु एत्थ य अब्भहिता जाव सहस्सारो । एतेसिं
 उक्कस्सादि । आउयं सव्वत्थोवोववातादिविसेसिताणं । णवगदंडगेहिं णेज्जा । २८.२० । छ।

मणुस्साणं भंते ! कतोववज्जंति ? सामण्णेणं चतुहिं पि णेरइयादिसुं । अहे सत्तमे तेउ, वाउ
 उववज्जेसुं रतणप्पभातो मणुस्सेसु । जति देवेहितो जहण्णायुणिवत्ती णवमासा जाव ताव मासपुहुत्तं,
 उक्कस्सा पुव्वकोडीणो असंखेज्जवासाउएसु तव्विह णिव्वत्ति परिणामाभावातो । जत्थ उववातपरिमाणं
 संखेज्जा भायणथोवत्तातो जहण्णुक्कोसाऊ संवेहा भणितव्वा । वालुयप्पभ जहण्णाऊं वासपुहुत्तं । सेसं तं
 चेव । छट्ठा । जति तिरिक्खजोणिएहितो जहेव पंचिंदियतिरिएसु तिरिया उववातिया तहेवेत्थं पि तावइ
 भेदेण एगिंदियादिणा, ततिय, छट्ठ, णवमग, णवमगेसु उक्कोसेणं संखेज्जा भणितं उवत्तातो सव्वोरालिय
 सरीरस्स । मणुस्सेसूववज्जमाणस्स य सट्ठाण वि ड्ढाणविसेसाउ विसेसभेदं पडुच्च जहण्णेषु समुच्छिमा
 पडुच्च पसत्था उक्कोसा य संखेज्जा, इतरे समुच्छिमा णेया । एवं आउ वणस्सति वि असण्णि-
 पंचिंदियतिरिय-सण्णिपंचेदियमणुस्सा वि सट्ठाणे, तहेव चउत्थगमगे विसेसो कंठो । जतो उहितो उक्कस्से
 चउत्थे गहितो पंचमे दो वि परमजहण्ण ति । समुच्छिमो तहा छट्ठे । उक्कस्सायु ति सेसं
 कंठं । तहेव भायणं थोवं । तिरियादीसु गमेसु वि सेसं, जहेव पंचिंदिएसु उववज्जमाणं मणुस्साणं तहेव
 सपदे वि । जति देवेहितो तत्थादिदेसं करेति तिरिक्खजोणिएहिं जहा देवा तिरिएसु वासपुहुत्तं जाव
 सव्वड्ढसिद्धं ति । एवं देवाणं सव्वेसिं उक्कोस-जहण्ण ड्ढितिं णातुं मणुयाण य संवेहोणेगहकज्जो । सेसं
 विसेसा य कंठा । समुघातपदे वेउव्वित-तेया-कसाय-वेयणा-मारणंतिया ५ । अणंतरेसु दो वारा
 ततोयरतो न गच्छति । सेस देवलोगेसु संखेज्जं वा कालं भवंति । तदणतरं वा मोक्खं गच्छंति ।
 सव्वड्ढसिद्धा उक्कोस-जहण्णा नियमा मणुयागता सिज्जंति । २४ । २१छ।

वाणमंतरा कतोहितो ? पुच्छा । जहा नागकुमारा । णवरं जहण्णाओ दसवाससहस्सा । उक्कस्सेणं
 पलिओवमं, एतेन सह संवेहो कायव्वो । तिरिया संखेज्जा असंखेज्जा वि । जो य असंखेज्जा वि जो य

संखेज्जवासाऊ तस्स जहण्णा ओगाहणा गाउयं, आऊ पलितोवमं । किं कारणं ? तेसु तुल्लं । उक्कस्सेणं आउगं बंधति जतो जहण्णं पुणं उक्कोसायू वि बंधति । २४।२२।छ।

जोतिसियपुच्छा । जहा णागकुमारा । णवरं तेसु समुत्थिसमुल्ली वि उववण्णातो ते इह ण संभवन्ति । एतेसिं जहण्णेणं पलितोवमड्डभागा, तेसिं पुण उक्कस्साउयं बंधो, पलितोवमा संखेज्जति-भागो तेण ण पावति । एवं ठाणं उक्कस्सं जोतिसियाणं सातिरेगपलिओवमं । एतेण सह संवेहो । लेस्सा चत्तारि आदिल्लातो । तव्विह जीवपरिणामविसेसातो सह वा एगा चेव, पच्छिमा तं जोग्गा मारणंतिया तेउलेस्सा । तहा पक्खिणो असंखेज्जवासाउया वि । जतो असंखेज्जपलिओवमभागबंधगा तेण पावन्ति तं ठाणं । जे वि मणुस्सा असंखायू ते वि जहण्णेणावस्सं सतुल्लड्डभागाउया, उक्कस्सेण तिण्णि चेव पलितोवमाए तेणं णवगठाणं णेतव्वं । धणुपुहत्तं च हत्थिवज्जेसु सेसेसु तिरिएसु ठव्वं, जहण्णेणं सेसेसु चत्तमण्णेसु । एवं संवेहादि जहण्णुक्कोसआयुविसेसेण भाणियव्वं । सव्वं गमगेसु णेयव्वं । जति मणुस्सेहिंतो जोतिसिया उववज्जन्ति भेदेण भाणियव्वा । जाव संखेज्जवासाउया असंखेज्जवासाउयणो अंतरदीवगा । किं कारणं ? ते असंखेज्जपलियभागए । एवं बंधेणे त्ति कट्टु अतिदेसो जोतिसिएहिं । तत्थ य संखेज्जा वासाउ तिरिय-मणुया उववातिया, सोहम्मे जहण्णाउं पलितोवमं, उक्कोसं सागरोवम दुगं । मणुय-तिरिक्खणं पुव्वभणितं । एतेहिं संवेहा कायव्वा सव्वदंडगेसु चत्तारिलेस्सातो, सामण्णेणं मरणकालि नियमा सोहम्मजोग्गाणि वत्तिज्जन्ति । असंखेज्जवासाऊं । एत्थ जहण्णायू पलितोवमड्डिती उक्किट्टो तिपल्लोवमा, एवमेतण सह संवेहं दंडगेसु करेज्जा । विसेसो य कंठो । छ।

एवं ईसाणे वि उववातो । एवं णवरं सोहम्मे जहण्णुक्किट्टं तं सातिरेगं कायव्वं । उगाहणसंवेहेसु तहेवेति लेस्सा तप्पायोग्गा । छ।

सणकुमारपुच्छा । एत्थ पज्जत्तगब्भवक्कंतियसंखेज्जवासाउयतिरिय-मणुया उववज्जन्ति । ठिती जा दो सागरा उक्कस्सा सत्तमा परिमाणाती जहा रतणपभाते । एतेसिं चेषोवज्जन्ताणं लेस्सातो उवरिमातो तिण्णि सव्वत्थ उवरिमेसु जाव सहस्सारो । एतेसु एते चेव तिरिय-मणुया, सेस विसेसो कंठो । आणतादिणं एवं चेव, णवरं मणुस्सो उववज्जति । सेस विसेसरासी । कंठो ।

अणुत्तरोववायपुच्छा । एतेसिं जहण्णा एकतीस सागरोवमा उक्कोसा तेत्तीस सागरोवमा । मणुयाणं वासपुहत्ता जहण्णा उक्कस्सा पुव्वकोडी । एतेण सह संवेहो विसेसो कंठो ।

सव्वड्डसिद्धे य जहण्णमणुक्कोसा तेत्तीसाया ठितीमेतो याण सव्वेव । एवं णवसु दंडगेसु संवेहो । विसेसो य कंठो । गाहा-

“वेमाणिय उद्देसे गमतो णाणेहिं विरहितो णत्थि” । तिण्णिया विसुद्धलेस्सा सणं-कुमारादिसु तिरिण्णसेवं भवति । एक्केक्को चउव्वीसा दंडगेण उद्देसतो णेया ।२४॥छ॥ चउवीसतिमं सतं सम्मत्तं छ । ॥छ॥

कतिविहा संसारसामण्णगा ? पुच्छ । सुहमा बातरा । एतेण एणेंदियरासी गहितो बे.ते.च. पंचिंदियाण असण्णि-सण्णि भेदो । सव्वे विंसतु भेदो । एक्केक्को अपज्जत्तपज्जत्तयत्तेण भित्तो । चोद्दस एक्केक्को, जहणुक्कोसो । अट्टावीसं एसो य जोगो भण्णति । ‘योजनं युक्ति वा योगः’ । सामान्यभावरूपं भेदाकांक्षी । अत्र च कर्मणशरीरं सामान्यं । तदन्तरेण नैव योगशेषयोगे राशिभिः निष्पत्तिः । तेन क्वचिन्निरुद्धितं कर्मणं । सामान्यं निर्देशभाग् भवति । क्वचिच्च तदेव भेदगतं भेदव्यपदेशं प्रतिपद्यते । यथा सामान्योऽग्निः तुष-खादिर-गोमयाग्नित्वं भेदं लभ्यते । एवमयं सूक्ष्मापर्याप्तादियोगो द्रष्टव्यः । अत्र च परिस्पन्दलक्षणा क्रिया जीवस्य पुद्गलसहचरितस्य विद्यते । अल्पबहुत्वेन तद्विभिन्नं ज्ञानरूपं वा द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव-प्रभेदकल्पं । तदेतद् अल्प-बहुत्वं स्वामितत्स्थानविशेषादभिधीयते । तत्थ सव्वत्थोवो सुहुमस्स जहण्णस्स अपज्जत्तगस्स जोगो । एसो य विग्गहगतिकम्मइतो ओरालियपढम समयपोगलगहणकालो जाव तस्सेव उक्कोसगमेगसमयूणं । एयम्मि ठाणे जीवो वट्टमाणो परमसुहुम किरितो होति । एवं आता उद्धं असंखेज्जगुणो य वड्ढति । किरियाविसेसो प्रथमसमयादिबालज्ञानवत् ॥छ॥ अल्पाल्पप्रयत्नादितद्विवर्द्धमानप्रयासमद्वा तत्स्थानप्राप्तजीवद्रव्यक्रिया तत्स्थानभाव्याद्वा । एवं सव्वेसिं अपज्जत्त जहण्णा असंखेज्जा णेज्जा । जाव सत्त पुणो पज्ज(त्त)गसुहुमस्स बातरस्स य दोण्ह जहण्णतो । एतेसिं चेव अपज्जत्तग उक्कोसगा दोण्ह । एतेसिं चेव पज्जत्तगुक्कोसाते ते य णिव्वाडिया दो बेइंदियादीणं पज्जत्तगणं जहण्णगा पंच । ततो एतेसिं चेव अपज्जत्तगुक्कोसा पंच । एतेसिं चेव पज्जत्तगुक्कोसा पंच । अट्टावीसं ठाणाणि । दो भंते ! णेरइया अभिण्णे एगम्मि पढमे समए उववण्णा मग्गिज्जंति । उक्करिसावकरिसेणं समया एव । तत्थेगो कदायि विग्गहगतीए अणाहारगो उववण्णो । अण्णो उज्जुगती अहवा दो वि उज्जुगती दो वि वा वक्कगती, एसो भेदो अभेदो वा, पढमसमतोववत्तीए एवं सिय ते य पुणो चउट्टाणादिया जति वुड्ढिं गच्छंति हाणिं वा जंतीति । कंठं । असंखेज्ज ति भागो थोगो । संखेज्जतिभागो बहू । तथा गुणो वि रूवादिवुड्ढीए बहुतमो ।

कतिविहेणं जोगे पणत्ते ? पुच्छा । एत्थ वि जोगसामणं कम्मकयट्टं भेदेण सुहुमा पज्जत्तय जहण्णप्पबहुत्ततुल्लं भावेतव्वं । पण्णरसविहं तहेव जहण्णुक्कोस विगप्पो ठव्वो । किरियाविसेसो य असंखेज्जा वि रूवो तव्वट्टीतो अप्पबहुवट्टी । सव्वत्थोवो कम्मगसरीरजहण्णजोगो । सेसं कंठं । पंचवीसतिमे सते पढमो ॥२५॥१ छ॥

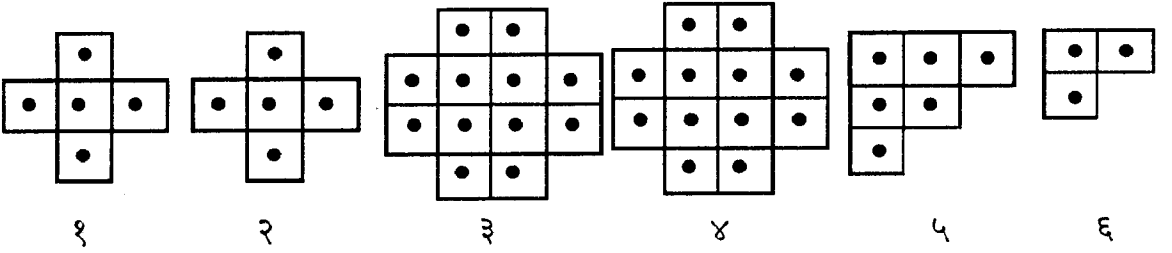
कतिविहा...पु(च्छा) । दुविहि ति । णिद्देसो संसयावणोदणत्थो । संखेज्जादिसंखाए भेदेणं निद्देसं काऊणं अणंतयं सिद्धेगेंदिएसु तेणाणंता जीवा । अजीवदव्वाणं पु(च्छा), दुवि(हा)रूवि अरूवी । अरूविणो दसविहा । तिण्णि णवगा । कायलोयभविणो चउव्विहा खंधा । जे दुपदेसिगादिणो संघाता तेसिं तेसिं चेव देसा जे युट्टीए खंडा कज्जंति । जाव एगपदेसूणो वि खंधो ताव देसो पदेसो । खंधेसु जे लग्गा परमाणुकप्पा परमाणवो जे असंबंधागामिणो । एसो वि अणंतो रासी पडिभेदं । एते य जीवदव्वाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति । तेषां चेतनाज्ञा स्वाभाव्यादितरेषां च तद्वैपरीत्याद् भोगाभोगत्वं ते य कहं आगच्छंति ? ओरालियसरीरादिणा कंठं । तहा णेरतियादीणं तेणं चेव पोग्गला । जस्स जारिसा जोगादि सुहदुक्खा भेदेणं णेतव्वा । आणापाणुत्तसामण्णधम्मा य जाणेज्जा । 'से'ति आमंतणं भगवतः । असंखेज्जो लोगो परिच्छिण्णागासदेसत्तातो घटागासमिव, एत्थ य अणंताइं दव्वाइं अत्थि, पुव्ववण्णियाणि जहा दव्व वण्णियाणि जहा दव्वपुच्छाए अणंतराए, एणो आगासपदेसो लोगागासखेत्तपरमाणू तम्मि पोग्गला घरत्थाणी कति दिसिं पविसंति ? दुवारे णवमणुया सो जदा मज्जे छप्पि दिसीतो दुवारठाणियातो संति उवरिम हिट्टिम पतरेसु पंचसु दिसिसु तहा उवरिमो हेट्टिमेतो चतुरस्सातो तोयतरो तस्स तिण्णि दिसा हिट्टिमा उवरिमा वा, ति दिसिं पविट्टयंतयस्स दो दिसातो एगा हेट्टिमा उवरिमा वा । एतेसु पवेसो णिग्गमो वा । सरीरिंदिय कंठा । संखा कंठा । उरालियसरीरजोगत्ताए गेणहमाणो तस्स सरीरस्स मज्झठिता वि गेणहति । तस्स वा बाहिराणंतरमज्झताए अट्टिता वि आवारिसेत्तणं गेणहति । दव्वादिसु कंठं । एवं वेउव्वियाहाराते । बाहिरभंतरगहणातो ट्टिता अट्टिता य । लोगमज्झगहणातो णियमा छदिसिं णया कम्मए सजीवपदेसावगाहमेत्तगहणातो, ण बाहिरसीमा करिसणातो ट्टिताणि चेव । अहवा वि ट्टिता जे ण एयंति वा वेयंति वा । जे एयंति वेयं (.....) ट्टिता वा एगम्मि वि आगासपदेसे एतेसु चेव सेसा वि देसो भाणितव्वो भासादिसु । छ । ॥ बितितो.

संठाण पुच्छा । संस्थानं आकाशवस्तुनः पुद्गललक्षणस्य स्कन्धस्य परिणामः विकल्पः । तं छव्विहं संठाणं । परिमंडल, वट्ट, तंस, चतुरंस, आयता, अणितत्थं च । पंचमं संस्थानं संसर्गजं,

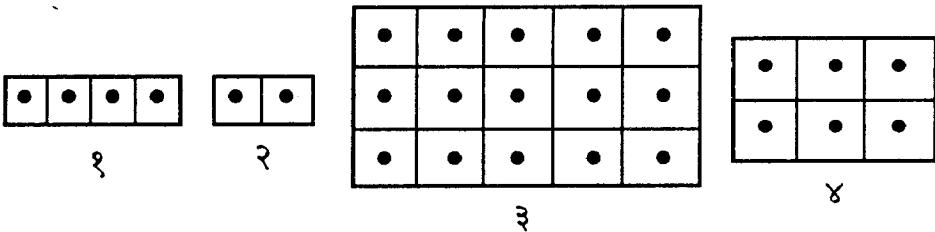
कस्यचित्तु कश्चिदवयव इति । एतेसिं सरूवं उवरिपदेससन्निवेसे भेदेण निरूवेस्सामि । उद्देसमेत्तमित्थं तु । परिमंडलसंस्थानानि द्रव्यतः अनंतानि । संख्यातद्रव्यतो नाम एकं परिमंडलं द्वे (त्री)णि यावदनन्तानि सकलसंस्थानः परिमंडलराशिरणन्तातो गोराशिवदेव शेषं संस्थानान्यपि । अल्पबहुत्वं, द्रव्यार्थतः सकलसंस्थानपरिमंडलराशिः प्रदेशार्थतः एकैकस्मिन् संस्थाने कियंति पुद्गलद्रव्यावयवपरमाणुरूपाणि संहतानि । उवरिणि रु० ते० हा० मो० एतेसिं दब्बावगाहेण तत्थ वीसयदेसो जहण्णा परिमंडलो मज्झ पसुसिरो तेण थोवा परिमंडला । वट्टो जहण्णो पंच पदेसो तेण असंखेज्जा वट्टा । चउरंसो चतुप्पदेसा जहण्णो तेण असंखेज्जा तंसो । जहण्णो तिपदेसो तेणासंखेज्जा, आयताण जहण्णो दुपदेसो तेण असंखेज्जा । जे जे असंखेज्जा जे जे थोवपदेसखेत्तावगाहिणो ते ते बहुतरा अणितत्थं संठाणं, एतेसिं चेव संजोगेणं, दोण्ह वा, तिण्हि वा संजोगेणं, एवं बि, ततित, चतुष्क, पंचग, संजोगेहिं णिज्जुज्जति । ते य सव्वेसिं सगासातो असंखेज्जगुणा दव्वट्टता मग्गिता । अहुणा अणितत्थं संठाणा दव्वट्टयाए रासी कज्जंति । तेसिं परिमाणमग्गणा । तत्थाणितत्थेहिंतो संठाणेहिंतो दव्वट्टया ते परिमंडलाणं संठाणाणं । जे पदेसा ते असंखेज्जा । एवं वट्टसंठाणपदेसरासी असंखेज्जो चउरंस तंस आयत्ताणि । तत्थ य देसवट्टी कायव्वा । एवं दव्वट्टपदेसट्टता गता । पुच्छा-ओहभणितविसेसट्टाणत्था रयणप्पभादिसु कप्पेसु य एक्केक्क जातिरासी अणंतो । तहा पोग्गलपरिणामातो । जत्थ णं भंते ! पु(च्छा) । परिमंडलं दव्वरासि कातुं तत्थ जे जे तुल्लपदेसा तुल्लखेत्तावगाहिणा तुल्लदव्वट्टा तुल्लवण्णादिपज्जवा तेवत्ती कातूण एगेणं जातीए एगट्टाण परिकत्ता ते जवमज्झं खेत्तं णिप्फातिज्जति । एगो दो, ति, चतु, पंच, छ, सत्त, अट्ट, णव पुणो, सत्त, छ, पंच, चतु, ति.बे. एगो । एवं परिमंडलरासिणिप्फणं । वेयिं अण्णेहिं वि पोग्गलेहिं णिप्फाइज्ज-इति । तदा खेत्तोवलक्खाणमेते पोग्गला उवखीणसत्तिणो, एवं से खेत्ते जवमज्झे परिमंडलाणं संठाणाणं, जत्थ एगो संठाणे तत्थ तेच्चेव कत्तिया होज्जा ? भण्णिति, अणंता । तहा दव्वपरिमाणातो तम्मि चेव एगपरिमंडलावगाहे सेस य संठाणा वि अणंता एव, एगेणं जवमज्झं कातुं तहेव मग्गणा णिद्देसो य । एते उहियालोगो अणिद्धिट्ठाणा अहुणा ठाणेहिं एतेसिं चेव मग्गणा रयणादिसु णिद्देसो य कंठो ।

उवग्घातो तस्सरूवणिरूवणत्थो वट्टेति । पुच्छा । वृत्तं समन्ततो तुल्लं गोलग इव । दुविहं घण पत्तरेति । तत्थ पत्तरं एग सरगं । तं पि दुविहं । उयं विसमं । जुगं समं । तत्थो य पदेसि एयं च पदेसे मज्झे एगं । चतुसु दिसिसु चत्तारि¹ । एवं खेत्तमवि एहिं अक्कंतं । एवं चेव घणं जया उवरि एगो हेट्टा य तथा सत्त पदेसं सव्वतो भमेणं । एगपदेसं वट्टितं जातं² । एतेसु पोग्गला कयादि पंच । असंखा अणंता

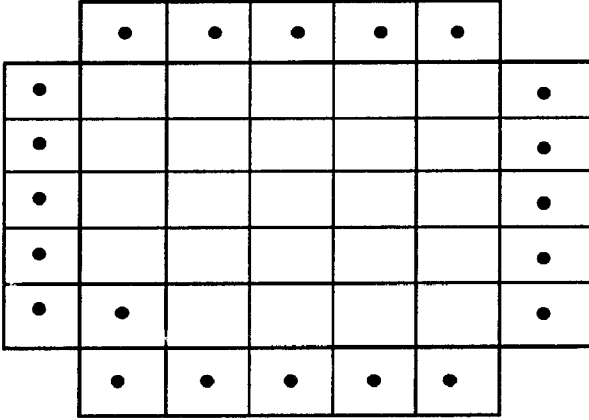
वा तोगाहिंति । जुम्मपदेसिए समयदेसिए समयं देसिए एग मज्जे चत्तारिदिसिसु दो दो^३ । एतस्स पक्खेत्तं च । एतस्सेव उवरिदुतितं पक्खित्तं । तहा मज्झिमस्सोवरिचत्तारि हेट्ठिमस्स य हेट्ठा चत्तारि । समंततो परिमंडलं घणं पत्तीस पदेसं^४ खेत्तं च । तहेव तंस पुच्छा । उयतं संति पदेसं । एगतो दो एगतो एक्को^५ जुगं छप्पदेसं । एगतो तिण्णितो ंएगो घणस्सो य पण्णत्तीसं, पंच, चत्तारि, तिण्णि, दो, एक्कं । कमेण हीणं तंसं कातुं चतुष्पदेसं तारिसंगो य (.....) ति पदेसं दुपदेसं एगं च पक्खिवित्ता घणं जातं समंततो पण्णरस पदेसं ।



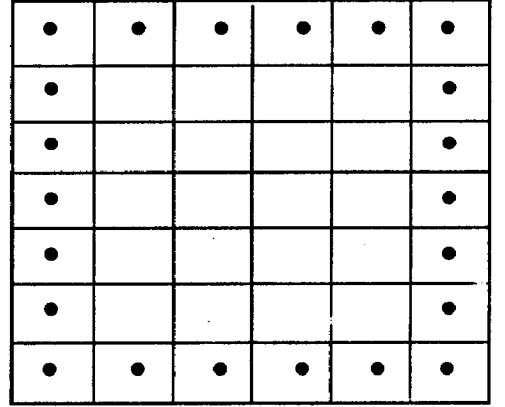
युगघणं णियस्सयहरस्सोवरि एगो चतुष्पदेसं जातं । चतुरंसं उयं समंततो दिसिसु दो दो मज्जे एगो णवगं तु जुम्मं दिसेसु एक्कोक्को णव पदेसोवरि दो पतराणि वि ताणि घणं चतुरंसं सत्तावीसंगं चतुष्पदेसस्स वि चतुष्पदेसघणं जुत्तं अट्टपदेसं आयतं, तं पिहं सेणियायतं दुविहं । तत्थो य एगतो दीहा तिण्णि पदेसा जुम्मं, दुपदेसयत्तघणो णत्थि^२ पतरायतं तिपदेस वित्थारं पंच पदेस वाहं^३ । उयं जुत्तं । छ । दुपदेस वित्थिण्णं तिपदेसं दीहं^४ तस्सेव उवरिं दो तारिसाणि तिपदेसवित्थिण्णाणि । पंचपदेस दीहाणि पक्खिहाहाणि घणं जातं । पणत्तालीसपणत्तालीसपदेसं । तस्सेव छप्पदेसजुत्तस्स तारिसमेवोवरि पक्खित्तं । बारसपदेसितं घणायतं जुत्तं जातं । परिमंडलं पुच्छा । दिसीपदिसी एयं च



वीसपदेसं^५ । अहवा दिसीपदिसीए चत्तारि, एगो विदिसीसु एवं बावीस पदेसं^६ । एतं पतरं ।छ।२२॥
परिमंडल एगम्पि परासिस्स चतुष्कयो भागाहारो कज्जति । तेणं णिल्लिविज्जंति । जति चत्तारि उच्चरंति
तो कडजुम्पो सो रासी भण्णति । अह तिण्णि तेयगो दोसु वातरजुम्पो । एगेण उच्चरंति ते कडजुम्पो
रासी भण्णति, अह तिण्णि तेयगो दोसु वातरजुम्मे एगेण कलिजुम्मे एक्को नियमा कली । एवं पंच वि



५



६

परिमंडला सव्वे रासिं कातुं चतुष्कहारेण अवहिज्जमाणातोहादेसेण सामण्णा देसेणं उप्पा
दव्वजोगित्तातो चत्तातो चत्तारि विहाणेण एक्कोक्को नियमा कली जोगी । एवं सव्वे ओघविहाणेहिं तुल्ला
परिमंडलेण परिमंडलस्स एगस्स । जे पदेसपोगला ते कयादि वीसं एकवीसं संखेज्जासंखेज्जा अणंता
तेण सव्वे जोगी । एवं सव्वेसिं एग संठाण पदेसरासी । अहुणा परिमंडलसंठाणपदेसरासी
चतुष्कयावहितो । तहेव चतुसु वि विहाणेण एक्केक्को पदेसो नियमा कली । एवं सव्वसंठाणा णेतव्वं
। अहुणा खेतोगाहणाए मग्गिज्जंति । परिमंडले णं भंते ! णियतस्स खेतारासिस्स चतुष्कयावहारेण
चत्तारि सेसा जाता वीसादीतो समोवगाहस्स चउविहस्स विभागे विहज्जमाणे पायरजुम्पो णत्थि । सेसा
सिय पुव्ववण्णियजहण्णुकुसवगाहस्स भागहारेज्जा तत्थ लब्भंति । तंसे कली णत्थि ण सा सिय । एवं
चतुरंसो बितीयो एगो य दिसि पायगे आयते सव्वे सिय सव्वपरिमंडलखेत्तावगाहेसु तत्थ पुव्वं
आकासवण्णितं । कडजुम्मेतेयगुप्पेण तप्पदेसावगाहिणो तेण कडजुम्मा तहाविहाणेण । एक्को वि
वीसादियदेसो कडजुम्पो चेव । णो सेसा ओघो देसो सव्व सामण्णो आकासलक्खणत्तातो विहाणो
देसेण पुव्ववण्णियमेव । जो जत्थ संभवति सो कंठो । एवं कालतो मग्गिज्जति । कालसमयरासिस्स जो

जाए ठिती वट्टति तस्स चतु भागहारे सव्वे सिय । एग समयादिठिति कातुं असंखेज्जत्तं पुहत्तेण वि एगेगत्तेण ति जाव भणितं । चत्तारि वि कालयो, पुणो एगेगम्मि एगो एगो समयादिणा चतुजोगी वि । एवं जावाणंततो कालतो गतं । भावतो एक्केक्को उहियविहाणेहि मग्गिज्जति । परिमंडले कालावण्णपज्जवेहिं चतुजोगी वि तहा सव्वपरिमंडलाण काला वण्णपज्जवा । कालावण्णपज्जवा चउहा वि । एवं नीलादिणो ओघविहाणेण तहा फासा । से सुहुमपरिणता तेसिं उवरिमा चत्तारि । जे पातरा तेसिं सव्वे मग्गितव्वा जहा परिमंडले । एवं सव्वे पि संठाणा वण्ण, गंध, रस, रूव, फासेहिं पंच दुग पंचट्ट विगप्पेहिं ओघविहाणविकप्पिया भणितव्वा ॥७॥

सेढीउ णं भंते ! इति । श्रियंत इति श्रेण्यः । जीवपुद्गलद्रव्यैर्यतिस्थानप्रदेशादिवित्पते श्रेण्यः आकाशस्थैव यद्यपि धर्माधर्मयोः संति, तथापि तत् प्रायोवृत्यधिकारादाकाशश्रेण्य एव गृह्यन्ते । तथाहि यो यो लोगालोगस्स अभिन्नातो चेव घेप्पंति, तेणाणंतापाईणपाडीणातो वि उहिता अमज्जातातो तेणाणंतातो, तहा सेसावि उहिता लोगागासो एत्थ समंततो लोगो परिछिन्नो तेण असंखातो । एत्थ वि उहियाओ लोगमज्जत्थायो । एवं उड्ढाधउदीणदाहिणंतादीणपाडीणातो चत्तारि वि, असंखातो ओहितातो चेव पदेसेहिं । के०दा०र०त० सट्टितेहिं, जो दायसिं छिज्जमाणाणं खेत्तपरमाणू सो य देसो । ते य एगाए वि अणंता उहिताए किमुत अणंतासु लोगागाससेणिप्पदेसपुव्वद्धस्स लोगस्स पविट्टणिक्खयदंतगस्स जातो दंतएसु सेढीयातो सो एगपदेसातो (दुपदेसादियातो वि) तेण संखेज्जा ते पदेसा लब्भंति । सेसा संखेज्जा अणंतयं णत्थि । तिरियासुं दोसु वि संखेज्जासंखेज्जयं । उड्ढाधायतासु असंखेज्जयमेव, जतो तासिं उट्टिताणं अहोलोगंते उड्ढलोगंते वा पडिघातो अलोगसेणितोहियपदेसपुच्छाए तिण्णि वि । तिरिच्छितातो णियमा लोगं फुसित्ता अणंतातो उड्ढमहायतासु रतणप्पभखुड्ढागयतरसंवट्टमूले संखेज्जातो तहा तप्पदेसवड्डीए, जावा संखेज्जातो एगो या दु अणंतराणिउड्ढाधाइयातो अणंतातो । एतासु तिण्णि वि सादितातो सपज्जवसितातो चउहा । पु०, उहियासु लोगालोगविकप्पो णत्थि । तेणाणादीया अपज्जवसियातो उड्ढादिसु चउसु वि सामण्णं । लोगागासे उड्ढादिसु चतुसु वि सादिसपज्जवसाणत्तमत्थि । आदि-अंतदरिसणातो अलोग पु०, ओहियासु चतुभंगो वि पादीण पदिणासु तिण्णि संभवंति । सादीअपज्जवसितातो रयणखुड्ढागपतरातो अलोयअणंतहावियातो तिरियं एतातो चेव विवक्खाए आणादीयत्तेण सपज्जवसाण णिदिट्ठातो लोगं पति जातो । हेट्टोवरि असंबद्धातो लोणेण ता अणादी-अपज्जवसितातो णो सादी सपज्जवसितातो उदीणदाहिणातो वि । एवं उड्ढाधायतासु चत्तारि वि । खुड्ढागपतरयाहिरसमीवआरद्धातो जाव दो य रुज्जूतो

एग बि ति चतु विगूहेहिं तिरियगमणोवातलकखणेहिं वाहिज्जंति । एत्थंतरो सादियायो सपज्जवसितातो तातो चेव वयणवसेणं अणादीयादिसपज्जवसितातो लब्भंति । तथा अपुट्ठातो अणादियातो अपज्जवसितातो सेढीतो पु(ट्ठातो) कडजुम्मातो । एत्थ सव्वातो अभेदेण अणंतातो गहितातो लोगागासे वि तयाहिगतो कडजुम्मातो चेव, एवं अलोगागासस्स उहियातो कडजुम्मातो एकेके उहिया पाईण पडिणोदीणदाहिणुद्धाधायतासु सव्वत्थ कडजुम्मातो दव्वट्ठाए । अधुणा सव्वोहियसेढीतो पदेसे कातूण चउक्कयभागावहिता चतुरुव्वरितातो चेव कडजुम्मातो । एवं उहियातो उद्धावयं पाइणपडिणोदीणदाहिणातो अहुणा भेदेण लोगागाससेढीतो पदेसेहिं उहितातो पादीणादीयातो य चत्तारि वि पु० उहियट्ठाणा कडया दंडाओ । पादीणपदीणोदीणदाहिणातो दो लब्भंति । जतो विग्गहजूहेसु खुड्डागरयणप्पभदुपदेसादिसमारद्धेसु दिसि पदिसिं वुड्डी हाणी दुगुणिया सो य नियमा चतु-दुग जोगिणी हवति । तेण दु जोगातो उद्धलोगे वि अहोलोगे वि तिरियलोगे वि । उद्धाधायतातो नियमा कडजोगातो चेव तथा चउक्कसमजोगा पदेसेहिं । अलोगसेढीतोहियपदेसपुच्छाए, नियमा चत्तारि भेदेण दरिस्सतिस्सातो पातीणपदीणोदीणदाहिणातो वि चतुजोगातो । तत्थ रयणप्पभखुड्डागबाहिरविग्गहणिज्जूहस्स य वितिए रज्जूएय ततिय रज्जूएव वा अंतराले संभवतो चतुजोगातो वि लब्भंति । एत्थ समे सेसा लोगे विसमं, विसमे तत्थ वि विसमं सेस रासी णियमा रज्जूपरयो तेणं एयम्मि चेवंतराले लब्भंति । उद्धाधायतासु वि एयम्मि चेवंतराले तिण्णि लब्भंति । णवरं कली एगो गो णत्थि । छ । (ग्रं ६०००)

सत्त विहातो अप्पणा उज्जूयातो गतिविसेसातो जीवपोग्गलाणं सहा अहोलोगो ९ णालीए वहियंतो वा जो पोग्गलजीवो वा उज्जूतावता तेच्चेवती एणंतो बितिय सेणिगमणं करंति । सो एगतो वंका जत्थ दो वारा वक्केति । सा दुहतो वंका ५ लोकणाली बहिरंते वा एगतो खहा । जो जीवपोग्गलो लोगजीवणालीतो वामपासातो पविट्ठो । लोगणालीए गंतुं पुणो वामपासे उववण्णो सा एगतो खहा । दो दुहतो खहा । वामातो दाहिणं गतो ९ चक्कवाला चक्कपादमिवागासदेसं भमितूणं परमाण्वादि उप्पण्णो ।०। तदद्धे अद्धा ।८। परमाणु-खंधाणं अपरेप्पेरिताणं विग्गहगतियाण य जीवाणं नियमा मणुसेणिगती । सेसाण वीसेणी विसेसं कंठं । पण्णवणाए य । संगहणि गाहातो-

पंच य बारसगं (खलु सत्त य बत्तीसगं) च वट्टम्मि ।

तियउक्कयपणतीसा, चत्तारि होंति तंसम्मि ॥

णव चेव तहा चतुरो सत्तावीसा य अट्ट चतुरंसे ।

तिय दुय पण्णरसे चेव छच्चेव य आयए होंति ॥

पणयालीसा बारस छेब्भेदा आततम्मि संठाणे ।

परिमंडलम्मि वीसा चत्ता य भवे पएसगं ॥

सव्वेवि आयतम्मि गेणहसु परिमंडलम्मि कडजुम्मं ।

वज्जेज्ज कलि तंसे दावरजुम्मं च सेसेसु ॥

सोलस कडजुम्मातो लोगे भव(कड) पादरातो तिण्णि भवे ।

अलोगम्मि चतुविगप्पा सेढी कलिवज्जिया चरिमा ॥छा॥२५॥३॥ जुम्मा कंठा ।

३सें	जु	उ	जु	उ	घ	जु	घ	परिम
३	२	५	६	४५		१२	४	पतर
								२०

३	वट्ट	उ	५	घ	सतं	उ	पजु	घ	प	चउरं	जु
७	प्प	५	जु	३	जु	३	६	उ	जु	उ	४
	जु		१२	३५	४			२७	८	९	
	३२										

णेरइयाणं मूलं रासि असंखेज्जा । तत्थ जहण्णपदं उक्कोसपदं च । कडजुम्मं असंखेज्जत्तातो सव्वण्णदेसणातो वा उववातं पडुच्च एगो वा पविसति दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा तेण सव्वे लब्भंति । अह जहण्णुक्कोसंतराले । एवं सेसाण कंठं । वणस्सतीणं अणंतो मूलरासी । तत्थ जहण्णुक्कोसपदेसु णियमा कडजोगो । तम्मि चेव सेस रासीतो उववज्जंतेहिं एगगादिएहिं चत्तारि वि, तहा सिद्धाणंतरासी । सेसपदा णेरतिग सरिसा । दव्वं छव्विह संखं भाणिरुणं धम्मत्थिकातो चउक्कदेण भाणणं देति । सेसो एक्को तेण कलिजुम्मो । एवं आगासाधम्मा वि एग दव्वत्तातो जीवत्थिकायातोहिओ अणंतकडजुम्मो ।

पोग्गलत्थिकायो अणंतो वि संघात-भेदभागीति कट्टु चतुव्विहा वि । अद्धासमयोऽतीत-वट्टमाणाणागतो रासी, कतो ? जहा जीवत्थिकातो । एतेसिं जीवपदेसा । जे परमाणू भिज्जमाणा हवंति ते पाडिकं रासी कातूणं मग्गिज्जति । चउक्कतावहारसेसताए ववत्थि असंखेज्जगाणंतगातो जहासंभवं कडजुम्मा धम्मादतो सव्वण्णुदेसणातो वा सभावसव्वसिद्धंतप्पसिद्धस्सवग्गमातो वा अप्पबहुं पणवण्णा एग दव्वाणं । आगासं सेस पंच दव्वाणं । द्वाणपदेयं जहा आसणादिपुरिसाणं तेणागाढो धम्मत्थिकातो आगास-पदेसेसु णियमा लोगागासपदेसा णित्तत्तातो दोण्णि वि । असंखेज्जया ते वि य पदेसा पुव्ववण्णितववत्थिता संखेज्जत्ताओ कडजुम्मा । एवं अधम्मागास-जीव-पोग्गलद्धातो वि कडजुम्मोगाढातो, एगो जीवो दव्वट्टताए कलिजुम्मो । एवं णेरइय सिद्धंता णेता । एगत्तेणं ओघा देसो जीवसामण्णया । एते अणंता तेण कडजुम्मा । एगो तहेव विहाणादेसेण एवं । कंठं सेसं । अहुणा एगस्स जीवस्स पदेस चतुष्कएणावट्टिज्जंति । ते य असंखेज्जववत्थितागासं । जहा संसारिस्स पंचसरीरा जहासंभवतादेस मग्गहणा ते जइ वि अणंता तहा वि उप्पात-विगम-धुव-तदुभयसंभवातो चतुहा वि । ओघ जीवपदेसाणंता कडजुम्मा सव्वजीवसरीरपदेसा अणवट्टितत्तातो तहेव चतुहा विहाणादेसेण वि अणवट्टिता संखेज्जहत्थिमसमावगाहविसेसातो चतु द्वा वि । सिद्धाणं णियमा ओहविहाणेहिं जीवपदेसाणंतगतं पडुच्च ववत्थिता संखेज्जगतं च कडजुम्मा चेव । ओहियजीवोगाहो ओहितजीव तुल्लो । विहाणोगाहो चतुव्विहो वि णेरइयाणं ओहादेसोगाहो वि चतुव्विहो जाता । वट्टमाणणेरइया जहण्णुक्कोसा जहण्णट्टिति विभागिणो विहाणादेसेण वि अणवत्थितोगाहातो चेव पाडेकं चतुहा भयणिज्जा । एगेंदोआगाहो अणंतो सो जीवोगाहतुल्लो ।

अहुणा जीवो एगत्तेण कालेण मग्गिज्जति । तत्थ तीताणागत-वट्टमाणद्धाए अत्थि जीवो सायद्धा कडजुम्मा । णेरइयादिसु आउपज्जयसमयाणवत्थणातो सिय चत्तारि वि । एवं जाव वेमाणिया सिद्धे अवट्टितत्तातो जहा जीवो सिद्धजीवातोहविहाणेहिं अवट्टितत्तातो कडजुम्मा । णेरइया ओहादेसविहाणेहिं चउव्विहा विभतितव्वा । एवं जाव वेमाणिया ।

जीवेणं भंते ! कालावण्णपज्जवेहिं एतेय जीवस्स पंच सरीराणा-पाणुभासा-समणादिसु लब्भंति । एगगुण बिगुण तिगुणादतो वण्ण-गंध-रस-फास-संठाणविगप्पणभिन्ना । तत्थ जीवा पदेसेसु एतेण सत्ति चेव, अवण्णागंधादित्तातो तहप्पदेसाणं सरीरा संति ते य जति वि अणंता तहा वि अणवट्टितपोग्गल वण्णादित्तातो चउहा, जाव वेमाणिया सिद्धे णत्थि चेव पोग्गला, एगत्तपुहत्तेण वि ओहादेसो सव्व जीवाणं

अणवद्वितत्तातो चतुहा । जाव वेमाणिया आभिणिबोहिता जीवावरणविण्णेषाणत्तभेदेणं भिज्जति अणंतहा । तत्थ जति वि अणंतयत्तमणवद्वितं ति कट्टु सव्वजाती एगस्स एग गुणं णाणं बितियस्स विगुणं जायमानयूनजीवद्वयप्रत्यक्षज्ञानभेदवद्भिन्नं । चत्तारि णाणा तुल्लो केवलअणंतणेयावहितत्तातो कडं चतुरो णाणं जदा तदा । अण्णाणा तिण्णि । जहा तिण्णि दंसणा केवलदंसणं तहा । केवलणाणं तस्स वरित्तातो । से यः सक्रियत इत्यर्थः । सिद्धदेसो कोऽपि चलति को ति न, या दव्वया योद्धारस्थितगमनवत् । परमाणु दुपदेसा तिपदेस, चतु-पंच-छप्प-सत्त-अट्ट-नव-दस-संखे-असंखे-अणंतपदेसा पत्तेयं एगो एगो रासी अणंतो । एवं एगपदेसोगाढा अणंता, एवं दुपदेसादिया असंखेज्जपदेसोगाढा अणंता पाडेक्कं, एवं कालेण वि । एगसमयठितीया अणंता जाव असंखेज्ज समयद्वितीया जाव पाडेक्कमणंता । तहा भावतो वि । एगगुणकालगा अणंता । तह दुगुणादीया अणंता काला जाव तहा गंधादिसु सभेदा रस-फासेसु ता जाति पाडिक्काणंतया भाणितव्वा । दव्व-खेत्त-काल-भावा दंडभणिता ।

परमाणु आदी अणंतया देसियत्तो पत्तेयमणंततो भणितो । एत्थप्पबहुत्त चिंतिज्जति । अणंतगते वि सतिकेक्क बहुतरा होज्जासी । एतेसि णं दव्वट्टताए परमाणु दुपदेसिय-तिपदेसिय-चतु-पंच-छ-सत्त-अट्ट-नव-दसपदेसियाणं संखेज्जय अणंतपदेसियाण य । कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुवा वि, तत्थतु दुपदेसिएहिंतो परमाणवो बहूया सुहुमत्तातो एगत्तातो य दुपदेसिया थूलाएण तेहिंतो थोवा । एवं अणंतराणंतराणं पढमल्लता बहुया जुया जाव दसपदेसिता दसपदेसिएहिंतो संखेज्जपदेसिताणं संखेज्जाइं ठाणाणि बहूणि कट्टु, तेण ते बहूतातोहिता होऊणंते जिणंति संखेज्जअसंखेज्जाणमसंखेज्जाणि द्वाणाणि । तहा बहुसुहुमपरिणामातो ते बहूसु अणंताण वि ते चेव थोवा बातराणंतपरिणामिणो त्ति कट्टु, दव्वट्टता गता । एस चेव रासी पदेसट्टताए मग्गिज्जति । तत्थ परमाणूमि पदेसा णत्थि । सो सयं पदेसो ण तस्स पदेसा परमाणूतो दुपदेसो पदेसट्टताए पच्चक्खमेव दिस्सति बहू । एवं उवरिमो चरिमा जाव असंखेज्ज पदेसिता अणंतपदेसिताहिंते वि बहुता तेसिं बहुत्तातो पुव्वभणितं चेव । एते चेव खेत्तोवलक्खणावगाहेण मग्गिज्जंति । एगपदेसा नियमा परमाणू ओगाहति । दुपदेसितो एगम्मि दोहिं य तहा सेसा तेण तेण घेप्पंति परिसेसातो परमाणुरेव एगपदेसणिद्वेसेण लक्खिज्जति । तहा दुपदेसो चेव तस्स तम्मि तेण णियमा, एवं ति पदेसियादिसु जाति-खेत्त-परमाणू-ततित दव्वपरमाणू खंधविशेषा दट्टव्वा । एवं जावणंतेहिं असंखाणंता सिद्धा, एसो य दिट्ठणातो बहुसंभवे केण ति उवलक्खणं हवति ।

जहा सामो वा लंबकण्णो वा देवदत्तो । एवं दव्व-खेत्त-काल-भावेहिं तमेवादिपरमाणुयादिहिं जहाभिहितं अव्वभिचारी लक्खणबहुसंभवेहिं वि केण ति उवलक्खणं हवति । उवलक्खिस्सं णो खेत्तादतो सबलेणेत्थ संपज्जति, तहा लक्खणयणातो अप्प-बहुत्तस्स । एगपदेसोगाढा दुपदेसिता खंधा । तेहिं ण परमाणवो चैव बहुताते य विसेसाधिया । पुव्ववण्णियमेव परमाणू बहुत्ते कारणं । एवं अणंतं पढमा बहुता जाव दसपदेसोगाहो संखेज्जपदेसोगाढा । संखेज्जबहुत्तहा द्वाणातो बहुता, तहा असंखेज्जा-तदुत्तरा अणंतातो चैव अणतगं चैव लक्खेति । तहाविह खेत्ता संभवातो एते दव्वड्डताए मग्गिता पदेसड्डताए वि । खेत्तोवक्खणावगाहेण ते च्चैव जहावत्थिता पोगला लक्खिज्जंति । एवं संति पुव्ववण्णित तमेवाप्प-बहुलक्खणं, उवरि उवरि य परमाणुया वि दुपदेसिवाड्डितं जाव दसपदेसा, पदेसड्डताए बहुता । तेहिंतो संखेज्जपदेसोगाढा संखेज्जपदेसिया खंधा बहुता, ततो असंखेज्जपदेसोगाढा । असंखेज्जपदेसिता पदेसड्डताए बहुता, एते चैव कालेण मग्गिज्जंति । तत्थेक्कसमयड्डितीया परमाणवो घेप्पंति । तहेवोवलक्खणत्थो कालो । एवं सति दव्वड्डताए पुव्ववण्णितं तहद्वाहुत्तं य बहुत्तं जाव असंखेज्ज साववादं पदेसड्डताए वि उवरिहुत्तं बहुत्तं असंखेज्जा य वादभणितं णेतव्वं । एवं वण्ण-गंध-रसेहिं । जे य फाससुहुम-गंधसंभविणो बातरेसु जे फासा ते बातराणंतपदेस-खंधोवलक्खणा दव्वड्डताए य पदेसड्डताए तेसु चैव जहाभिहितोवरि बहुत्त पदरिसगा चैवप्प-बहुत्ते । एतेण वि खेत्तादओ दव्वोवलक्खणया भणिया, तेणंतवादेसु तेयं भिण्णप्पबहुत्तातो । एतेसु य दव्वड्डपदेसड्डोभयड्डया कंठा । अणंतबातरेसु भाणितव्वा । उवरिहुत्ता णेतव्वा । दव्वड्डपदेसड्डता वि जहा दव्वेसु भणिता तहेव खेत्तादिसु वि । सव्वत्थोवा दव्वड्डपदेसड्डताए अणंतपदेसिता खंधा । दव्वड्डताए बातराणंतखंधपरिणामथोवत्तातो । तेसिं चैव जे पदेसा ते एगगम्मि अणंता तेणाणंतगुणा । ततो परमाणू तेहिंतो अणंता, असंबंधपरिणामबहुत्तातो । ततो संखेज्जपदेसिया खंधा । दव्वड्डताए बहुठाणत्तातो संखेज्जगुणा तेसिं चैव पदेसा एगो संखेज्जा तेण संखेज्जगुणा । ततो असंखेज्जपदेसिया खंधा । दव्वड्डताए ठाणा संखेज्जबहुत्तातो । असंखेज्जगुणा तेसिं चैव पदेसा पाडेक्कखंधे असंखेज्जति कड्डु असंखेज्जगुणा । एवं खेत्त-काल-भावेसु उभयड्डताए वि एवं चैवप्प-बहुत्तं । छ॥

परमाणुया जावाणंता ताव एगत्तेण कलिजुम्मा पुहुत्तेण बहुत्तेण चउव्विहा वि । तहा पदेसड्डताए परमाणुआदिता पत्तेयं एगत्त-पुहत्तेहिं मग्गितव्वा । कंठा । एतो चैव ओगाहेण खेत्तत्थाए मग्गिज्जंति । तत्थ परमाणू णियमा एगपदेसोगाही दुपदेसिओ, एगम्मि दोहिं पदेसेसु तिपदेसो, एगम्मि दोसु तियसु चतुष्पदेसो, एगम्मि दोसु तिसु य चतुसु य । सेसं कंठं ।

परमाणवो ओहादेसेण णियमा सव्वलोगखेत्तावगाहिणो तेसु कडजुम्मा । एवं दुपदेसितादतो वि विहाणपुहुत्तोगाहणाहिं भाणितव्वो । कालतो वि सव्वजातीतो परमाणुआदितातो मग्गिज्जंति । कंठा । ते पि एवं वण्णेहिं पि कडादतो णेतव्वा । कंठा । कक्खडादतो बादराणंतेसु चेव भाणितव्वा । भिज्जमाणं दव्वं जं दोहिं समभागेहिं ट्ठाति त्ति तं सङ्गं विसमभागं, अणङ्गं परमाणुआदिसु, कंठं । परमाणूणं पोह त्ति । ते बहुत्तेण सङ्गणिरङ्गा तम्मि वा ट्ठाणे ठाणं परिणतं वा सेगं सक्कितं भवति दव्वं, साततम्मि किरिता जहण्णा एग समयं उक्कोसा आवलिया संखेज्जभागं, सव्वत्थ उस्सग्गो णिक्खेत्ता णिप्पकंप्पपरिणामो, सो जहण्णो तेगसमतो उक्कोसो असंखकालो, उस्सग्गो एत्थ य संठाणं असंबद्धं विजातीए परट्ठाणविजातिगमणं परमाणू सट्ठाणे । कंठं । परट्ठाणेण एगसमएणं दुपदेसिएण बद्धो वितित समए मोत्तूण चलितो जे उक्कोसेण णियमा असंखेज्जकाले खंधोणं भिज्जिस्सति ततो परमाणूत्तं लद्धूणं चलिस्सति । दुपदेसितादिसु परट्ठाणमुक्कस्स अणंतो, जतो अणंतेहिं पोग्गलेहिं सह बंधं कातुं खुणो तेण परमाणुणा दुपदेसियत्तं पडिवज्जिस्सति । एत्थ य सक्को निरेक्कस्स जहण्णो उक्कस्सो य अंतरे देतव्वो कालो । तहा णिरेक्कस्स दुविहो वि सेसकालो ओहेण सव्वट्ठाणेसु । से कताए णिरेगताए य अविरहितो लोगो । अप्प बहुं जहा दव्वबहुत्तं । परमाणुआदिसु चउसु सेग-निरेग-पत्तेयभिन्नेसु कंठं । दव्वट्ठता विसेसितेसु वि जहा दव्वमग्गणा ते पढमं भणितं । तहा सेग-णिरेगभिन्नेसु चतुसु अट्ठभेदेण भाणितव्वं । एताणि चेव पदेसट्ठताए अट्ठ ट्ठाणाणि जहा दव्वमग्गणा ते य देसट्ठप्पबहुं । दव्वपदेसताए वि सत्त ट्ठाणाणि सेग-णिरेगेहिं चोद्दस । एत्थप्पबहुं(त्तं) पढमं भणितं जहा तहेव णेयव्वं । कंठं । देसे जोगस्स एगावयवो एतति । एगे णीरेगसाहा एग कम्पइव जहासंभवं भाणितव्वा । देस सव्वेयंतातो ते सेगणिरेगेहिं स अंतरणिरंतराहिं णेतव्वा । परमाणू वि परट्ठाणमवि असंखेज्जंतो खंधस्स वि एत्तितो कालो ततो परमाणुत्तमवस्संभावि दुपदेसितादीणं परट्ठाणंततो जतो सेस पोग्गलेहिं अणंतेहिं संबंधो । परमाणुपोग्गलाणं सट्ठाणे सेगणिरेगप्पबहुं । दुपदेसियादिसु सव्वेगदेसेगणिरेगे ताता तिविहा अप्प-बहुत्ता । कंठा । अहुणा परमाणू संखेज्जय अणंतय । एगेगसेगनिरेगदेसेहिं दव्वट्ठताए जहा दव्वमग्गणाए तहा कंठं । एकारस संठाणितं । अहुणा सुद्धपदेसतादे वि एगारसठाणाणि जहा दव्वट्ठताए ते णवरं असंखेज्जपदेसिएसु पदेसट्ठताए वि असंखेज्जता, किं कारणं ? जतो एतस्स मूलट्ठाणं असंखेज्जयमुक्कस्सं एगरूवेण असंखेज्जतं ण पावति तत्थ पदेसट्ठताए हवति । उभतट्ठताए दव्वट्ठपदेसट्ठताए दव्वट्ठता देससव्वणिरेगेहिं तिविहा । तहा पदेसट्ठता वि छव्विहा परमाणुसु व चत्तारि सव्वाणि अट्ठावीसट्ठाणाणि ।

एत्थप्प-बहुत्तं पुव्ववण्णितं कंठं । धम्माधम्मागासाणं रुयगमज्झावगाहिणो अट्टपदेसा मज्झं जीवपदेसावगाहो णेतव्वो । एत्थ य संदिट्ठमेवप्प-बहुत्तं काला दो पोगलगतं । पंचवीसतिमे चउत्थो समत्तो ॥२५।४।छ।

समय-आवलिया-आणापाणु-थोव-लव-मुहुत्त-दिवस-अहोरत्त-पक्ख-मास-उडु-अयण-संवच्छर-जुग-वास-सतवास-सहस्स-(दसस)हस्स-पुव्वंगपुव्व जाव सीसपहेलिता-पलितोवम-सागरोवम-उस्सप्पिणि-पोगल-परियट्ट-तीतद्ध-अणागतद्धं । सव्वद्धातो ठावेतूणं मग्गिज्जंति । समतादिएहिं एत्थ एगा आवलिता । किं संखेज्जा समता असंखेज्जा समता अणंता समता ? पुच्छा । असंखेज्जा समता आदि अंता पडिअंता । एवं जाव उस्सप्पिणी पोगलपरियट्टो णियमा अणंतसामातियो तहा तीतद्धाणागतद्ध सव्वद्धातो वि, एगवयणेणं अणंतातो नियमा । एवं पुहत्तेण मग्गिज्जंति । आवलितातो किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता समता ? तत्थ संखेज्जयं णत्थि असंखेज्जगं वा, अहवा जातो पोगलपरियट्टादि अब्भंतरतो ततो अणंतातो । एवं सिय असंखेज्जातो सिय अणंतातो । एवं जाव पोगलपरियट्टो । पोगल परियट्टे णियमा अणंतातो तहाचरिमेसु । एवं आवलितातो आणापाणुआदिएसु एगत्त-पुहत्तेण पुच्छिज्जंति णिदिस्संति । तं जं जत्थ संखेज्जासंखेज्जाणंत गतं । कंठं । एगत्त-पुहत्तेण णेतव्वमणंतराणंतरंतुत्तरादिसु जाव अणागतद्धा किं संखेज्जातो तीतद्धातो त्ति ? । तत्थ बुद्धीए उदाहरणं-तीतद्धा दो समता, अणागतद्धा वि दो, वट्टमाणा समतो सो य अणागतद्धाए गग्गिज्जंति । तेण तीतद्धातो अणागतद्धा समयहितो तीतद्धा समयूणा जाता । तहा सव्वद्धाए सह तीतद्धा । तत्थ सव्वद्धा गहणेण तीताणागतद्धा ओहिता गहिता । बुद्धीए तीतद्धा उवरित्ताणं मग्गिज्जति । तत्थ सातिरेग दुगुणा कथं जाता ? वट्टमाणो समतो अबणीतो तत्थ तीतद्धाणागतद्धातो दो वि मेलितातो दुगुणाओ जातातो वट्टमाणरूवमहितं । अहुणाणागतसव्वद्धातो मग्गिज्जंति । कंठा सुत्ता । सव्वद्धाणं अणागतद्धातो जो सो वट्टमाणो समतो तेण रूवेण ऊणा दुगुणा तेण थोव्व सव्वदुगुणरूवा । सेसं कंठं । ॥छ।

पण्णवण-वेद-रागे-कप्प-चरित्त-पडिसेवणा-णाणे,
तित्थे लिंगं सरीरे खेत्ते काले गति संजम निकासे ॥१॥

जोगुवतोग कसाए लेस्सा परिणाम बंध वेदे य ।
कम्मोदीरण उवसंपजहण सण्णा य आहारे ॥२॥

भव आगरिसे कालंतरे य समुघात खेत्त फुसणा य ।

भावे परिमाणे खलु अप्पाबहुत्ते नितंठाणं ॥३॥

कति णं भंते ! नितंठाणं ? पुच्छा, पंच कंठा ।

पुलागो असारो जहा वण्णेषु पलंजी, एवं पंचसु ठाणादिसु णिस्सारत्तं जो पडिवज्जति सो पुलागो । लिंगपुलागो लिंगातो पुलागी होंतो । अहासुहो एतेसुं चैव थोव विराहगो । बकुसो सरीरसुस्सुसाभिरतो, अंततो दूसिंतावणगो आभोएण जाणंतो करेति । अणाभोगेणं जाणंतो संथुजे अजाणिज्जंतो अहवा संवुडो मूलगुणादिसु, असंवुडो तेसु चैव पंचहा-उच्छ्रितं शीलं यस्य पंचसु प्रत्येकं ज्ञानादिसु सो कुसीलो दुविहो-मूलतो पडिस्सेवणाकसायकुसीलो, तस्सेवणा सिस्साराधना विवरीता पडिगता वा सेवणा पडिसेवणा पंचसु ५ । कसातकुसीलो जस्स णादिसु कसाएहिं विराहणा कज्जति णितंठो-णिग्गतगच्छो उवसंतकसातो खीणकसातो वा अंतोमुहत्तकालितो पढमसमतो अंतोमुहत्तस्स समयरासीए आदि पडिवज्जमाणो चरिमो अंतो समतो सेसा अपढमो, अचरिमा आदि मज्झ अद्धा सुहुमो एतेसु सब्बेषु सिणातो स्यातः । मोहणिज्जादिचतुकम्ममलववगतो सिणातो । अच्छवी अव्यथकः सबलो सुद्धासुद्धो एणंतसुद्धो असबलो, अंशाः अवयंशाः कर्माख्याः ते अवगता यस्य सो अकम्मंसो । संसुद्धाणि णाणादीणि धारेति । संसुद्धाण-दंसणधरो, अरिहो पूजाए, जितकसातो जिणो, एसो पंचविहो सिणातो । एसो सदत्थो भणितो । एत्थ य सब्बेसिं च लद्धित्थाणाणि । पुलागलद्धी णामं जा चक्कवट्ठिं सबलं सवाहणं संचुण्णेति सरीरा, तहा-बकुसठाणाणि संजमठाणाणि तव्विहाणि । तहा कुसीलणियंठसिणाताणं पाडेक्कं भाणितव्वाणि । पणवणाए पदं गतं । वेदे त्ति, तव्विहा लद्धी इत्थीए णत्थि । बकुसपडिसेवणा कुशीला तिविहा वि । कसायकुसीलो सवेयगो अवेदणो वि उवसंतवेदो वि णोवासेणीतो उवरिहुत्तवत्तीणियंठो दुविहो ति । अवेदतो सिणातो खवियवेदतो चैव सरागे त्ति य कंठं । ‘कप्पेति पदं’ - “आहेलुकुद्देसिय सेज्जायर रायपिंड कतिकम्मे । दति जेट्ट पडिक्कमणे मासं पज्जोसवण कप्पे ॥१॥” एतेसु दससु ठाणेषु पुरिम-पच्छिमाड्डिता तेण ते ठितकप्पा मज्झिमा ठिता य सभवतो णातूण भाणितव्वं । तेण ते अड्डिताड्डितकप्पा । तहाविहलद्धिठाणपत्तीतो । कंठा । पुलागादिसु तहा बि ति वयं वक्खाणं कप्पस्स । जिणकप्पो थेरकप्पो । अतीतकप्पो तिविहो ठाणेषु कंठा । चरित्तं पंचविहं । सामाइयं छेद० परि० सु० अहक्खातं पुला(गा)दिसु कंठं । पडिसेवण त्ति दारं, पडिसेवणा तस्स ठाणस्स आसेवणा सा य मूलूत्तरगुणलद्धीणं पडिसेवणा पुलागादिसु संभवतो कंठा । णाणपदं कंठं । पुलागादिसु

सुतमविष्णाण पदं । तत्थ पुलागो णवमपुव्वं ततिय आहारवत्थूतो जाव णव संपुण्णपुव्वी । एत्थंतरे आरतो वातरतो वा तं लद्धिण लभति । सेसं कंठं । सुत्तवतिरित्तो केवली । तित्थे ति दारं । जं तित्थकरेण कज्जति तं तित्थं । अतित्थियो पत्तेयबुद्धो तित्थकरो वा पुलागादिसु भाणितव्वं । लिगं ति दारं । लिगं दुविहं-दव्व-भावेहिं । दव्वलिंगमवि सलिंगमवि सलिंगं रयहरणादीतरलिंगं घरत्थतच्चणितादि, आगासे तणितओ भावो णियमा णियमिज्जंति । पंचसु कंठो ।

सरीरं ति पदं । पंचसरीराणि तेसिं संभवो कंठो । पंचसु खेत्ते त्ति- कम्माकम्मभूमिभेदेण कंठं ।

जत्थ जायति तं जम्मं । संति भावो तत्थ सो अत्थि तत्थ संभवो साहरणं पुव्वसंगतिगदेव, विज्जाधरादिकतं । काले ति दारं- सो तिविहो । उस्सप्पिणि, ओस्सप्पिणि णोउसप्पिणि, णोओस्सप्पिणि छव्विहा । उस्सप्पिणी वि कंठा । तत्थ पढमतित्थकरकालो । आदी जाव दुस्समा जम्मतो संहरणतो तत्थ पुलागलद्धीए वट्टमाणो ण सक्किज्जति उवसंघरित्तुं, पलिघा नाम एतासिं जो ता कडेक्काणुभागो सुसमादीणं एवं एतेण कालेण मग्गितव्वा । पुलागादतो कंठा । एत्थ य सिणादीणं जो संहरणादि संभवो सो पुव्वोवसंहरति णं । जतो केवलिआदिणो णोवसरिज्जंति । गति त्ति दारं-पुलागादिसु कंठं । णवरं विराहणा णाणादीणं । अहवा लद्धीए उवजीवणा । संजमे त्ति दारं-संजमो सत्तरप्पकारो, चारित्तववत्थाणं वा, तत्थ सव्वागासपदेसगं । सव्वागासपदेसेहिं अणंतगुणितं । पढमं जहण्ण संजमट्ठाणं हवति । एरिसता असंखेज्जा ठाणा संजमस्स पुलागस्स हवंति । पडिता ठाणीता जीवस्स । णाणावरणिज्जादिसु ठिति णाणाणि एताणि । पुलागबकुश कुशीलाणं पत्तेयमसंखेज्जाणि ।छ।

णियं च सिणाताणं एगमेव अजहण्णुक्कोसं ठाणं । किं कारणं ? मोहणिज्जादि पडिउवसमखवितावत्थाणविसेसातो परिणामा पुणाइं अणंता, तम्मि संजमठाणे एतेसिं चेव बहुणा संजमठाणप्पबहुं चिंतिज्जति ।छ। तत्थ जवमज्झं खेत्तमालिहितुं उवरिणियंठसिणाताणं एगं अजहण्ण संजमठाणं अणंतचरित्तपज्जवणिप्फण्णं कज्जति । ततो पुलागसाहम्मं कुसीलस्स य । तस्सोवरि बकुस पडिसेवणा कुसीलट्ठाणाणि कज्जंति । पुलागो वोच्छिज्जति । कसायकुसीलो उवक्कमति चेव, ततो बउसो वोच्छिज्जति कसायकुसीलपडिसेवणाकुसीलाणं संखेज्जठाणाणि उवरिहुत्तं गच्छंति । ततो पडिसेवणा कुसीलो वोच्छिज्जति । ततो असंखेज्जाणि ठाणाणि गंतूण कसायकुसीलो जवमज्झखेत्तंते वोच्छिज्जति । एत्थप्पबहुं सट्ठाणपरट्ठाणेहिं पाडितव्वं । सट्ठाणं पुलागस्स पुलागो । सेसा परट्ठाणं । उक्कोसमजहण्णाणि एतम्मि खेत्ते लब्भंति । पढमं संजमट्ठाणप्प-बहुत्तं, ततो चरित्तपज्जवप्प-बहुं जहण्णुक्कोसमज्झिमाणं ।

चउट्टाणा छट्टाणावडणा जहासंभवं जोएतव्वा । एयम्मि खेत्ते उवरिमं णियंठसिणातठाणं ।छ। जो यदि सिणातो अजोगी सेलेसित्थो सागारोवयोगजुत्तं । सकसायकुसीले चतुसु सव्वेसु तिसु उवसमसेणीए दो दो एंगंतरे संभवतो अवलोगेतव्वं । जाव लोभाणू नियंठो णियमा दुविहो वि । सुहुमोवरिगंतो अंतोमुहुत्तो अकसायी तहा सिणाते खीणत्तेणाकसायीलेस्सा कंठा । परिणामो जस्स वट्टति उक्करिसं गच्छति तहा हासं अवस्थानं वा, सो य परिणामो तीए वा जातीए जातीए अण्णजाती मीसादिरूवो वा वट्टमाणदितो सव्वत्थ । णियं च सिणाताणं हायमाणत्तं णत्थि । जतो पडिपडंतो णियंठो कुसीलत्ते विसती उवरि सुद्धित्थाणविसेसातो, सेसं अत्थि । पुलाए वट्टमाणपरिणामकाले लक्खणं कसायट्टाणातो वट्टमाण परिणामो बाधितो पुलागेगआदिसमयं फुसति । पुला० सपरिमंतातोवायवादितो कसायादिसु गच्छति । णियमा तत्थ णो मरति । बकुसादिसु मरणं च लक्खणं णियंठस्स तम्मि चेव ठाणे अंतोमुहुत्ते परिणाम विचित्तातो जाणितव्वा ।छ। अवट्टिते जहणत्ते तत्थेक्को समते मरति । एवं समतो सिणाय वट्टमाणपरिणामता सेलेसि वट्टमाणो परिणामो अवलोगेतव्वो । सो च्चेवावट्टाणे जहणकाले मरति । उक्कोसे देसूणो पु० कसातकुसीलो छव्विहबंधतो सुहुमसंपरागावलोए । सेसं कंठं । बंधो गतो । 'वेदे'त्ति णियंठो मोहणिज्जेण वेदेति । चत्तारि सिणातो कंठातो उदीरे त्ति ।५। पुलागो दो पुव्वोदीरितातो पविसति पुलागलद्धिं । एवं जो च्छण उदीरेति सो पढमं उदीरित्ता पविसति । सिणातो दोण्ह उदीरणातो गेण्हति । उदीरितो दो पुव्वोदिण्णाणि उवसंपज्जहणा उवसंपज्जंतो किमवि जहति जहंतो किंपि उवसंपज्जति पज्जवंतरं जहा पिंडो उवसंपज्जित्ति । तत्थ पुलागो पुलागत्तातो फिडमाणो कसायकुसीलस्स जम्मणंताणि मरणादीणि उवसंपज्जति । एवं जो जेणाणंतरूवेण संबद्धो सो तं पडिवज्जति । एयं च जहा खेत्तालिहणाए फुडमवलोएतव्वं । जाव सिणातो त्ति कंठं च । णोसण्णा णाणसण्णा भण्णति । संभवतो कंठा । आहारगत्ते य लोवाहारो भवा सव्वेसिं कंठा । आगरिसा एगभविया वा अणेगभविया वा । कंठा । पउसेयव्वा दुप्पव्वाणा दट्टव्वा । परिणामा वा पुलागाणं बहवो जहण्णितातेगसमए अण्णस्स विगमो अण्णस्स पडिवत्ती । उक्कोसेणं बहवो अंतोमुहुत्तित्ता । एवं णियंठाणं पि । एवं एगमेव पडुच्च बहुए य पडुच्च मग्गणा । एत्थयाणंतो लब्भति । पोगलपरियट्टे सेणीएहिं अविरहितो लोगो त्ति कट्टु सेहिं णियमा छम्मासा पडिवज्जंति । समुग्घाता कंठा । खेत्तागासफुसणाए णियमा असंखेज्जतिभागेसु एगजीवावगाहो । तेणारिल्ला पंचवि संखेज्जतिभागावयाहिणो सिणातो समुग्घातं गच्छति । तेणव संखेज्जतिमेवभागे सरीरत्थो असंखेज्जेसु वा दंडादिसु जाव सव्वलोगं ण पूरेति सव्वलोगे य पूरिते भागो भागा य पडिसिद्धा संखेज्ज

तहाविहकालादिसंभवातो । भावा कंठो । अप्प-बहुं । तत्थं पडिवज्जमाणेगो नाम, जो वट्टमाणसमए तं लद्धिं पडिवज्जति । पुव्वपडिवण्णगो जो अतीतकाले पडिवण्णो आसी । एक्केक्के जहण्णुक्कोसो कंठो । एत्थ य जत्थ तुल्लाणि पुहुत्ताणि एगसंखाए जहण्णुक्कोससंठाणेसु णिद्धिस्संति । तेसिं एगं लहुत्तरं पुहत्तं बितितं ततो बहुत्तरं एगादिसु णवपज्जत्तेसु णियमेज्जा । अट्टसतं बावण्णसतं च बासट्टसतं जातं । पुलागादीणप्पबहुत्तं कंठं । तुल्लाण य पुहुत्तं विसेसो भाणितव्वो । २५।६।।।छ।।

पंच संयमस्थानानि तेषु ये स्थिता ते तदनुष्ठानात् ताच्छेद्यं लभंते । सामायिकं संयत इत्यादि । पण्णवणा कंठा । सवेदा वेदयंतेगोवसमसेदीतो ठवेतूणं सवेदठाणोवसमखवगत्तेण जाव लोभसुहुमत्तं ण पावति तावा चेव कोततो सुहुमलोभेसु सुहुमसंजतो अहक्खातो तदुवरि दुविहो वि अंतोमुहु० च्छेदोवट्टावणियपरिहारिता आदि चरिमोसप्पिणि-उस्सप्पिणि तित्थकरट्टाणेसु णण्णत्थं अहोद्धितकप्पाचरित्तपदे जहा पुलागा एतेसु मग्गिता तहा एते पुलागादिसु मग्गिज्जंति । एत्थ य तेसिं ठाणाणि खवगोवसमसेदीतो य अवलोगेत्ता लक्खण भाणितव्वं कंठं । छेदपरिहारिया अण्णत्था संभवतो तित्थे लिंगं पि तहेवेसि संजमठाणं ति । संजमठाणाणि असंखेज्जाणि । एगम्मि एगम्मि अणंतपज्जवा । तहेव सव्वागासपदेसग ति । दो सेणीतोगाहा य सामाइयच्छेदोवट्टावणिताणंतमज्झे य परिहारविसुद्धयस्स पत्तेतासंखठाणिताओ एक्केक्के य चरित्तपज्जवा अणंता, तदुवरि सुहुमट्टाणंततो अहक्खातस्स । एवं संजमसेणी पत्तेयं एक्केक्कस्स उक्कोस-जहण्ण-मज्झमेहिं णेतव्वा । तहा सट्टाण-परट्टाणसण्णिकरिसेण य छ ठाणादिअप्पबहुविकप्पेहिं मग्गेण पाडेज्जा । जवमज्झं खेत्तमालिहितुं जवमज्झं पुणो जतो सव्वपरिणामिणो पायेण मज्झपदेसेसु बहवो उवतोगपदे सुहुमो नियमा णाणोवयुत्तो अंतोमुहुत्तं तहा परिणामातो कसाओ उवसमखवगसेणीतो जहासंभवं भाणितव्वं । सुहुमस्स एगा सुक्का तिविहो वि परिणामो आदि तियस्स सुहुमस्स कालथोवत्तणातो अवट्टाणं णत्थि । अहक्खातिहायमाणता णत्थि । जतो सो सुहुमत्तं तदणंतरं लभति । सामातियं एगसमयं पडिणामं पडुच्च तत्थागतो मतो य उक्कोसेणं अंतोमु० । एवं हायमाणए अवट्टितो एगंउरसत्तसमता एगवत्थुअवत्थाणत्तातो । एवं तिण्णि वि सुहुमो वि अवट्टाणवज्जो अहक्खाओ जो केवलं उप्पाडेस्सति दुविहो वि अंतोमुहुत्तं । तस्स अवट्टाणेगसमए मरति । सुहुमो बंधो मोहणिज्जायू ण बंधति । बंध-वेया कंठा । उदीरणाए जं ण उदीरेति तं पुव्वोदीरियं कट्टु, तत्थ पविसति । उदीरणा गता । उवसंपजहणे ति । चत्तमाणे धम्मंतरं चतति पडिवज्जति वा मृत्पिण्डघटधर्मद्वयवत् । एत्थ य खेत्तमालिहितुं पुव्ववण्णितं तं दट्टव्वं । सामाइयसंजमो इत्तिरियं आदितित्थकरंतित्थंकराणं

छेदोवद्वावणियपरिहारिता तेसिं चैव मञ्जिमाणं सामाइयमावकहितं, सुहुमाधाखाता सामण्णा । एत्थ य परिहारा छेदसुहुमंतरिता सामायियसंजतस्स । छेदोवद्वा-वणितो सामाइयसंजमपडिवत्ती । जहा उसभावच्चिज्जा । अजितसामिस्स परिहारितो गच्छं वा पुणे एति । सेसं कंठं ।

सण्णातो चत्तारि णोसण्णा णाण'सण्णा' सुहुमाधखाता णियमा णाणोवयुत्ते । तप्पहाणोवयोगतो भवग्गहणा दोण्ह जहण्णियाए अट्टपरिहारादीण ज० ए० उ० ति आगरिसा । एक्केक्कस्स एगभवग्गहणितो णाणा भवग्गहणिया य चित्तिज्जंति । परिणामो सामाइयजोगो तथा जोगो तं पडुच्च जहण्णादिलंभो भाणितव्वो । एवं सव्वेसिं जहण्णो छेवीसपुहुत्तं जाव सत्तावीसातो छेदमर्हति । परिओ ति, मुहु० दो वारा वडति चडोत्तराए चत्तारि । अहक्खातो उवसामतो दो वारा एगभवग्गहणे जहण्णे खवगो एक्कं वा णाणभेदाणि दोण्णि ताव आऊ तेसिं भवग्गहणा। एक्कं एक्कभवे अण्णमति एक्कं एक्कभवे । एत्थ य जस्स जदि भवा तेसुं जो उक्कस्सागरिसा भणितो ते मेलेतव्वा भव्वेहिं । काले ति । प० जहण्णेण एगसमयं तं ठाणपत्तमरणपडुच्च सव्वेसिं एगसमतो सा० च्छे० अह० उक्कस्सेण अट्टसातिरेगवासो पव्वज्जारिहो । तेहिं पुव्वकोडी ऊण । छ। परिहारियस्स ते च्चैव सातिरेका अट्टा, तथा दिट्ठिवादो एगूणवीस परितागस्स दिट्ठिवादो वरिसो । एतेण ऊणा ऋसभकाले पुव्वकोडी सुहुमंतो मुहुत्तमेव । अहुणा बहुत्तेण सामाइयसंजमा महाविदेहे वि सव्वट्ठं । एवं अहक्खाया केवलिणो पडुच्च छेदस्स उस्सप्पिणीए ततियं समए आदित्थकरस्स तित्थं अट्टातिज्जाणिवाससयाणि बितिय तित्थगरसामातितावकड्ढिए लहति । उक्कस्सेण ऋसभसामित्थं अजितसामि मिलति । एतेसु छेदावद्वावणितो जहण्णुक्कस्सो लब्भति । बहुत्तेणं पण्णासं सागरोवमा कोडीसतसहस्सा परिहारितो अंतिल्लतोसप्पिणिआदिल्ल उसप्पिणि तित्थगरतित्थेसु । एगो तित्थगरमूलं, वितितो तस्स मूले दो वि वाससतिया एगूणतीसा वासेहिं ऊणगाणि दो वाससताणि कज्जंति सतं वा तत्तलं । एगं जहण्णं, उक्कोसेण उसभकाले दोच्चेव पुरिसजुगाणि, एतेहिं चैव वरिसेहिं पुव्वकोडितो ऊणातो परिहारियस्स च्छेदोवद्वावणियाणं पुहत्तेणं । दुस्समदुस्समातो एगा दुस्समा उस्सप्पिणी एतो चैवट्ठिं उक्कस सहस्साउसु सु ४ सु ३ सु २ उस्सप्पिणि ओस्सप्पिणीसु अट्टारस परिहा ०जहण्णेणं दु. दु. दु. दु. दु. सव्वे वि चुलसीती ।

एत्थत तहेव तित्थगरपायमूले दो पुरिसजुगा उक्कोसेण तहेव उसभस्स, उसभस्स य छम्मासा अंतरालं खेत्तफुसणातो भावो य कंठो । परिमाणे अप्पबहुत्तं पुहत्ततुल्लतए विसेसो जहा पुव्ववणितो जहा ऊणाहितत्तेण तहेव दट्ठव्वो । अंतिल्लप्प-बहुं । कंठं । सामाइया संजताणं । छ।

पडिसेवणं दोसालोयणा य आलोयणारिहे चेष । ततो सामातारीया तत्थित्ते तथे चेष । पडिसेवणा कंठं । दसविहा कंठा । आलोयणं आलोएंतस्स दोसा दस । आयरियं आणं पइत्ता आउट्टिता तवच्चरणायिणा आलोए त्ति । अणुमाणेता पढममेवाहं सरीरादिणा असहू जं दिट्ठं पडिसेवमाणो तमालोएति, बादरं थूलं आलोएति, सुहुमं छण्हं आछण्णं जहण्णपरिवुज्जिज्जति । आउलं महासदं बहुजणं बहूणमायरियाणं, अहवा बहुजणमज्झे सव्वं तं सुगीतत्थस्स । तस्से वी जे अवराहा तेण अवलोगेत्ता आलोयणाए जोग्गो । अट्टविहो आयारो, णाण-दंसण-चरित्त-तव-वीरियायारो अवधारयं सक्कति । अवधारेतुं आलोएति एत्तस्स पदाणि । ववहारो पंचविहो । आणादि आणादीतोऽऽवीलतो जहा गंडप्पिलोगादीणि णिप्पिणणाए णिदेसो करेति । तेहिं उवतेहिं तहा तं सोहेति । पमुच्चतो जो तं पायच्छित्तं दाऊण करेति अवाददंसी । अज्जो, अणालोइयस्स बहू अवाताणिज्जवतो उवरिमे बद्धाउमप्पणा करेति । मरणंतणिज्जवतो वा अप्परिस्सादी जं रहसि आलोइया ते अण्णेसिं ण कहति । दस विसामो कंठा । णवरं पडिपुच्छा ।छा पुच्छिए बितियवारा पुव्वगहितेण च्छंदण णिमंतणा अगहिए पाणादीहिं उवसंपया सुत्तथादीहिं १०, पायच्छित्तं १० कंठं । तवो दुविहो-बाहिरो अब्भित्तरो । बाहिरतो छव्विहो । एतेसिं च भेदप्पभेदा कंठा । एगावियत्तोवकरणसातिऊण ता जं तं वत्थादि धारेति तम्मि वि ममत्तं णत्थि । जति कोति मग्गति तस्स देति । झंझा पुणत्थय बहुपलावित्तं उक्खित्तचरते अण्णस्स जति भिक्खा उक्खित्ता सामंता घेतव्वा । अण्णखेत्तणिक्खित्ता वा एवं उक्खित्त-णिक्खित्तुं खित्ता वि । असंसट्ट-अलेवाडस्सा तज्जातसंसट्टता जहामहितमीसेण महितमीसतादिदिट्ठं एवं पुट्ठो जति पुच्छिस्सा भिक्खुलाविया जति मे भिक्खायरो दाहिंति । अण्णतिलातं च दासीणं च संखा दत्तिता एत्तितातो दत्तितातो गहेतव्वा । दत्तितातो गहेतव्वातो उवरिमातो सत्तपिंडेसणातो सुद्धातो परिमितपिंडता एवंतिया पिंडा घराणि वा गंतव्वाणि १० । अंतं दोसीणा दितं तं जतो परमत्थमाणं विणस्सति लूहं ।छा सूक्ष्मातं चेष सो गंतुं छ द्वाणादीया । ठाणकुहुतालगंडसातं वंककसादी कायकिलेसो गतो । प्रतिसल्लीनता आभिमुख्येन ता भेद-प्रतिभेदेहिं कंठा । अब्भित्तरतवो भेदप्पभेदेहिं कंठो । अर्हत्तपण्णुत्तधम्मदतो पण्णरसअणंधासणा भत्तिबहुमाणवण्णसंजणेहिंति गुणा ।४५। सेसं भेदप्पभेदेहिं कंठं । जाव समत्तो उद्देसतो ।२५।७।छा

उववज्जिउकामस्स जीवस्सोदाहरणं, जहा एवतो स्वयंकृत्याध्यवसायस्तथा सावपि स्वकृत कर्माध्यवसातो उपपद्यते । नरस्थानादिषु तस्स य गतिकालो कंठो । जं वाउयं वेदेति तं एयस्स भवस्स विग्गहगतीए आत्मरिद्धिकृतकर्मप्रभावादेव गच्छंति न परकर्मतः कृतानाशाकृतदोषभयात् । चतुवीसा दंडएण वेमाणियंता एतेहिं पभेदेहिं भाणितव्वा ।२५।८।छा

एवं भवसिद्धियजीवो णेरयादिसु पुव्वपदेहिं विसेसितो णेयव्वो वेमाणियंतो २५।९ छ । ॥

अभवसिद्धिण वि ।२५।१०॥छ।

सम्मदिट्टिणा वि ।२५।११॥

मिच्छदिट्टिणा वि ।२५।१२॥ पणुवीसतिमं सतं सम्मत्तं ।छ।

जीवेणं भंते ! पावद्धी अतीतकाले बंधति वट्टमाणे बंधिस्सति ? एस काले उहितकाले उहितजीवे णव चत्तारि वि भंगा संति । एरिसा जे ते कालिया ते वि बंध ति जो तो अभव्वादि सो जो खवगो भविस्सति तत्थ बितितो भंगो । उवसामतो ततितो । केवलिभवत्थो पाएण भवति । एक्को अट्टहिं कम्मेहिं अट्ट णेतव्वा । णवदंडगसंगहितो एक्केक्को होति उट्टेसो ।

जीवा य लेस्स पक्खिक, दिट्ठी णाणे तहेव अण्णाणे ।

सण्णा वेय कसाए, उवतोगे चेव जोगे य ॥१॥

सलेस्सो पावकम्मणा चतुसु बंधादिसु मग्गिज्जति । तत्थ जाव भवत्थकेवली ताव लेस्सातो संभवन्ति । तेण चत्तारि वि भंगा । कण्हलेस्सा भेदे आदिल्ला दो । जतो उवसमखवगोसु सा णत्थि तहा जाव पम्हतो चादिल्ल दुगं । सुक्का चतुसु वि संभवति । सेलेसिसिद्धा अलेस्सा । तेसु अंतिमो कण्हपक्खितो उवट्टस्स पोग्गलपरियट्टस्स जो परतो सिज्झिस्सति तत्थ पढम बितिता अत्थसिद्धी । सुक्कपक्खितो वट्टमाणसमतारद्धो पोग्गलपरियट्टअब्भितरसिद्धीतो । तत्थ भवत्थकेवलि अंतपरिग्गहो कतो तेण चतुभंगो । एवं सम्मदिट्ठी पदे वि । मिच्छत्त-सम्मामिच्छा जातो उवसम-खवगावत्थातो ण पावेंति तेणारिल्ल दुगं । णाणेसु चतुसु वि ठाणाणि चत्तारि, जतो लब्भन्ति तेण भंगो केवलणाणं णियमा अंतिम भंगे । अण्णाणि उवसम-खवगावत्थातो ण पावन्ति । अतो आदिदुगं । आहारादिसु चउसु वट्टमाणो उवसम खवगठाणारुहो जेण तत्थ णोसण्णा णाणसण्णाणि य, जति वि वेदणिज्जातो आहारसण्णा, तहा वि तत्थ लोभक्खतातो उवसम्मातो वा गेही णत्थि । अतो दुगमादिल्ल णोसण्णाए णाणस्सण्णाए । जतो सावग साहुणो वि उवउत्ता चउभंगो । सवेदया इत्थि-पुरिस-नपुंसयवेदता जातो । उवसामग-खवगत्ताईण पडिवज्जन्ति तेणादि दुगं । अवेदतो अप्पणिज्जयवेदं खवेत्ता उवसमेत्ता वा संजलणकोधादिसु वट्टमाणो लब्भति । तत्थ जो कालो सो तिहा कज्जति । मोहणिज्जं पावबंधी य लब्भति । तदंतराले तेण अवेदए चतुभंगो । सकसातो लोभेहिं जतो दुविहो सेणिपडिवण्णतो खवगो उवसामगो य । सो य

सुहुमसंपरागावत्थाए लोभाणु वेदेति, तेण सकसायी लोभकसायी य । तत्थ जो उवसामतो सो ततिय भंगे । खवगो निस्सेसं खवेतुकामो सो चतुत्थभंगे, तेण चत्तारि भंगा । कोहातितिगे आदि दुगमेव उवसमादि असंभवातो अकसादिसव्वोवसंतखवितकसातो वा तेणंतिल्लं दुगं । सजोगिणो जाव सेलेसिं ण पडिवज्जति तेण चतुभंगो । अजोगी सेलेसिसिद्धावत्था तेणंतिल्लो सव्वसिद्धाणं सिद्धंताणं, सागाराणागारा संभवन्ति चउभंगो । “एसो पावेण जीवो उहिउ जीवा य” गाहा-॥०॥छ।

उही जीवलेस्सा पदं । सलेस्स कण्हादि छ । अलेसेहिं (... वक्खित्तं ...) सुक्केहिं दुविहं । दिट्ठी, सम्मदीट्ठी मिच्छदिट्ठी । सम्ममिच्छदिट्ठीएहिं तिविहं । णाणपदं पंचहा-मतिआदि । अण्णाणं तिविहं-मतिअण्णाणादि । सवेदतावेदयसहितं वेदपदं पंचहा । सण्णापदं णोसण्णा सहितं पंचहा । सकसाया सकसायसहितं कसायपदं छव्विहं । उवयोगपदं, सागाराणागारभेदेण दुविहं । सजोगाऽजोग सेस ततिय सहितं जोगपदं पंचहा । एत्थ चतुसु ठाणेसु पंकादिसु जीवो मग्गितो । अहुणा णेरइतो एतेसु चैव मग्गिज्जति । तत्थ जीवट्ठाणे पढमं सुद्धं णेरतितो ततो चैव लेस्सादिपदविसेसितो भविस्सति । जहासंभवं एतेसिं पदाणं च अत्थजोतणा करेतव्वा । कंठा य चैवं । चउव्वीसा दंडपयादियमादिं कातूणं लेस्सादिसूवजोगं तेसु सहितं खंधादिचतुट्ठाणमग्गणा कुज्जा । पढमं पावेणं सव्वं णेतव्वं । ततो णा(णा)वरणिज्जादिअट्टमेण तेत्थ पावेण चैव णेरतितो मग्गिज्जति । ‘णेरतिए भंत्ते !’ त्ति । एत्थ जतो उवसमखवगट्ठाणपरिणामो णत्थि तेण तदुय णिसेहो पढमो भंगो । जो ण सिज्झिस्सति बितिए, जो उवट्ठित्ता ततो सिज्झिहिति । एवं सव्वट्ठाणेहिं लेस्सा चारयस्स य विसेसिएहिं दो भंगा । णवरं लेस्सादि पदाणं णिधत संभवि विसेसा जाणितव्वा । एवं मणुस्स वज्जा जाव वेमाणिता । एतेसु ठाणेसु अप्पणिज्जतो संभवि विसेसा नूणं बंधादिचतुष्कादिदुगे भाणितव्वा । मणुस्सपदं जहेव जीवपदं । उहियं चतुट्ठाण विभाससंबंधे लेस्सादिविसेसगतमभिहितं तहेव णेतव्वं । छ । अधुणा एताणि चैव णाणावरणिज्जे य विपज्जसयि (...) एत्थ जीवादिपदेससव्वं सरिसतं पावेण भाणितूण णवरं सकसादिसु कतो सुहुमाणु वेदविसेसेण । इहं पुण जो छव्विहं बंधी सो णियमा णाणावरणं बंधति । उवसम-खवग-केवलिणो एते एगविह वेदणिज्ज बंधगा आभिभंगदुगगततो । सेसं तहेव जहा पावोहिए एवं णेरइयादिभेदविसेसाधिया वाणमंतर-णेरइयादिभेदो जहा मणुस्सपदं उहितजीवपदतुल्लं । एवं दरिसणावरणमवि । जीवेणं भंते ! वेयणिज्जपुच्छा । तत्थादीए जीवपदे आदिभंगो जो ण सिज्झिस्सति । बितितो अणंतरभवसिद्धितो । चतुत्थो सेलेसिपडिवण्णतो । ततितो णत्थि । जतो वेदणिज्जं ण परितूणं पुणो बंधिस्सति । सव्व

कम्मकखतंतातो ण य खीणवेदणिज्जस्स पुणो गहणं सिद्धपडिवादभवातो । एवं बारससु संठाणेसु ततिय भंगविहूणा णेतव्वा । परेसंठाणा कंठा । अलेस्सातो तिसु सेलेसु सिद्धा ते अंतिमभंगगा । वेदणिज्जं सेस ठाणेसु पढम वितिता । एवं मणुस्सपदं । णेरइतादीणं वेमाणितंताणं पढम बितिय भंगा । वेयणिज्जं गतं । मोहणिज्जं जहा पावं तहेवा विसेसितं । जंतो पावं तं चेव तस्स वा कसायविसेसा पावं । आउय पुच्छा-तं तिभाग छम्मासादि लक्खणो बंधति, सिज्झति । ततेण जीवपदे चतुभंगो । एवं सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो चतुपरिणामसंभवातो चतुभंगो । अलेस्से चरिमो भंगो । कण्हपक्खितो उवट्टोवरि सिज्झिस्सति । विरहो य संभवति । तेणादि ततित्ता सुक्कपक्खिपक्खितो चतुभंगो । सम्मामिच्छत्त-अवेदा कसातीसु चतुमाणसमया बंधतो आदिमा णत्थि केवलाजोगिसु तो लेस्सित्तातो चरिमो । सेसाणि मणभिहिताणि तेसु चतुभंगं । अत्थावलोगेण लभेज्जा । णवरं मणपज्जवं णोसण्णा णाणसण्णा एतेसु जो आउयं बंधति ठितितो सो देवलोगं गच्छति । ततो पुणो आउयं मणुस्सेसु बंधितव्वं । तेण बितितो णत्थि । णेरइय दु चतुभंगो । णवरं कण्हपक्खितकण्हलेस्सेसु जम्हा उवट्टित्ता तेण सिज्झति । तेण पढम ततित्ता । सम्मामिच्छत्ते ततिय चतुत्था वतमाणबंधा संभवातो उव्वट्टणाणंतरसिज्झामाणातोयं असुरकुमारो जातो । कण्हलेस्सो वि उव्वट्टित्ता सिज्झति तेण चत्तारि । सेसं णेरतिते सरिसं । एवं जाव थणित्ताणं । पुढविकाइयाणं सव्वत्थ चतुभंगो । णवरं तेउलेस्सातो देवो उववज्जमाणो लब्भति । तस्समयं च आउस्स अबंधी तेण तत्थ ततितो कण्हपक्खिए तं पढम ततिया सेसपदेसु चत्तारि । एवं आउ-वणस्सतिसु वि णिरवसेस पुढविसरिसं । तेउ वाउ जओ अण्णं मणुस्सपदं ण लब्भति । तं च चरिमट्टाणं तेणादिल्ल ततित्ता बितिय चउत्था णत्थि । बेइंदिय चतुरिंदियंता मणुयत्तं लद्धूणं वि केवलं ण लब्भति । अतो पुणो आउतबंधी भविस्सति । तेण पढम ततिया सव्वपदेसु । णवरं आभिणिबोहिय-सुतेसु ततितो जतो सासातणो उववज्जमाणेण तस्समयं बंधति । आउयं पंचिंदियतिरिक्खाणं कण्हपक्खित्ते अंता बंधसंभवातो पढम ततित्ता । सम्मामिच्छत्ते तस्स वि य बंधा संभवातो मज्झ पडिसिद्धा ततिय चउत्था । सम्मत्ते णाणे आभिणिबोहिय-सुत-ओहिसु जो उवउत्तो मरति सो ण वद्धायूसो णियमा देवलोगं गंतुं मणुस्साउबंधी तेण वितितो णत्थि । अंतिल्लो जे मणुस्साउगं मणुस्सेसु बंधितुं तत्थ य चरिमो सो लब्भति । एतेसु ठाणेसु मणुस्सा जहा जीवपदायुगं तहेव, णवरं आभिणिबोहितादिसु कंठेसु । जो बद्धत्ते पढमं ण भवति सम्मत्तलंभातो सो देवलोगगामि ति । ततो मणुस्सायू तेण वितितो णत्थि । देवा जहा असुरा । एवं आउयं सम्मत्तं । नामं गोत्तं अंतरायं जहा णाणावरणिज्जं । पंचवीसपदेसु एक्केके णेरइयादिसु 'जीवा य लेस्स पक्खित्त' गाहा । कंठा

जीवाय लेस पक्खित दिट्ठी अत्राण नाण सत्राओ

वेय कसाए उवयोग-योग एक्कारस वि ठाणा (भ०पृ०-१०७२)

एय विसेसिएसु णाणावरणं भणितं तहा एताण वि पढमउद्देसतो बंधिसुत्ते गमिएसु ।२६।१।छ।

अणंतरोववण्णतो जो णेरइय पढमसमयवत्ती विग्गहा विग्गहाए गतीए गंतुं सो पावेसु छिज्जंति । एत्थ पढम वीतिया सेसत्था संभवतो । एवं लेस्सादिसु कंठं । एत्थ सम्मामि० मण-वइजोगाण संभवन्ति । अजाता चेव । एवं जस्स जम्मि पदे पडिसिज्जंति ते तस्समवत्तिणो ण संभवति । एवं पावेणं चउवीसा पत्तेय बारसलेस्साट्ठाणविसेसिया तहा सत्तसु णेतव्वं । अ०पु० ए सव्वत्थ तरिओ मज्झ पडिसिद्धो । जतो तम्मि समए आयुस्स अबंधी णेरइयादिवेमाणियंतेसु मणुयाणं सव्वलेस्सादिविसेसियादिविसेसियाणं । जतो चरमसरीरो वि संभवति । अतो अंतदुग भंगो । कण्हपक्खितो चरिमो ण भवति । तस्स ततितो चेव । जेसु तपडिसिद्धा अणंतरोववण्णगाते इहं पि ता णत्थि । बित्तितो ।२६।२।छ।

पढम समतोववत्ति वज्जा समता वितियादिणो परंपरा लब्भंति । एस य जहा ओहिउद्देसतो तहेव पावादिणवट्ठाणपत्तेयजीवा य लेस्सपक्खियादिबारसय विसेसितो णिरवसेसो भाणितव्वो ।२६।३।छ।

ओगाहो खेत्तेण वि सेणि । जत्थ सरीरखेत्ते पढम पढमयावगाहं एसो य अणंतरोववण्णो, जहा तहा णिस्सेसो, सो मण-वइ-सम्ममिच्छादतो णेरइयपदेसु मणुस्सपदेसु य ण संभवन्ति । ते सव्वे भाणितव्वा । भंगा य णेतव्वा ।२६।४।

परंपरोगाहो बितियादिसमयपवट्टमाणखेत्तकत्ती एसो य ओहिउद्देसयसरिसो ।।२६।५।छ।

अणंताहारतो उववत्तिठाणे सरीरजोगपढमसमयपोगलगहणवत्ती सो जहा अणंतरोववण्णतो तहेव भाणितव्वो । संभवासंभवलेस्सादि विसेसितो २६।६।छ।

परंपराहारतो वितियादिसामातिकाहारतो ओहितो जहा ।२६।७।छ।

अणंतरपज्जंततो पंच पज्जत्ति-पज्जत्तसमयसंपुण्णो सो अणंतरोववण्णगो जहा, जइ विय पज्जत्तीतो अब्भित्तरातो चत्तारि संति तहा वि तातो लेस्सादि वि पदेसु णत्थि । मणपज्जत्ती य णवरं णिप्फण्णा घट इव उत्तरकालंतीए पयोयणं कज्जत्तीति । तेण जहाणंतरोववण्णतो ।।२६।८।छ।

परंपरपज्जत्ततो तातो चेव पज्जत्तीतो । बितियादिसमयसंपुण्णवत्तिणीओ उस्सेसं कंठं ।२६।९।छ।

चरिमो भवचरिमो य । एत्थ भवचरिमग्गहणं । जो तं पुणो भवं ण पाविहिति सो घेप्पति । एस प० उहियसरीसो । पावादिसु णवसु पत्तेय चतुव्वीसविसेसेण बारस य संबंधी णेतव्वो । २६।१०।छ।

अचरिमो जो पुणरवि तं भवं गेहेस्सति । एत्थ पढम बितिया जातो, पुणो आगमिस्सति बितीय भंगो य बितीयभवातो परतो दट्टव्वो । एवं सव्वठाणेसु जावाणागारोवजुत्ता मणुस्सेसु ओहिय पढम सरिसो । णवरं जत्थ तस्स चउभंग तत्थेवस्स तिण्णि उवसामावत्थाए घणं बंधति । वट्टमाणे तस्स य इमाणि वीस चतुभंगठाणाणि । जिय सुक्क-सुक्कपक्खियसम्मद्दिट्ठी चतुहिं णाणेहिं णोसण्ण-अवेदकसाय-जोग उवयोगे चतुभंगो । अकसातिम्मि जतो तव्वेलं ण मोहं बंधति तेण ततितो, अचरिमो कट्टु, अलेस्सादयो णत्थि । सेसेसु दुवे भंगा । आदिमा णाणावरणिज्जे सकसाति लोभकसातिसु जतो बंधगो वट्टमाण सामातिगो तेणं दुगे चेव भंगा, एस य चतुभंगाए मज्झे आसीतुं अवणेतुं सेसाणि(अ)ट्टारसपदाणि चतु भंगयाणि । एवं दरिसणावरणं पि वेदणिज्जे सव्वजीवसरीरं संभवति ताव वेयणिज्जमत्थि त्ति तेणा इमा । सेसं कंठमचरिमताए णेतव्वं । मोहं पावसरिसं आउ पढम ततिया सो णियमा पुणो तट्टाणे आगमिस्स सम्ममिच्छत्तवेलाए ततितो णियमा ण बंधति आउ तं पुढवि, आउ, वरुण चेव तेउल्लेस्सोववत्ति तद बंधाउत्तं पडुच्च ततितो, विगलिंदियाणं सासातण तव्वेलाबंधत्तं पडुच्च ततितो मणुस्सेसु विसेसो उवसामगं पडुच्चाकसायि ततित भंगो । बंधिसत्तं सम्मत्तं ।छ।

जीवाणं भंते ! पावं कम्मं किं करेसु आदि जीवकर्तृका कर्मक्रियाभूतादिविशेषिका वक्तव्या । जीवा किं अतीतकाले कृतवन्तः कुर्वन्ति करिष्यन्ति ? पावादिसु णवसु दंडएसु जीवणेरतियादतो जीवलेस्सादिविसेसिया जहा बंधिसते एक्कारसउद्देसया तहेवेत्थं पि भाणितव्वा णिस्सेसा । ११।छ

जीवाणं भंते ! पावकम्मं कहिं समणिज्जिणिसु आदि समज्जिणिसुं आर्जनं कम्मस्स गहणं । उपादाणं अप्पिणी करणं । समायरणं समाचरणं, पज्जायसदो । अहवा समज्जियस्स जो पावो समज्जितं च तं वेदितं च कहिं ? पु० पज्जायपक्खे समणोत्थया उपादणमेत्तमेव । सव्वे वि ताव होज्ज तिरिक्खजोणिएसु, एत्थ तिरिक्खजोणि सव्वजीवाणं मातियाययणं बहुत्तातो सव्वे य सेसणेरतियादतो तेसु उववण्णपुव्वा अणंतयसंबंधरासि सहगता होतूणं । अहवा जतो वट्टमाणसमया दिट्टरासिणा तिरिक्खजोणिए णिल्लेवणं णत्थि । सेसेसु संभवति । तेण सव्वे वि ताव होज्जा तिरिक्खजोणीए पढम भंगो । अहवा सव्वसदो तिरिक्खजोणीगतवट्टमाण-भूत-भविस्स जीवविरुतो णेतेण सव्वे वि तावत्तत्ति । जे तिरिक्खजोणिगता ते सव्वेव संबज्जंति । सेसेसु सेस भंगा । सापेक्खमेवेत्तं सेसभंगेहिं सुत्तंततो बितितो अहवा तिरिय-णेरतिएसु

एवं दुग संजोगे तिण्णि तिग संजोगे तिण्णि । सव्वेसुं एगो । सव्वे अट्ट भंगा । एवं तिरिक्खजोणिं अमुयंतेहिं अट्टवतिरिसे । तव्वतिरिक्तभंगा ण संभवन्ति । तेसिं थोगावयवत्ततातो एते अट्टभंगा पावेण चतुवीसा दंडएण गेस्सादि बारसंग विसेसिएण भाणितव्वा । जहा बंधिस्सतपढम उहियुद्देसए तहेव, नवरमेत्थं अट्ट ठाणाणि कज्जंति । तथा णाणावरणादिसु अट्टसु पढममुद्देसगो ।१।छ

बित्तियो अणंतरोववण्णगेसु । ततितो परंपरेसु । अणंतराहारए पंचमो । परंपराहारए छट्ठो । अणंतरोगाढए सत्तमो । परंपरोगाढए अट्टमो । अणंतरपज्जत्तए णवमो । परंपरपज्जत्तए चरिमे दसमो । अचरिमेयं । एवं एगारस उद्देसगा । पत्तेयं णवग दंडग संगसंगहिता एकैक्कदंडतो पंचवीसपदविसेसितो पदं बारसट्टाणं लेस्सादिविसेसितं अट्टसु तिरिक्खादिठाणेसु णियमं संभवि जहा जुज्जमाण कंठाभिहितं भाणितव्वं । कम्मसज्जिणण सतं सम्मत्तं ।छ।

जीवाणं भंते ! पावंकम्मं किं समयं पट्टवियंसु ? पुच्छ । पट्टवणं कम्मस्स वेदणा रूपेण प्रथमं स्थापनं । वेदयितुमारद्धमिति यावत् । समयं बहवंपिंसुं किं युगपदेकस्मिन् समये वेदनां कर्मण आरंभंते ? एकस्मिन्नेव निष्ठां नयन्ति । अथवा बित्तियो भंगो समयं पट्टवेति । विसमंतस्स अंतं करेति । अथवा विषममारंभंते समयं णिट्टवयंति । एकस्मि काले अथवा विषममेव प्रारंभन्ते विषममेव निष्ठापयन्ति ।छ।

तत्थ चउसु वि ठाणेसु संति संभवन्ति जीवा उहिता के पुनस्त इति । तत्र कारणेयं ग्रन्थोपक्रमः यः एवं विधाये समायुष्कस्समो समोपपन्नगाश्च ते पढम भंगे । एवं यथासंख्यं ग्रन्थो योज्यः । चतुर्वा अत्र अर्थावलोकनेन पर्यवलोकनेन च व्याख्या कर्तव्या । तथायं ज्ञायते भंगार्थः । एवं उहिया जीवा चउसु ठाणेसु ठाविता । अधुना एवं सलेस्सादिया उवयोगता । एतेसु चेव चतुसु भाणितव्वा । उहियागया णेरयियादीणं वेमाणियंताणं लेस्सादिविसेसियाणं चतुसु ठाणेसु समयादिसु देवे णं जहासंभवं मग्गणा तथा अट्टसु णाणावरणादिसु णेतव्वं । पढम उद्देसगो ।१।छ॥

अंतरोववण्णगे वि णवदंडगसंगहितो । णवरं एत्थ दो आदिल्ला भंगा भणन्ति । सेसा दो पडिसेहेतव्वा । एत्थ कारणं णातव्वं । एवं चतु अणंतरोववण्णगेसु दो भंगा से भवे सेसो य कंटो । सत्तसु उहियादिसु सेसेसु जहा ओहितो तहेव चतुट्टाणसंभवी भाणितव्वो । एवं एक्कारसबंधिसततुल्ला । कम्मपट्टवणं सतं सम्मत्तं ।

कति णं समोसरणा ? पुच्छ । समोसरणं । जीवाणं णाणापरिणामतुल्लताए एगत्थमेलगो संगता समोसरणं । एस चेव परिणामविसेसो वा ताए भणन्ति पण्णवगेण वा । अहवा जे एते परिणामवादिणो तेण

ते वादिणो । तत्थ सव्वसंसारिणं णियमा चत्तारि किरियादीणि कंठाणि । तत्थ किरियावादो अस्तित्ववादो भावानां अकिरियावादो नास्तित्वं भावानां अण्णाणवादो भावानामेवं ज्ञानं प्रतिसिद्धा तेन ज्ञायते । कथमप्येष भावो । प्रमाणानामसम्पूर्णविषयवर्तित्वाद्विकलता तद्वैकल्पे चैव वस्तुनो परिज्ञानमज्ञानं न सर्वथा ज्ञाननिषेधो अज्ञाता एव पदार्थाः । वैनयिका विनयप्रधानाः स्वर्गापवर्गाद्यर्था मातृपित्रादिविनयाधीना इत्येवं वादिनस्ते इति । अत्र च स्वसिद्धान्तगं बहुवाच्यं । अनया तु दिसा नयोत्थानप्रकल्पेन सभेदो वादिगणो विक० निरूप्यः । जीवाणं पुच्छा । तत्र यथावस्थितद्रव्यपदार्थादिधर्मकदंबकनिरूपणा क्रियावादिनो सम्यग्दृष्टय एव । तद्विपरितो मिथ्यादृष्टयो क्रियावादिनः । शेषं द्वयं पूर्वोक्तं । गाहा य -

अत्थि त्ति किरियावादी, वदंति णत्थि त्ति अकिरियावादी ।

अण्णाणी अण्णाणं वेणइया वेणइयवादं ॥१॥

एवं जीवप्रश्ने चत्वारोऽपि विकल्पाः संभवन्ति । एवं सल्लेस्सादिया एतेसु वादेसु मग्गिज्जन्ति । संभवतो कंठं । अलेसो सेलेसि सिद्धो सो नियमा यथा द्रव्यादिपदार्थागमकत्वात् क्रियावादी । एत्थ य जाणि सम्मद्दिट्ठिणाणि नियमेण ताणि किरियावादे खिप्पन्ति । मिच्छद्दिट्ठी अण्णाणादिसु भाणित्तिओ । उभयत्थ सामण्णत्तातो । सण्णामिच्छादिम्मि सो ण य णाणे ण य विपरीते अवधारिज्जति तेण तेसु णत्थि ततेसु ओहियागता । णेरइया चतुसु ठाणेसु कंठा । अहुणा विसेसिया कातुं चतुसु ठाणेसु संभवतो कंठं । जावोवजोग त्ति । एवं असुरा वि पुव्वि चतुसु, ततो लेस्सादिउवयोगंतविसेसिया चतुसु चैव कंठा । एवं जाव थणिया । पुढविकाइया जाव सव्वचतुरिंदियविगलिनंदिया तेसिं विपरितत्तं वा अण्णाणं णोणाणविणया पडियदंतं च दंसणं हाणिजोगातो ण मग्गितं । एवं सव्वलेस्सादिसु संभवतो भाणितव्वं । पंचिंदियतिरिक्खा जहा णेरतिया मणुयपदं जहा जीवपदं । सेस देवा जहा णेरइया ।छ।

अहुणा किरियावादिनो आयुयं कहिं पि करेति जे एतेसु वट्ठंति ते किमायुं णिव्वत्ते त्ति ?। तत्थोहिएसु किरियावादिनो देवा मणुसाउं, मणुता देवायुं । सेस णिसेहो । अकिरिया चत्तारि वि । अण्णाण वेणयीका वि चत्तारि । पुणो लेस्सादिविसेसिया भाणितव्वा । कंठं । णवरं जे किरियावादिनो कणहलेस्सा मणुस्सोववत्ती ए लब्भन्ति ते असुरादयो देवा तथा सम्मद्दिट्ठीमणुस्सा तेरिच्छा कणहलेस्सा परभवियाउयं बंधकालेण पडिवज्जन्ति । सम्मदंसणपरिमाणगरुयत्तातो जातो देवोवत्तियातो तासु ठिच्चा करेति । एवं ओहिया चतुट्ठाणे जुत्ता लेस्सादि विसेसिया आउएण मग्गिता ।छ॥

अहुणा णेरतिता चतुट्टाणा जोगिणो सामण्णा मग्गित्तूण ततो वि से लेस्सादिविसेसिया मग्गिज्जंति । कंठं । एवं चतुवीसा दंडएण णेतव्वं । ओहिता ततो लेस्सादिविसेसिता कज्जंति । कंठा य । 'किरितादिवादभवसिद्धिय पुच्छा' । तत्थ भवसिद्धिता चतुसु वि ठाणेसु परिणमंति । अभवसिद्धिया अकिरियादिसु चतुसु णियमो । एवं एते पत्ते लेसादिपत्तिहिं विसेसिया । तहा णेरइयादि भवसिद्धियाऽभवसिद्धियालावगेण कंठा भाणितव्वा । पढमो उद्देसतो सम्मत्तो ।छ।

चूर्णतरा लिख्यते । खुड्डा जुम्मा णेरइता कतो उववज्जंति ? यदुक्तं । चत्तारि वा अट्ट वा बारस वा । एवमाद्या नारकाः कुत उत्पद्यन्ते ? यो हि जुम्मो य महंतो य सो महंतजुम्मो । जो पुण खुड्डतो चेव जुम्मो सो खुड्डजुम्मो । जहा चत्तारि अट्ट बारस एवमादि । एवं ते जोगादयो वि भाणितव्वा । उववात सतं छ ॥३१-१।

एवं उव्वट्टणा सतं ।छ॥३२ः।

एकेन्द्रियशतकग्रन्थत एवसु ज्ञातं ॥३३॥ सेढिसतं लोकनालिं प्रस्तीर्य भावनीयं । गाथाश्चानुसर्त्तव्याः ।

सुत्ते चतुसमतातो णत्थि गती तु परा विणिदिट्ठा ।
(जुज्जतिय पंच समया जीवस्स इमा गती लोए ॥१॥)

(जो तमतमवियदिसाए समोहतो बंभलोगविदिसाए ।
उववज्जती गतीए सो नियमा पंच समताए ॥२॥)

(उज्जुयायतेगबंका । दुहतो बंका गती जं विणिदिट्ठा ।
जुज्जति य तिचतुवंका वि णाम चतुपंचसमताए ॥३॥

उववातो भावातो ण पंच समयाधवा न संतावि ।

सेणिता जह चतु समता महल्लबंधे ण संता वि ॥४॥ सेढी सतं समत्तं ।छ॥

कडजुम्म कडजुम्मेगिंदियाणं कतो उववज्जंति ? यदुक्तमेकेन्द्रियानामसंख्येयकडजुम्मा येपिवाहार चतुष्कतास्तेपि च कडयुग्माः । ते एतावंत एकेन्द्रिया ये संख्येयाश्च ये कडयुग्माः । अपहारश्च कडजुग्माः । ते कुत उत्पद्यन्ते ? यथा षोडशकडजुग्माते जोगा उत्पद्यन्ते । सुहुमसाधार(ण) चतुष्कका कडजुग्माः । अपहियमाणे च तत्र येऽतिरिक्ताः एकेन्द्रियास्त एतावंत एकेन्द्रियाः कुतो यस्य एवंविधा संख्या राशेः सत्प्रमाणा । यथा एकान्न(व)विंशतिः कडयुग्मबादरा उत्पद्यन्ते । ये तेषामपहारः । कथं ? कडयुग्मापहतावशिष्टौ च द्वौ

यस्याः संख्यायाः सः कड्युग्मबादरः । तत् संख्याः प्रमाणाः कुतः यथाष्टदश कड्युग्मकलिर्यस्याः संख्याया-
श्चतुष्केणापहारेण एकाग्रे भवन्ति ? या कड्युग्मकलिः तत् संख्या प्रमाणाः कुतः यथा सप्तदशकैर्योग कड्युग्मा
यस्याः संख्यायाश्चतुष्केणापहारेणापहृते यावन्तोपहारश्चतुष्ककास्तेषां पुनश्चतुष्केणापहारेण त्रिरग्रता भवति । एते
(षां) योगः कड्युग्मः । यथा द्वादश द्वादशानां चतुष्केणापहारेण लब्ध्वा अपहारचतुष्ककास्त्रयः तेषां त्रयाणां
चतुष्ककेनान्येन पुनर्हियमाणे त्रीण्यग्रे भवन्ति । यस्याः संख्याया एवमपहारः । अनेनापहारेणोपलक्षिता कुत
उत्पद्यन्ते ते योगतो योगः । यथा पंचदश पंचदशानां चतुष्केणापहारेण त्रयः शेषा लब्धास्त्रयः । ये ते लब्धास्तेषां
पुनश्चतुष्कापहारः क्रियमाणस्त्रिरग्रः । अपहारश्चतुष्ककास्त्रिरग्राः पूर्वसंख्या च त्रिरग्रतो एवंविधा संख्या तत् प्रमाणा
कुत उत्पद्यन्ते ? तेयोगबादर यथा चतुर्दश चतुर्दशानां चतुष्केणापहारेण द्वावग्रे ये च भागापहृतचतुष्कका । यथा
त्रयः तेषां पुनश्चतुष्केणापहारेण त्रिरग्रता पूर्वस्य च राशेर्द्वावग्रेय एवंविधो राशिस्तत् संख्या प्रमाणा कुत
उत्पद्यन्ते । एवं नेयं । छ।

येषां प्रथमश्च समयः संख्यया च कड्युग्मकड्युग्मास्ते कुत उत्पद्यन्ते ? ते द्वित्र्यादि वा समयाः
येषां उत्पन्नानां संख्यया च कड्युग्मं कड्युग्मास्ते कुतः येषां वर्तते ? चरमसमयः संख्यया च कड्युग्माः
अचरमो वा समयः । यदुक्तं द्वौ त्रयो वा चत्वारो वा येषां शेषः सम्यग् एव कड्युग्म कड्युग्मास्ते कुतः पढम
समयकड्युग्मेगिदियाणं कतो उववज्जति । कड्युग्मसंख्या उपपातेन प्रथममनुभवन्ति । प्रथमश्च समयो
वर्तते ते एकेन्द्रियाः कुत उपद्यन्ते ? न प्रथमः समयो वर्तते । कड्युग्मकड्युग्मसंख्यां प्रथमेवानु-
भवन्ति । तेषां वा चरमसमयकड्युग्मकड्युग्मसंख्याया प्रथममनुभवन्ति एवमचरमः । इदानीं चरमाः
कड्युग्माकड्युग्मा संख्यामनुभवन्ति । चरमश्च समस्त्यं कुतः । छ। एवमचरमः एगेदियमहाजुम्म सतं । छ।
शेषाणि शतानि अनेनैव लक्षणेन गमनीयानि ।

लोगागासपदेसा धम्माधम्मेगजीवदेसा य ।

दव्वद्धिता णिगोता पत्तेया तेसिं जीवाणं ॥१॥

ठिति-बंधज्झवसाणा अणुभागा जोगच्छेदपलिभागा ।

दोणह य समाण समया असंखपक्खेवया दसउ ॥२॥

सिद्धा णिओगजीवा वणस्सई कालपुगला चेव ।

सव्वमलोगागासं छप्पणंतपक्खेवा ॥छ।छ।

इति श्री भगवतीचूर्णिं परिसमाप्तेति ॥छ।छ। इति भद्रम्

सुअ-देवयं तु वंदे जीइ पसाएण सिक्खियं नाणं ।
बिइयं पि बतवदेविं पसन्नवाणिं पणिवयामि ॥छा॥

।छा ग्रन्थाग्रंथ ॥७००७ (६७०४) (३५९०) ॥छा श्रीछाछा

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ ॥छाछा॥
अक्षर-मात्र-पद-स्वरहीनं व्यंजन-संधि-विवर्जितरेफं ।
साधुभिरेव मम क्षमितव्यं कोऽत्र न मुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥छाछाछा॥

शुभं भवतु । छ । छ । छ ।

शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवतु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥

संवत् १४९५ वर्षे श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरिगुरूणां सदुपदेशेन श्रीमालवंशे भांडियागोत्रे
श्री सा. छाडा भार्या साच्चानी मेघू तत्पुत्र श्री सा. समदा श्री सा. काला सुश्रावकाभ्यां श्री सूदा
श्री हेमराज प्रमुख पुत्र-पौत्रादिपरिवारकलिताभ्याम् ।

Our Latest Publications (2000-2001)

Tattvārtha Sūtra - (Translated into English by Dr. K.K.Dixit) (2000)	300.00
Kāvyaṅuśāsanam (With Critical Introduction & Guj. Tranclation) Ed. Dr. T.S.Nandi (2000)	480.00
Tarka-Taraṅgiṇi - Ed. Dr. Vasant G. Parikh (2001)	270.00
Madhu-vidyā : collected papers of Prof. Madhukar Anant Mehendale (2001)	560.00
Dravyālaṅkāra with Auto commentary - Ed. Muni Shri Jambuvijayaji (2001)	290.00
ડો. મો.દ. દેસાઈ સંપાદિત પ્રાચીન મધ્યકાલીન સાહિત્યસંગ્રહ - સંપાદક : પ્રો. જયંત કોઠારી (૨૦૦૧)	650.00
Temple of Mahavira Osiaji - Monograph by R.J.Vasavada (2001)	360.00
Abhidhā - Dr. T.S.Nandi (2002)	60.00
The Temples in Kumbhāriyā - M. A. Dhaky & U. S. Moorti	1200.00

SAMBODHI

The Journal of the L.D.Institute of Indology : (Back Vol. 1-21) Per Vol.	100.00
Current Vol. 22 (1999), Vol.23 (2000), Vol. 24(2001) per vol.	150.00

Our Forthcoming Publications

- Sāstravārtā śamuccaya with Hindi Translation, Notes & Introduction - Dr. K.K.Dixit
- Śivāditya's Saptapadārthī - with a commentary by Jinavardhana - Ed. Dr. J.S.Jetly